हिंदी

लोकभारती

नौवीं कक्षा



शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।



हिंदी
लोकभारती
नौवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

संलग्न 'क्यू आर कोड' तथा इस पुस्तक में अन्य स्थानों पर दिए गए 'क्यू आर कोड' स्मार्ट फोन का प्रयोग कर स्कैन कर सकते हैं। स्कैन करने के उपरांत आपको इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त लिंक/लिंक्स (URL) प्राप्त होंगी।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
डॉ. वर्षा पुनवटकर
सौ. वृंदा कुलकर्णी
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्री सुमंत दळवी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : मयूरा डफळ
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर,सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2017-18/1.00
मुद्रक : M/S. NEAT PRINTS, AHMEDNAGAR

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्‌वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

आप नवनिर्मित नौवीं कक्षा की लोकभारती पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे । रंग-बिरंगी, अति आकर्षक यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि आपको कविता, गीत, गजल सुनना प्रिय रहा है । कहानियों के विश्व में विचरण करना मनोरंजक लगता है । आपकी इन भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए कविता, गीत, दोहे, गजल, नई कविता, वैविध्यपूर्ण कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संवाद आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश इस पुस्तक में किया गया है । ये विधाएँ केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों, क्षमताओं एवं व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने तथा सक्षम बनाने के लिए भी आवश्यक रूप से दी गई हैं । इन रचनाओं के चयन का आधार आयु, रुचि, मनोविज्ञान, सामाजिक स्तर आदि को रखा गया है ।

डिजिटल दुनिया की नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टि तथा अभ्यास को 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय', 'पाठ के आँगन में', 'भाषा बिंदु', विविध कृतियाँ आदि के माध्यम से पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। आपकी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए 'आसपास', 'पाठ से आगे', 'कल्पना पल्लवन', 'मौलिक सृजन' को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है । डिजिटल जगत में आपके साहित्यिक विचरण हेतु प्रत्येक पाठ में 'मै हूँ यहाँ' में अनेक संकेत स्थल (लिंक) भी दिए गए हैं। इनका सतत उपयोग अपेक्षित है ।

मार्गदर्शक के बिना लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती । अतः आवश्यक प्रवीणता तथा उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों के सहयोग तथा मार्गदर्शन आपके कार्य को सुकर एवं सफल बनाने में सहायक सिद्‌ध होगा ।

विश्वास है कि आप सब पाठ्‌यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि एवं आत्मीयता की भावना के साथ उत्साह प्रदर्शित करेंगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २८ अप्रैल २०१७
अक्षय तृतीया

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

दूसरी इकाई

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा हैं कि नौवीं कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों ।

क्षेत्र	क्षमता
श्रवण	१. गद्य-पद्य विधाओं को रसग्रहण करते हुए सुनना/सुनाना । २. प्रसार माध्यम के कार्यक्रमों को एकाग्रता एवं विस्तारपूर्वक सुनाना । ३. वैश्विक समस्या को समझने हेतु संचार माध्यमों से प्राप्त जानकारी सुनकर उनका उपयोग करना । ४. सुने हुए अंशों पर विश्लेषणात्मक प्रतिक्रिया देना । ५. सुनते समय कठिन लगने वाले शब्दों, मुद्दों, अंशों का अंकन करना ।
भाषण-संभाषण	१. परिसर एवं अंतरविद्यालयीन कार्यक्रमों में सहभागी होकर पक्ष-विपक्ष में मत प्रकट करना । २. देश के महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना, विचार व्यक्त करना । ३. दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में शुद्ध उच्चारण के साथ वार्तालाप करना । ४. पठित सामग्री के विचारों पर चर्चा करना तथा पाठ्येतर सामग्री का आशय बताना । ५. विनम्रता एवं दृढ़तापूर्वक किसी विचार के बारे में मत व्यक्त करना, सहमति-असहमति प्रकट करना ।
वाचन	१. गद्य-पद्य विधाओं का आशयसहित भावपूर्ण वाचन करना । २. अनूदित साहित्य का रसास्वादन करते हुए वाचन करना । ३. विविध क्षेत्रों के पुरस्कार प्राप्त व्यक्तियों की जानकारी का वर्गीकरण करते हुए मुखर वाचन करना । ४. लिखित अंश का वाचन करते हुए उसकी अचूकता, पारदर्शिता, अलंकारिक भाषा की प्रशंसा करना । ५. साहित्यिक लेखन, पूर्व ज्ञान तथा स्वअनुभव के बीच मूल्यांकन करते हुए सहसंबंध स्थापित करना ।
लेखन	१. गद्य-पद्य साहित्य के कुछ अंशों/परिच्छेदों में विरामचिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए आकलनसहित सुपाठ्य, शुद्धलेखन करना । २. रूपरेखा एवं शब्द संकेतों के आधार पर लेखन करना । ३. पठित गद्यांशों, पद्यांशों का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करना । ४. नियत प्रकारों पर स्वयंस्फूर्त लेखन, पठित सामग्री पर आधारित प्रश्नों के अचूक उत्तर लिखना । ५. किसी विचार, भाव का सुसंबद्ध प्रभावी लेखन करना, व्याख्या करना, स्पष्ट भाषा में अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं की संक्षिप्त अभिव्यक्ति करना ।
अध्ययन कौशल	१. मुहावरे, कहावतें, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्यों तथा अन्य भाषा के उद्धरणों का प्रयोग करने हेतु संकलन, चर्चा और लेखन । २. अंतरजाल के माध्यम से अध्ययन करने के लिए जानकारी का संकलन । ३. विविध स्रोतों से प्राप्त जानकारी, वर्णन के आधार पर संगणकीय प्रस्तुति के लिए आकृति (पी.पी.टी. के मुद्दे) बनाना और शब्दसंग्रह द्वारा लघुशब्दकोश बनाना । ४. श्रवण और वाचन के समय ली गई टिप्पणियों का स्वयं के संदर्भ के लिए पुनःस्मरण करना । ५. उद्धरण, भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, सुवचन आदि का संकलन एवं उपयोग करना ।

	६. संगणक पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते समय दूसरों के अधिकार (कॉपी राईट) का उल्लंघन न हो इस बात का ध्यान रखना । ७. संगणक की सहायता से प्रस्तुतीकरण और ऑन लाईन आवेदन, बिल अदा करने के लिए उपयोग करना । ८. प्रसार माध्यम/संगणक आदि पर उपलब्ध होने वाली कलाकृतियों का रसास्वादन एवं विश्लेषणात्मक विचार करना । ९. संगणक/ अंतरजाल की सहायता से भाषांतर/लिप्यंतरण करना ।
व्याकरण	१. पुनरावर्तन-कारक, वाक्य परिवर्तन एवं प्रयोग- वर्ण विच्छेद/ वर्ण मेल (सामान्य), काल परिवर्तन २ पुनरावर्तन-पर्यायवाची-विलोम, उपसर्ग-प्रत्यय, संधि के भेद (३) ३. विकारी, अविकारी शब्दों का प्रयोग (खेल के रूप में) ४. **अ.** विरामचिह्न (..., × × × , -०-, .) **ब.** शुद्‌ध उच्चारण प्रयोग और लेखन (स्रोत, स्त्रोत, शृंगार) ५. मुहावरे-कहावतें प्रयोग, चयन

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‍यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेतों, दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । भाषिक कौशलों के प्रत्यक्ष विकास के लिए पाठ्‍यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय' एवं 'लेखनीय' में दी गई हैं । पाठ पर आधारित कृतियाँ 'पाठ के आँगन' में आई हैं । जहाँ 'आसपास' में पाठ से बाहर खोजबीन के लिए है, वहीं 'पाठ से आगे' में पाठ के आशय को आधार बनाकर उससे आगे की बात की गई है । 'कल्पना पल्लवन' एवं 'मौलिक सृजन' विद्‍यार्थियों के भावविश्व एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'भाषा बिंदु' व्याकरणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसमें दिए गए अभ्यास के प्रश्न पाठ से एवं पाठ के बाहर के भी हैं । विद्‍यार्थियों ने उस पाठ से क्या सीखा, उनकी दृष्टि में पाठ, का उल्लेख उनके द्‍वारा 'रचना बोध' में करना है । 'मैं हूँ यहाँ' में पाठ की विषय वस्तु एवं उससे आगे के अध्ययन हेतु संकेत स्थल (लिंक) दिए गए हैं । इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, संकेतस्थल आदि) में आप सबका विशेष सहयोग नितांत आवश्यक है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । कृतियों और उदाहरणों के द्‍वारा संकल्पना तक विद्‍यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आप सबके कंधों पर है । 'पूरक पठन' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करती है और यह विद्‍यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः 'पूरक पठन' सामग्री का वाचन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्‍येतर कृतियों, भाषिक खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्‍यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्वों के विकास के अवसर विद्‍यार्थियों को प्रदान करें। क्षमता विधान एवं पाठ्‍यपुस्तक में अंतर्निहित सभी संदर्भों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

१. चाँदनी रात

– मैथिलीशरण गुप्त

आसपास

आपके परिवेश के किसी सुंदर प्राकृतिक स्थल का वर्णन निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● सुंदर प्राकृतिक स्थल का नाम तथा विशेषताएँ बताने के लिए कहें । ● वहाँ तक की दूरी तथा परिवहन सुविधाएँ पूछें । ● निवास-भोजन आदि की व्यवस्था के बारे में चर्चा करें । ● प्राकृतिक संपत्तियों पर आधारित उद्योगों के नामों की सूची बनवाएँ ।

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल-थल में ।
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है
अवनि और अंबर तल में ।।

पुलक प्रगट करती है धरती
हरित तृणों की नोकों से ।
मानो झूम रहे हैं तरु भी
मंद पवन के झोंकों से ।।

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह
है क्या ही निस्तब्ध निशा ।
है स्वच्छंद-सुमंद गंध वह
निरानंद है कौन दिशा ?

बंद नहीं, अब भी चलते हैं
नियति नटी के कार्य-कलाप ।
पर कितने एकांत भाव से
कितने शांत और चुपचाप ।।

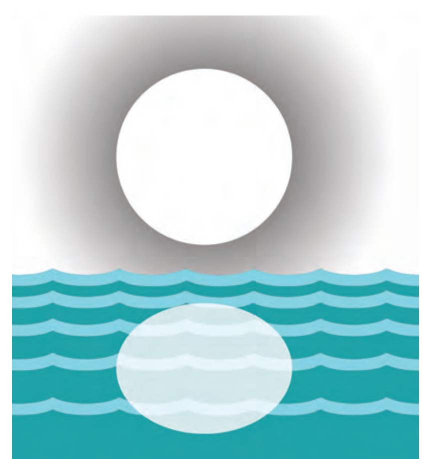
परिचय

जन्म : ३ अगस्त १८८६ चिरगाँव, झाँसी (उ.प्र.) **मृत्यु :** १२ दिसंबर १९६४ **परिचय :** मैथिलीशरण गुप्त जी खड़ी बोली के महत्वपूर्ण कवि हैं । आपकी रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं, विशेषतः नारी के प्रति करुणा की भावना से ओतप्रोत हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : साकेत (महाकाव्य),यशोधरा, जयद्रथ वध, पंचवटी, भारत-भारती (खंडकाव्य), रंग में भंग, राजा-प्रजा आदि (नाटक)

पद्य संबंधी

खंडकाव्य : इसमें मानव जीवन की किसी एक ही घटना की प्रधानता होती है । प्रासंगिक कथाओं को इसमें स्थान नहीं मिलता ।

प्रस्तुत अंश 'पंचवटी' खंडकाव्य से लिया गया है । प्रकृति की छटा का सुंदर रूप बड़े ही माधुर्य के साथ अभिव्यंजित हुआ है । चाँदनी रात का मनोहरी वर्णन सुंदर शब्दों में चित्रित किया है ।





bharatdiscovery.org/india/मैथिलीशरण_गुप्त

है बिखेर देती वसुंधरा
मोती, सबके सोने पर ।
रवि बटोर लेता है उनको
सदा सबेरा होने पर ।।

और विरामदायिनी अपनी
संध्या को दे जाता है ।
शून्य श्याम तनु जिससे उसका
नया रूप छलकाता है ।।

पंचवटी की छाया में है
सुंदर पर्ण कुटीर बना ।
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर
धीर-वीर निर्भीक मना ।।

जाग रहा यह कौन धर्नुर
जबकि भुवन भर सोता है ?
भोगी कुसुमायुध योगी-सा
बना दृष्टिगत होता है ।।

—०—

('पंचवटी' से)

शब्द संसार

पुलक (पुं.सं.) = रोमांच, खुशी
कार्य कलाप (पुं.सं.) = गतिविधि
कुटीर (स्त्री.सं.) = झोंपड़ी, कुटिया
निर्भीक (वि.) = निडर
धर्नुर (पुं.सं.) = तीरंदाज
कुसुमायुध (पुं.सं.) = अनंग, कामदेव
दृष्टिगत (वि.) = जो दिखाई पड़ता हो

कल्पना पल्लवन

'पुलक प्रगट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,' इस पंक्ति का कल्पना विस्तार कीजिए ।

पठनीय

संचार माध्यमों से 'राष्ट्रीय एकता' पर आधारित किसी समारोह की जानकारी पढ़िए ।

श्रवणीय

अपने घर-परिवार के बड़े सदस्यों से लोककथाओं को सुनकर कक्षा में सुनाइए ।

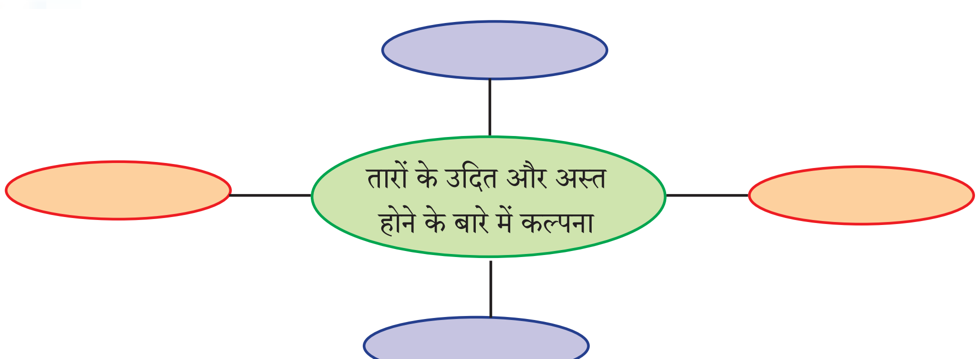
लेखनीय

'प्रकृति मनुष्य की मित्र है', स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(अ) संजाल :



(ख) चाँदनी रात की विशेषताएँ :

१. ....
२. ....
३. ....
४. ....
५. ....
६. ....
७. ....
८. ....

(२) निम्नलिखित पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए :

(च) चारु चंद्र .... झोंको से ।
(छ) क्या ही स्वच्छ .... शांत और चुपचाप ।

पाठ से आगे

संभाषणीय

शरद पूर्णिमा त्योहार के बारे में चर्चा कीजिए।

दिए गए शब्दों का उपयोग करते हुए स्वरचित कविता बनाकर काव्यमंच पर प्रस्तुत कीजिए ।

- तारे
- आकाश
- पर्वत
- नदी
- पृथ्वी

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :–

पर्यायवाची

- तरु
- वसुंधरा
- चंद्र
- कृषक
- उद्‌यान
- अरण्य

रचना बोध

....
....
....

२. बिल्ली का बिलंगुड़ा

– राजेंद्र लाल हांडा

संभाषणीय

समूह बनाकर अपने दैनंदिन जीवन में घटित हास्य घटना/प्रसंग को संवाद रूप में प्रस्तुत कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● घटना/प्रसंग का स्थान तथा समय के बारे में पूछें । ● क्या घटना घटी कक्षा में परस्पर संवाद करवाएँ, इसपर चर्चा करवाएँ । ● घटना का परिणाम कहलवाएँ । ● कक्षा में संवाद करवाएँ ।

एक समय था जब घरों में बिल्ली का आना-जाना बुरा समझा जाता था । परंतु आजकल की परिस्थिति के कारण पुरानी विचारधारा और परंपरा एकदम घपले में पड़ गई है । वही विचार ठीक समझा जाता है जिससे काम चले । पिछले दिनों हमारे घर में बहुत चूहे हो गए थे । उन्हें घर से निकालने के बहुतेरे प्रयत्न किए गए पर हमारी एक न चली । आटे और अनाज के लिए लोहे के ढोल बनवाए गए । यह उपाय कुछ दिनों तक कारगर रहा । परंतु आँख बचाकर चूहे इन ढोलों में भी घुसने लगे । इस समस्या पर कई मित्रों से परामर्श किया गया । आखिर यह फैसला हुआ कि घर में एक बिल्ली पाली जाए । इस प्रस्ताव पर किसी को आपत्ति न थी ।

चुनांचे एक बिल्ली लाई गई । उसकी खूब खातिर होने लगी । कभी बच्चे दूध पिलाते, कभी रोटी देते । उसने विधिपूर्वक चूहों का सफाया शुरू कर दिया । देखते-ही-देखते चूहे घर से गायब हो गए । सब लोग बड़े खुश हुए । बिल्ली प्रायः सब लोगों की थाली से जूठन ही खाती इसलिए हमें इसका कोई खर्च भी नहीं पड़ा । दो महीने बाद वह समय आ गया जब हम चूहों को तो भूल गए और बिल्ली से तंग आ गए । हमने सोचा चूहे तो खाली अनाज ही खाते थे, कम-से-कम परेशान तो नहीं करते थे । यह बिल्ली खाने में भी कम नहीं और हमें तंग भी करती रहती है । उसके प्रति हमारा व्यवहार बदल गया ।

बिल्ली भी कम समझदार जानवर नहीं । जो शेर के काबू में नहीं आई वह हमसे कैसे मात खा जाती । उसने भी अपना रवैया बदल दिया । हमारे आगे-पीछे फिरने की बजाय वह रसोई के आसपास कोने में दुबक कर बैठ जाती । जब मौका लगता, मजे से जो जी में आता खाती । इस तरह चोरी करते बिल्ली कई बार पकड़ी गई । एक दिन सुबह उठते ही मैं रसोई में कुछ लेने गया । देखता हूँ कि कढ़े हुए दूध का दही जो रात को बड़े चाव से जमाया गया था, बिल्ली खूब मजे से खा रही है ।

अब चिंता हुई कि बिल्ली से कैसे पीछा छुड़ाया जाए । मेरा नौकर बहुत होशियार है । रात को काम खत्म करके जाने से पहले उसने एक खाली बोरी के अंदर दो रोटियाँ डाल दीं और चुपके से एक तरफ खड़ा होकर बिल्ली का इंतजार करने लगा । बिल्ली आई । वह एकदम रोटियों पर झपटी । नौकर ने तुरंत बोरी का एक सिरा पकड़ कर उसे ऊपर से बंद कर

परिचय

राजेंद्र लाल हांडा जी एक जाने-माने कथाकार हैं । आपकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में सतत प्रकाशित होती रहती हैं । सम सामयिक विषयों पर आपकी रचनाएँ सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित करती हैं ।

गद्य संबंधी

हास्य कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही वर्णन कहानी होती है । इसमें किसी सत्य का उद्घाटन होता है । हास्य कहानी में इसे हल्के-फुल्के हँसी के अंदाज में प्रस्तुत किया जाता है ।

प्रस्तुत पाठ में लेखक हांडा जी ने हास्य के माध्यम से गलतफहमी के कारण उत्पन्न विशेष स्थितियों का वर्णन किया है ।

दिया । रस्सी के साथ बोरी का मुँह बाँध दिया गया । चूँकि अब रात के दस बजे थे, मैंने अपने नौकर अमरू से कहा कि ''सबेरे बिल्ली को कहीं दूर छोड़ आए जिससे वह इस घर में वापस न आ सके ।''

सब लोगों को चाय पिलाते-पिलाते अमरू को अगले दिन आठ बज गए । मैंने याद दिलाया कि उसे बिल्ली को भूली भटियारिन की तरफ छोड़ कर आना है । बोरी कंधे पर लटका अमरू चल दिया । बात आई गई हो गई। मैं हजामत और स्नान आदि में व्यस्त हो गया क्योंकि साढ़े नौ बजे दफ्तर जाना था । गुसलखाने में मुझे जोर का शोर सुनाई दिया । मैं नहाने में व्यस्त था और कुछ गुनगुना रहा था इसलिए मेरा ध्यान उधर नहीं गया । दो मिनट के बाद ही फिर शोर हुआ । इस बार मैंने सुना कि मेरे घर के सामने कोई आवाज लगा रहा हैः 'आपका नौकर पकड़ लिया गया है । अगर आप उसे छुड़ाना चाहते हैं तो छप्परवाले कुएँ पर पहुँचिए ।'

मैं हैरान हुआ कि क्या बात है । समझा शायद अमरू किसी की साइकिल से टकरा गया होगा । शायद साइकिलवाले का कुछ नुकसान हो गया हो और उसने अमरू को धर-पकड़ा हो । रही आदमी इकट्ठे होने की बात, यह काम दिल्ली में मुश्किल नहीं और फिर करौल बाग में तो बहुत आसान है जहाँ सैकड़ों आदमियों को पता ही नहीं कि वे किधर जाएँ और क्या करें । खैर, उधर जा ही रहा था कि रास्ते में खाली बोरी लटकाए अमरू आता हुआ दिखाई दिया । वह खूब खिलखिलाकर हँस रहा था । उसे डाँटते हुए मैंने पूछा- ''अरे क्या बात हुई ? तूने आज सुबह-ही-सुबह क्या गड़बड़ की जो इतना शोर मचा और मुहल्ले के लोग तुझे मारने को दौड़े ?''

अमरू को कुछ कहना नहीं पड़ा । उसके पीछे कुछ आदमी आ रहे थे, उन्होंने मुझे सारा मामला समझा दिया । बात यह हुई कि जैसे अमरू कंधे पर बोरी लटकाए बिल्ली को बाहर छोड़ने जा रहा था; कुछ लोगों को शक हुआ कि बोरी में बच्चा है । दो आदमी चुपके-चुपके उसके पीछे हो लिए । उन्होंने देखा कि बोरी अंदर से हिल रही है । बस, उन्हें विश्वास हो गया कि इस बदमाश ने किसी बच्चे को पकड़ा है । अमरू स्वभाव से अल्पभाषी है, कुछ मसखरा भी है । वह चुप रहा । देखते-देखते पचासों आदमी इकट्ठे हो गए । उनमें से एक चिल्लाकर कहने लगा, ''घेर लो इस आदमी को, यह बदमाश उसी गिरोह में से है जिसका काम बच्चे पकड़ना है ।'' उस जगह से पुलिस थाना भी बहुत दूर नहीं था । एक आदमी लपक कर थाने गया और वहाँ से थानेदार और एक सिपाही को बुला लाया । थानेदार को देखते ही एक उत्साही दर्शक अपने कुर्ते की बाहें ऊपर चढ़ाते हुए बोला, ''दरोगा जी, ऐसा नहीं हो सकता कि आप इस बदमाश को चुपचाप यहाँ से ले जाएँ और कानूनी कार्यवाही की आड़ में इसे हवालात के मजे लेने दें । पहले इसकी जी भर के मरम्मत होगी । गजब नहीं है कि भरे मुहल्ले से बच्चे उठा लिए जाएँ ? दो दिन हुए पासवाली गली से एक बच्चा गुम हो गया । देवनगर से तो कई उठाए जा चुके हैं । आप बाद में इसके साथ चाहे जो करें पहले हम

पठनीय

महादेवी वर्मा जी द्‌वारा लिखित 'मेरा परिवार' से किसी प्राणी का रेखाचित्र पढ़िए ।

श्रवणीय

अपने प्रिय प्राणी से संबंधित कोई कहानी सुनिए तथा उससे प्राप्त सीख सुनाईए । जैसे-पंचतंत्र की कहानियाँ आदि ।

आसपास

किसी पशु चिकित्सक से पालतू प्राणियों की सही देखभाल करने संबंधी मार्गदर्शन प्राप्त कीजिए ।

लोग इसकी पिटाई करेंगे ।'' भीड़ में से दसियों ने इस सुंदर प्रस्ताव का समर्थन किया और लोग अमरू को पीटने के लिए मानो तैयार होने लगे ।

उन दिनों दिल्ली में बड़ी सनसनी फैली हुई थी । नगर के सभी भागों से बच्चों के उठाए जाने की खबरें आ रही थीं । एक-दो बार पत्रों में यह छपा कि जमुना के पुल पर कुछ आदमी पकड़े गए जिन्होंने बोरियों में बच्चें बंद किए हुए थे । स्कूलों से बच्चे बहुत सावधानी से लाए जाते थे । पार्कों में और बाहर गलियों में बच्चों का खेलना-कूदना बंद हो चुका था । दिल्ली नगरपालिका और संसद में इसी विषय पर अनेक सवाल-जवाब हो चुके थे इसलिए इस मामले में राजधानी के सभी नागरिकों की दिलचस्पी थी । आश्चर्य इस बात का नहीं कि लोगों ने अमरू पर संदेह क्यों किया, बल्कि इस बात का था कि उन्होंने अभी तक उसकी मार-पिटाई शुरू क्यों नहीं कर दी । वातावरण में सनसनी और तनाव की कमी न थी ।

अगर थानेदार और पुलिस का सिपाही वहाँ न होते तो अबतक अमरू पर भीड़ टूट पड़ी होती । थानेदार ने आते ही अमरू की कलाई पकड़ ली और पूछा, ''बोल, यह बच्चा तूने कहाँ से उठाया है और इसे तू कहाँ ले जा रहा है ? बता कहाँ हैं तेरे और साथी ? आज सबका सुराग लगाकर ही हटूँगा ।'' अमरू अब तक तो दिल में हँस रहा था मगर थानेदार की धमकियों से कुछ घबरा गया । दबी आवाज में वह थानेदार से बोला- ''सरकार, मैंने किसी का बच्चा नहीं उठाया । न मैं बदमाश हूँ । मैं तो एक भले घर का नौकर हूँ । रोटी-चौका करता हूँ और अपना पेट पालता हूँ ।''

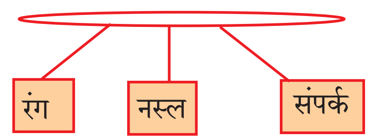
जो आदमी थानेदार को बुलाकर लाया था, क्रोध में आकर बोला, ''क्यों बकता है, बे ! दरोगा जी, ऐसे नहीं यह मानेगा । दो-चार बेंत रसीद कीजिए ।'' दरोगा ने बगल से निकाल कर बेंत अपने हाथ में ली ही थी कि अमरू नम्रतापूर्वक झुका और बोला, ''सरकार, आप जितना चाहें मुझे पीट लें, पहले यह तो देख लें कि इस बोरी में है क्या ? हुक्म हो तो चलिए थाने चलें ।'' यद्‌यपि थानेदार इस बात पर राजी हो गए थे पर भीड़ कब मानने वाली थी । लोग चिल्ला उठे, ''हरगिज नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा । हम सब इस आदमी की बदमाशी के गवाह हैं । मामला कभी दबने नहीं देंगे ।'' थानेदार डर गए कि उनकी नीयत पर लोगों को शक हो रहा है उन्होंने अमरू से कहा, ''अच्छा, बोरी को नीचे रखो । इसका मुँह खोलो ।''

अमरू शांतिपूर्वक नीचे बैठ गया और धीरे से उसने बोरी का मुँह खोल दिया । जैसे ही बोरी का मुँह खुला बिल्ली का बिलंगुड़ा छलाँगें मारता हुआ एक तरफ भाग गया और लोग देखते ही रह गए । थानेदार की भी समझ में न आया कि अब क्या करें ? वह थाने की तरफ मुड़ा और एक ताँगेवाले की पीठ पर बेंत मारते हुए बोला, ''जानते नहीं कि रास्ते में ताँगा खड़ा नहीं करना चाहिए ।'' इस प्रकार अपनी झेंप मिटाने का यत्न करते हुए दरोगा जी चले गए और अमरू हँसता हुआ घर वापस आ गया ।

—०—

लेखनीय

आपका पालतू कुत्ता दो दिनों से लापता है । उसके लिए समाचारपत्र में देने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए । निम्न मुद्‌दों का आधार लें ।



मौलिक सृजन

अपने परिसर में लावारिस जानवरों की बढ़ती संख्या एवं उनसे होने वाली परेशानियों के बारे में संबंधित अधिकारी को पत्र लिखकर सूचना दीजिए ।

शब्द संसार

दुत्कारना (क्रि.) = तिरस्कार करना
कारगर (वि.) = उपयोगी, प्रभावी
मसखरा (पुं.स.) = हँसोड़, हँसाने वाला
गिरोह (पुं.सं.) = समूह
चुनांचे (अव्य.) = इसलिए

मुहावरे

सिर चढ़ जाना = उद्‌दंडता के लिए खुली छूट देना
टूट पड़ना = झपट पड़ना
व्यस्त होना = तल्लीन होना
परामर्श करना = राय लेना

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :

घर में बिल्ली पालने के कारण

(ख) कहानी के प्रमुख पात्र

(२) उत्तर लिखिए :

✲ बिल्ली के रवैये में आया परिवर्तन-
१.
२.

(३) स्पष्ट कीजिए :

✲ घर के सदस्यों का बिल्ली के प्रति व्यवहार पहले और बाद में-

खान पान

पाठ से आगे

'प्राणी हमसे कहते हैं, जियो और जीने दो'
इस विषय पर स्वमत प्रकट कीजिए ।

भाषा बिंदु

शब्द कोश की सहायता से रेखांकित शब्दों के विलोम खोजिए तथा उनसे नए वाक्य लिखिए :-

विलोम

(१) बिल्ली भी कम समझदार जानवर नहीं है ।
(२) अमरु स्वभाव से अल्पभाषी है ।
(३) पुरानी विचार धारा और परंपरा एकदम घपले में पड़ गई है ।
(४) अब हम उसे दुत्कार रहे हैं ।
(५) दसियों ने इस सुंदर प्रस्ताव का समर्थन किया ।
(६) डायनासोर प्राणी अब दुर्लभ हो गए हैं ।
(७) वह तटस्थ होकर अपने विचार रखता है ।
(८) इस भौतिक जीवन में मनुष्य बहुत खुश है ।
(९) गर्मियों में सारी धरती शुष्क हो जाती है ।
(१०) पैसों का अपव्यय नहीं करना चाहिए ।

रचना बोध

....
....
....

३. कबीर

पूरक पठन

– हजारी प्रसाद द्विवेदी

हिंदी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ । महिमा में यह व्यक्तित्व केवल एक ही प्रतिद्वंद्वी जानता है, तुलसीदास परंतु तुलसीदास और कबीर के व्यक्तित्व में बड़ा अंतर था । यद्‌यपि दोनों ही भक्त थे परंतु दोनों स्वभाव, संस्कार और दृष्टिकोण में एकदम भिन्न थे । मस्ती, फक्कड़ाना स्वभाव और सब कुछ ही झाड़-फटकारकर चल देने वाले तेज ने कबीर को हिंदी साहित्य का अद्‌वितीय व्यक्ति बना दिया है । उनकी वाणी में सब कुछ को पाकर उनका सर्वजयी व्यक्तित्व विराजता रहता है । उसी ने कबीर की वाणी में अनन्यसाधारण जीवनरस भर दिया है । कबीर की वाणी का अनुकरण नहीं हो सकता । अनुकरण करने की सभी चेष्टाएँ व्यर्थ सिद्‌ध हुई हैं ।

× × ×

कबीरदास की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई थी । उन दिनों उत्तर के हठयोगियों और दक्षिण के भक्तों में मौलिक अंतर था । एक टूट जाता था पर झुकता न था, दूसरा झुक जाता था पर टूटता न था । एक के लिए समाज की ऊँच-नीच भावना मजाक और आक्रमण का विषय था, दूसरे के लिए मर्यादा और स्फूर्ति का । .. संसार में भटकते हुए जीवों को देखकर करुणा के अश्रु से वे कातर नहीं हो आते थे बल्कि और भी कठोर होकर उसे फटकार बताते थे । वे सर्वजगत के पाप को अपने ऊपर ले लेने की वांछा से ही विचलित नहीं हो पड़ते थे बल्कि और भी कठोर और भी शुष्क होकर सुरत और विरत का उपदेश देते थे । संसार में भरमने वालों पर दया कैसी, मुक्ति के मार्ग में अग्रसर होने वालों को आराम कहाँ, करम की रेख पर मेख न मार सका तो संत कैसा ?

ज्ञान का गेंद कर सुर्त का डंड कर
खेल चौगान-मैदान माँही ।
जगत का भरमना छोड़ दे बालके
आय जा भेष-भगवंत पाहीं ।।

× × ×

अक्खड़ता कबीरदास का सर्वप्रधान गुण नहीं हैं । जब वे अवधूत या योगी को संबोधन करते हैं तभी उनकी अक्खड़ता पूरे चढ़ाव पर होती है । वे योग के बिकट रूपों का अवतरण करते हैं गगन और पवन की पहेली बुझाते रहते हैं, सुन्न और सहज का रहस्य पूछते रहते हैं, द्‌वैत और अद्‌वैत के सत्त्व की चर्चा करते रहते हैं-

अवधू, अच्छरहूँ सों न्यारा ।
जो तुम पवना गगन चढ़ाओ, गुफा में बासा ।
गगना-पवना दोनों बिनसैं, कहँ गया जोग तुम्हारा ।।

परिचय

जन्म : १९ अगस्त १९०७ दुबे का छपरा, बलिया (उ.प्र.)
मृत्यु: १९ मई १९७९(उ.प्र.)
परिचय : द्विवेदी जी हिंदी के शीर्षस्थ साहित्यकारों में से एक हैं । आप उच्चकोटि के निबंधकार, उपन्यासकार,आलोचक, चिंतक एवं शोधकर्ता हैं ।
प्रमुख कृतियाँ: अशोक के फूल, कल्पलता (निबंध), बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चंद्रलेख, पुनर्नवा (उपन्यास), कबीर, हिंदी साहित्य की भूमिका-मेघदूत एक पुरानी कहानी आदि (आलोचना और साहित्य इतिहास)

गद्‌य संबंधी

आलोचना : किसी विषय वस्तु के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उसके गुण-दोष एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वाली विधा आलोचना है ।

प्रस्तुत पाठ में द्विवेदी जी ने संत कबीर के व्यक्तित्व, उनके उपदेश, उनकी साधना, उनके स्वभाव के विभिन्न गुणों को बड़े ही रोचक ढंग से स्पष्ट किया है ।

गगना-मद्‌धे जोती झलके, पानी मद्‌धे तारा ।
घटिगे नींर विनसिने तारा, निकरि गयौ केहि द्‌वारा ।

× × ×

परंतु वे स्वभाव से फक्कड़ थे । अच्छा हो या बुरा, खरा हो या खोटा, जिससे एक बार चिपट गए उससे जिंदगीभर चिपटे रहो, यह सिद्‌धांत उन्हें मान्य नहीं था । वे सत्य के जिज्ञासु थे और कोई मोह-ममता उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी । वे अपना घर जलाकर हाथ में मुराड़ा लेकर निकल पड़े थे और उसी को साथी बनाने को तैयार थे जो उनके हाथों अपना भी घर जलवा सके -

हम घर जारा अपना, लिया मुराड़ा हाथ ।
अब घर जारों तासु का, जो चलै हमारे साथ ।

वे सिर से पैर तक मस्त-मौला थे । मस्त-जो पुराने कृत्यों का हिसाब नहीं रखता, वर्तमान कर्मों को सर्वस्व नहीं समझता और भविष्य में सब-कुछ झाड़-फटकार निकल जाता है । जो दुनियादार किए-कराए का लेखा-जोखा दुरुस्त रखता है वह मस्त नहीं हो सकता । जो अतीत का चिट्‌ठा खोले रहता है वह भविष्य का क्रांतदर्शी नहीं बन सकता । जो मतवाला है वह दुनिया के माप-जोख से अपनी सफलता का हिसाब नहीं करता । कबीर जैसे फक्कड़ को दुनिया की होशियारी से क्या वास्ता ? ये प्रेम के मतवाले थे मगर अपने को उन दीवानों में नहीं गिनते थे जो माशूक के लिए सर पर कफन बाँधे फिरते हैं । ....

हमन हैं इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या ।
रहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या ।
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर-बदर फिरते ।
हमारा यार है हम में, हमन को इंतजारी क्या ।

× × ×

इसीलिए ये फक्कड़राम किसी के धोखे में आने वाले न थे । दिल जम गया तो ठीक है और न जमा तो राम-राम करके आगे चल दिए । योग-प्रक्रिया को उन्होंने डटकर अनुभव किया, पर जँची नहीं ।

× × ×

उन्हें यह परवाह न थी कि लोग उनकी असफलता पर क्या-क्या टिप्पणी करेंगे । उन्होंने बिना लाग-लपेट के, बिना झिझक और संकोच के ऐलान किया-

आसमान का आसरा छोड़ प्यारे,
उलटि देख घट अपन जी ।
तुम आप में आप तहकीक करो,
तुम छोड़ो मन की कल्पना जी ।

आसमान अर्थात गगन-चंद्र की परम ज्योति । जो वस्तु केवल शारीरिक व्यायाम और मानसिक शम-दमादि का साध्य है वह चरम सत्य नहीं हो सकती । ...... केवल शारीरिक और मानसिक कवायद से दीखने वाली ज्योति जड़ चित्त की कल्पना-मात्र है । वह भी बाह्य है । कबीर ने कहा, और आगे चलो । केवल क्रिया बाह्य है, ज्ञान चाहिए । बिना ज्ञान के योग व्यर्थ है ।

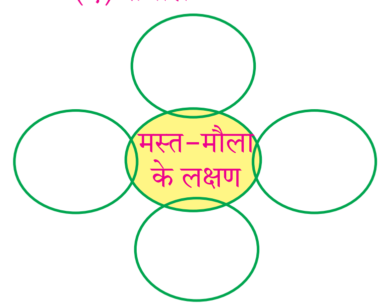
× × ×

पठनीय

संत कबीर जी के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए तथा कक्षा में उसका वाचन कीजिए ।

सूचना के अनुसार कृतियाँ :-

(१) संजाल :



(२) परिच्छेद पढ़कर प्राप्त होने वाली प्रेरणा लिखिए :

श्रवणीय

किसी संत कवि के दोहे तथा पद सुनिए ।

कबीर की यह घर-फूँक मस्ती, फक्कड़ना लापरवाही और निर्मम अक्खड़ता उनके अखंड आत्मविश्वास का परिणाम थी । उन्होंने कभी अपने ज्ञान को, अपने गुरु को और अपनी साधना को संदेह की नजरों से नहीं देखा । अपने प्रति उनका विश्वास कहीं भी डिगा नहीं । कभी गलती महसूस हुई तो उन्होंने एक क्षण के लिए भी नहीं सोचा कि इस गलती के कारण वे स्वयं हो सकते हैं । उनके मत से गलती बराबर प्रक्रिया में होती थी, मार्ग में होती थी, साधन में होती थी ।

× × ×

वे वीर साधक थे और वीरता अखंड आत्म-विश्वास को आश्रय करके ही पनपती है । कबीर के लिए साधना एक विकट संग्राम स्थली थी, जहाँ कोई विरला शूर ही टिक सकता था ।

× × ×

कबीर जिस साईं की साधना करते थे वह मुफ्त की बातों से नहीं मिलता था । उस राम से सिर देकर ही सौदा किया जा सकता था-

साई सेंत न पाइए, बाताँ मिलै न कोय ।
कबीर सौदा राम सौं, सिर बिन कदै न होय ।।

× × ×

यह प्रेम किसी खेत में नहीं उपजता, किसी हाट में नहीं बिकता फिर भी जो कोई भी इसे चाहेगा, पा लेगा । वह राजा हो या प्रजा, उसे सिर्फ एक शर्त माननी होगी, वह शर्त है सिर उतारकर धरती पर रख ले । जिसमें साहस नहीं, जिसमें इस अखंड प्रेम के ऊपर विश्वास नहीं, उस कायर की यहाँ दाल नहीं गलेगी । हरि से मिल जाने पर साहस दिखाने की बात करना बेकार है, पहले हिम्मत करो, भगवान आगे आकर मिलेंगे ।

× × ×

विश्वास ही इस प्रेम की कुंजी है;-विश्वास जिसमें संकोच नहीं, द्विधा नहीं, बाधा नहीं ।

प्रेम न खेतौं नीपजै, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा-परजा जिस रुचे, सिर दे सो ले जाय ।।
सूरै सीस उतारिया, छाड़ी तन की आस ।
आगेथैं हरि मुलकिया, आवत देख्या दास ।।

भक्ति के अतिरेक में उन्होंने कभी अपने को पतित नहीं समझा क्योंकि उनके दैन्य में भी उनका आत्म-विश्वास साथ नहीं छोड़ देता था । उनका मन जिस प्रेमरूपी मदिरा से मतवाला बना हुआ था वह ज्ञान के गुण से तैयार की गई थी ।

× × ×

युगावतारी शक्ति और विश्वास लेकर वे पैदा हुए थे और युगप्रवर्तक की दृढ़ता उनमें वर्तमान थी इसीलिए वे युग प्रवर्तन कर सके । एक वाक्य में उनके व्यक्तित्व को कहा जा सकता है: वे सिर से पैर तक मस्त-मौला थे- बेपरवाह, दृढ़, उग्र, कुसुमादपि कोमल, वज्रादपि कठोर ।

—०—

('कबीर के व्यक्तित्व, साहित्य और दार्शनिक विचारों की आलोचना' से)

लेखनीय

'कबीर संत ही नहीं समाज सुधारक भी थे' इस विषय पर विचार लिखिए ।

संभाषणीय

दोहों की प्रतियोगिता के संदर्भ में आपस में चर्चा कीजिए ।

शब्द संसार

फक्कड़ (पुं.) = मस्त
हठयोग (पुं.सं.) = योग का एक प्रकार
सुरत (स्त्री.सं.) = कार्य सिद्धि का मार्ग
मेख (स्त्री.फा.) = कील, काँटा
मुराड़ा (पुं.सं.) = जलती हुई लकड़ी
क्रांतदर्शी (वि.) = दूरदर्शी
माशूक (पुं.अ.) = प्रिय
तहकीक (स्त्री.अ.) = जाँच
शम (पुं.सं.) = शांति, क्षमा

मुहावरा

दाल न गलना = सफल न होना

मौलिक सृजन

'संतों के वचन समाज परिवर्तन में सहायक होते हैं' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

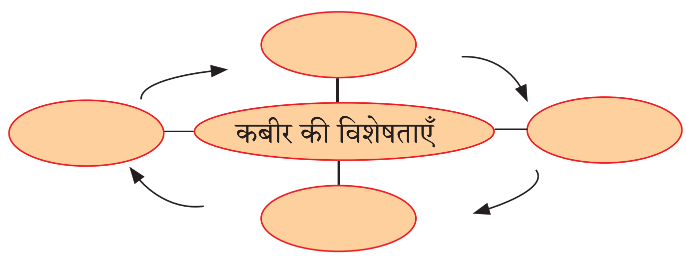
आसपास

मन की एकाग्रता बढ़ाने की कार्य पद्धति की जानकारी अंतरजाल/यू ट्यूब से प्राप्त कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

✻ संजाल :



(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :-

(क) कबीर के मतानुसार प्रेम किसी,
 १. खेत में नहीं उपजता ।
 २. गमले में नहीं उपजता ।
 ३. बाग में नहीं उपजता ।

(ख) कबीर जिज्ञासु थे,
 १. मिथ्या के ।
 २. सत्य के
 ३. कथ्य के ।

पाठ से आगे

कबीर जी की रचनाएँ यू ट्यूब पर सुनिए ।

भाषा बिंदु

रेखांकित शब्दों से उपसर्ग और प्रत्यय अलग करके लिखिए : उपसर्ग-प्रत्यय

☞ भारत की अलौकिकता सारे विश्व में फैली है ।

अ | लौकिक | ता

☞ फक्कड़ना लापरवाही और निर्मम अक्खड़ता उनके आत्मविश्वास का परिणाम थी ।

☞ मोह-ममता उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी ।

☞ लोग उनकी असफलता पर क्या-क्या टिप्पणी करेंगे ।

☞ केवल एक ही प्रतिद्वंद्वी जानता है, तुलसीदास ।

☞ राजेश अभिमानी लड़का है ।

☞ पूर्णिमा के दिन चाँद परिपूर्णता लिए हुए था ।

रचना बोध

....

....

....

४. किताबें

– गुलजार

लेखनीय

निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर पुस्तकों से संबंधित चर्चा के आयोजन में सहभागी होकर लिखिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- पाठ्येतर पुस्तकें । ● पुस्तकों का संकलन । ● पुस्तकों की देखभाल ।
- विचार मंथन ⟶ विचार, वाक्य, सुवचन ।

किताबें झाँकती हैं बंद अलमारी के शीशों से,
बड़ी हसरत से तकती हैं ।
महीनों अब मुलाकातें नहीं होतीं,
जो शामें उनकी सोहबत में कटा करती थीं
अब अक्सर ....

गुजर जाती हैं 'कंप्यूटर के पर्दों पर'
बड़ी बेचैन रहती हैं किताबें ....
उन्हें अब नींद में चलने की आदत हो गई है
जो कदरें वो सुनाती थी
कि जिनके 'सेल' कभी मरते नहीं थे,
वो कदरें अब नजर आती नहीं घर में,
जो रिश्ते वो सुनाती थीं ।

वह सारे उधड़े-उधड़े हैं,
कोई सफा पलटता तो इक सिसकी निकलती है,
कई लफ्जों के मानी गिर पड़े हैं
बिना पत्तों के सूखे-टुंड लगते हैं वो सब अल्फाज,
जिन पर अब कोई मानी नहीं उगते ....

परिचय

जन्म : १८ अगस्त १९३६ में दीना, झेलम जिला, पंजाब, (स्वतंत्रता पूर्व भारत) में हुआ।
परिचय : गुलजार जी का मूल नाम संपूरन सिंह कालरा है । आप एक कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक, नाटककार होने के साथ-साथ हिंदी फिल्मों के प्रसिद्‌ध गीतकार हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : चौरस रात (लघुकथाएँ), रावी पार (कथा संग्रह), रात, चाँद और मैं, एक बूँद चाँद, रात पश्मीने की (कविता संग्रह), खराशें (कविता, कहानी का कोलाज) ।

पद्‌य संबंधी

नई कविता : आधुनिक संवेदना के साथ परिवेश के संपूर्ण वैविध्य को नए शिल्प में अभिव्यक्त करने वाली काव्यधारा है ।

प्रस्तुत कविता में गुलजार जी ने पुस्तकें पढ़ने का सुख, कंप्यूटर के कारण पुस्तकों के प्रति अरुचि, पुस्तकों और मनुष्यों के बीच बढ़ती दूरी और उससे उत्पन्न दर्द को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।





https://youtu.be/tHGlJOo3J14

जुबां पर जो जायका आता था जो सफा पलटने का
अब उँगली 'क्लिक' करने से बस
झपकी गुजरती है
बहुत कुछ तह-ब-तह खुलता चला जाता है परदे पर,
किताबों से जो जाती राब्ता था, कट गया है ....

कभी सीने पे रख के लेट जाते थे
कभी गोदी में लेते थे
कभी घुटनों को अपने रिहल की सूरत बना कर
नीम-सजदे में पढ़ा करते थे, छूते थे जबीं से
वो सारा इल्म तो मिलता रहेगा आइंदा भी

मगर वो जो किताबों में मिला करते थे सूखे फूल
और महके हुए रुक्के
किताबें गिरने, उठाने के बहाने रिश्ते बनते थे
उनका क्या होगा ? वो शायद अब नहीं होंगे !!

—०—

संभाषणीय

सुप्रसिद्ध कवि गुलजार की अन्य किसी कविता का मौन वाचन करते हुए आनंदपूर्वक रसास्वादन कीजिए तथा निम्न मुद्दों के आधार पर केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।

विषय | उद्‌देश्य | भाव

पठनीय

पाठ्‌यपुस्तक की किसी एक कविता का मुखर एवं मौन वाचन कीजिए ।

श्रवणीय

सफदर हाश्मी रचित 'किताबें कुछ कहना चाहती है' कविता सुनिए ।

शब्द संसार

हसरत (स्त्री.सं.) = कामना, उम्मीद, इच्छा
सोहबत (पुं.सं.) = संगत
कदरें (स्त्री.अ.) = मूल्य, मायने
जायका (पुं.अ.) = लज्जत, स्वाद
सफा (पुं.अ.) = पन्ना
अल्फाज (पुं.सं.) = शब्द
राब्ता (पुं.सं.) = संपर्क
जबीं (स्त्री.अ.) = माथा
इल्म (पुं.अ.) = ज्ञान
रुक्के (पुं.सं.) = चिट्‌ठी, संदेश पत्र
रिहल (स्त्री.सं.) = ठावनी जिस पर धर्मग्रंथ रखकर पढ़ा जाता है ।

आसपास

'पुस्तकांचे गाव- भिलार' संबंधी जानकारी समाचार पत्र/अंतरजाल आदि से प्राप्त कीजिए और उसे देखने का नियोजन कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'ग्रंथ हमारे गुरु' चर्चा कीजिए तथा अपने विचार लिखिए ।

पाठ के आँगन में

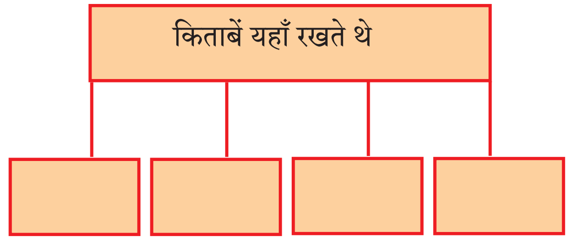
(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) पाठ के आधार पर वाक्य पूर्ण कीजिए :

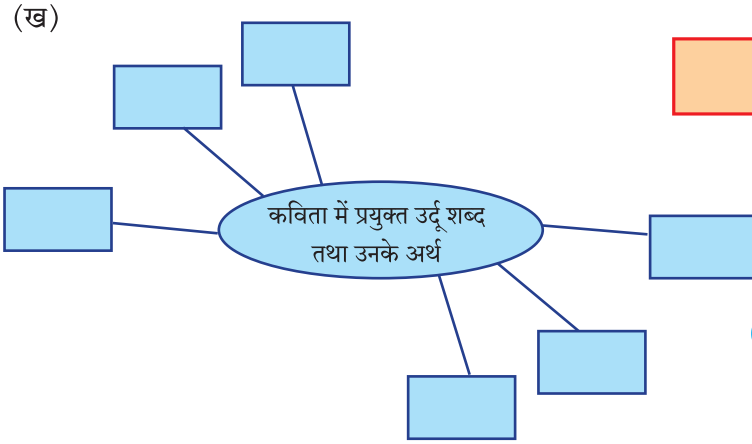
१. किताबों की अब बनी आदत ....

२. किताबें जो रिश्ते सुनाती थीं ....

ग) आकृति :



(ख)



(२) प्रथम पाँच पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

पाठ से आगे

अपने तहसील/जिले के शासकीय ग्रंथालय संबंधी जानकारी निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर प्राप्त कीजिए :- स्थापना-तिथि/वर्ष, संस्थापक का नाम, पुस्तकों की संख्या, विषयों के अनुसार वर्गीकरण

भाषा बिंदु

शब्द-युग्म पूरे करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

शब्द-युग्म

घर - [ ] ....

उधड़े - [ ] ....

भला - [ ] ....

प्रचार - [ ] ....

भूख - [ ] ....

भोला - [ ] ....

रचना बोध

....

....

....

५. जूलिया

– अंतोन चेखव

नौकरीपेशा अभिभावकों को अपने बच्चे शिशु–पालन केंद्र में रखने पड़ते हैं–इस संदर्भ में चर्चा कीजिए :–

संभाषणीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● बच्चों को केंद्र में रखने के कारणों पर चर्चा करें । ● बच्चों को वहाँ भेजने पर उनके मन में जो विचार आते होंगे– स्पष्ट करने के लिए कहें । ● इस समस्या का हल पूछें ।

[एकांकी में गवर्नेस (सेविका) की मार्मिक पीड़ा, विवशता का सजीव चित्रण और शोषण से मुक्ति पाने का प्रभावी संदेश है ।]

(बच्चों की गवर्नेस जूलिया वासिल्देवना आती है ।)

जूलिया : **(दबे स्वर में)** आपने मुझे बुलाया था मालिक ?

गृहस्वामी : हाँ हाँ ..... बैठ जाओ जूलिया .... खड़ी मत रहो ।

जूलिया : **(बैठती हुई)** शुक्रिया ।

गृहस्वामी : जूलिया, मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ । मेरे ख्याल से तुम्हें पैसों की जरूरत होगी; और जितना मैं तुम्हें जान सका हूँ, मुझे लगता है कि तुम अपने आप पैसे भी नहीं माँगोगी । इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाहता हूँ । हाँ तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न ?

जूलिया : **(विनीत स्वर में)** जी नहीं मालिक, चालीस रूबल ।

गृहस्वामी : नहीं भाई, तीस ... ये देखो डायरी, **(पन्ने पलटते हुए)** मैंने इसमें नोट कर रखा है । मैं बच्चों की देखभाल और उन्हें पढ़ाने वाली हर गवर्नेस को तीस रूबल महीना ही देता हूँ । तुमसे पहले जो गवर्नेस थी, उसे भी मैं तीस रूबल ही देता था । अच्छा, तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं ।

जूलिया : **(दबे स्वर में)** जी नहीं, दो महीने पाँच दिन ।

गृहस्वामी : क्या कह रही हो जूलिया ? ठीक दो महीने हुए हैं । भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है । हाँ, तो दो महीने के बनते है–अंऽऽ... साठ रूबल । लेकिन साठ रूबल तभी बनते हैं जब महीने में तुमने एक दिन भी छुट्टी न ली हो ... तुमने इतवार को छुट्टी मनाई है । उस दिन तुमने कोई काम नहीं किया । सिर्फ कोल्या को घुमाने के लिए ले गई हो .... और ये तो तुम भी मानोगी कि बच्चे को घुमाने के लिए ले जाना कोई काम नहीं होता .... इसके अलावा, तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं । ठीक है न ?

जूलिया : **(दबे स्वर में)** जी, आप कह रहे हैं तो.. ठीक **(रुक जाती है)** ।

गृहस्वामी : अरे भाई .... मैं क्या गलत कह रहा हूँ ... हाँ तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ यानी बारह दिन तुमने काम नहीं किया

परिचय

जन्म : २९ जनवरी १८६० तगान रोग, रूस **मृत्यु** : १५ जुलाई १९०४

परिचय : महान रूसी साहित्यकार अंतोन चेखव प्रसिद्‌ध कथाकार और नाटककार थे । उनकी कहानियों में सामाजिक कुरीतियों का व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है ।

प्रमुख कृतियाँ : ए ड्रीरी स्टोरी, द वाइफ (उपन्यास) अन्ना ऑन नेक, अ बैड बिजनेस, द बर्ड मार्केट, ओल्ड एज, ग्रीषा आदि (कहानी)–इवानोव, द चैरी आर्चर्ड आदि (नाटक) ।

गद्‌य संबंधी

एकांकी : इसका आकार छोटा होने के कारण इसमें एक ही कथा होती है । इसकी कथा व संवाद आदि से अंत तक रोचक और आकर्षक होते हैं ।

प्रस्तुत एकांकी में रचनाकार ने दब्बूपन को त्यागकर अपने अधिकार, न्याय के लिए सजग रहने हेतु प्रेरित किया है ।

यानी तुम्हारे बारह रूबल कट गए । उधर कोल्या चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया पिछले हफ्ते शायद तीन दिन दाँतों में दर्द रहा था और मेरी पत्नी ने तुम्हें दोपहर बाद छुट्‌टी दे दी थी, तो बारह और सात-उन्नीस । उन्नीस नागे हाँ तो भई, घटाओ साठ में से उन्नीस... कितने रहते हैं.. अम.. इकतालीस,.. इकतालीस रूबल ! ठीक है?

जूलिया : **(रुआँसी हो जाती है । रोते स्वर में)** जी हाँ ।

गृहस्वामी : **(डायरी के पन्ने उलटते हुए)** हाँ, याद आया... पहली जनवरी को तुमने चाय की प्लेट और प्याली तोड़ी थी । प्याली बहुत कीमती थी । मगर मेरे भाग्य में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है ।... मैंने जिसका भला करना चाहा, उसने मुझे नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है ... खैर मेरा भाग्य ! हाँ , तो मैं प्याली के दो रूबल ही काटूँगा ... अब देखो उस दिन तुमने ध्यान नहीं दिया और वहाँ किसी टहनी की खरोंच लगने से बच्चे की जैकेट फट गई । दस रूबल उसके गए । इसी तरह तुम्हारी लापरवाही की वजह से घर की सफाई करने वाली नौकरानी मारिया ने वान्या के नए जूते चुरा लिए .... **(रुक कर)** तुम मेरी बात सुन भी रही हो या नहीं ?

जूलिया : **(मुश्किल से अपनी रुलाई रोकते हुए)** जी सुन रही हूँ ।

गृहस्वामी : हाँ ठीक है । अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों को पढ़ाना और उनकी देखभाल करना है । तुम्हें इसी के तो पैसे मिलते हैं । तुम अपने काम में ढील दोगी तो पैसे कटेंगे या नहीं ?... मैं ठीक कह रहा हूँ न !... तो जूतों के पाँच रूबल और कट गए... और हाँ, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिए थे ।

जूलिया : **(लगभग रोते हुए)** जी नहीं, आपने कुछ नहीं... **(आगे नहीं कह पाती)**

गृहस्वामी : अरे मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मैं डायरी में हर चीज नोट कर लेता हूँ । तुम्हें यकीन न हो तो दिखाऊँ डायरी ? **(डायरी के पन्ने यूँ ही उलटने लगता है)**

जूलिया : **(आँसू पोंछती हुई)** आप कह रहे हैं तो आपने दिए ही होंगे ।

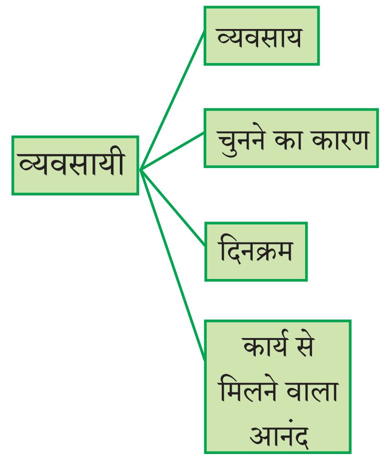
गृहस्वामी : **(कड़े स्वर में)** दिए होंगे नहीं-दिए हैं ... ठीक है । घटाओ सत्ताईस, इकतालीस में से ... अम... अम... बचे चौदह । क्यों हिसाब ठीक है न ?

जूलिया : **(आँसू पीती हुई काँपती आवाज में)** मुझे अभी तक एक ही बार कुछ पैसे मिले थे और वो मुझे मालकिन ने दिए थे ... सिर्फ तीन रूबल । ज्यादा नहीं ।

गृहस्वामी : **(जैसे आसमान से गिरा हो)** अच्छा ! ... और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बताई तक नहीं । देखो, तुम न

लेखनीय

छोटे व्यवसायिकों के साथ दिए गए मुद्दों के आधार पर वार्तालाप कीजिए और संवाद के रूप में लिखिए ।



श्रवणीय

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले 'हास्य कवि सम्मेलन' की कविताएँ सुनिए और किसी एक कविता का आशय अपने मित्रों को सुनाइए ।

आसपास

घरेलू काम करने वाले लोगों की समस्याओं की सूची बनाइए ।

बताती तो हो जाता न अनर्थ !... खैर, देर से ही सही ... मैं इसे भी डायरी में नोट कर लेता हूँ ... **(डायरी खोलकर उसमें यूँ ही कुछ लिखता है)** हाँ तो, चौदह में से तीन और घटा दो-बचते हैं, ग्यारह रूबल **(देते हुए)** सँभाल लो ... गिन लो, ठीक है ना ?

जूलिया : **(काँपते हाथों से रूबल लेती है । काँपते ही स्वर में)** जी धन्यवाद !

गृहस्वामी : **(अपना गुस्सा नहीं सँभाल पाता, ऊँचे स्वर में लगभग चिल्लाते हुए)** तुम .... तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो जूलिया ? जबकि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने तुम्हें ठग लिया है... तुम्हें धोखा दिया है ... तुम्हारे पैसे हड़प लिए हैं ... और तुम ... तुम इसके बावजूद मुझे धन्यवाद दे रही हो ! **(गुस्से में आवाज काँपने लगती है ।)**

जूलिया : जी हाँ मालिक ...

गृहस्वामी : **(गुस्से से तुतलाने लगता है)** 'जी हाँ मालिक ! जी हाँ मालिक ! ... क्यों ? क्यों जी हाँ मालिक ....'

जूलिया : **(डर जाती है भयभीत स्वर में)** क्योंकि इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया ... आप कुछ तो दे रहे हैं ।

गृहस्वामी : **(क्रोध के कारण काँपते, उत्तेजित स्वर में)** उन लोगों ने तुम्हें एक पैसा तक नहीं दिया जूलिया, मुझे ये बात जानकर जरा भी आश्चर्य नहीं हो रहा है.... **(स्वर धीमा कर)** जूलिया, मुझे इस बात के लिए माफ कर देना कि मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा-सा क्रूर मजाक किया ... पर मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था । देखो जूलिया, मैं तुम्हारा एक पैसा नहीं मारूँगा... **(जेब से निकाल कर)** ये हैं तुम्हारे अस्सी रूबल ।.... मैं अभी इन्हें तुम्हें दूँगा ... लेकिन इससे पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहूँगा-'जूलिया, क्या ये जरूरी है कि इनसान भला कहलाने के लिए, इतना दब्बू, भीरु और बोदा बन जाए कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे ? बस, खामोश रहे और सारी ज्यादतियाँ सहता जाए ? नहीं जूलिया, नहीं ... इस तरह खामोश रहने से काम नहीं चलेगा । अपने को बचाए रखने के लिए, तुम्हें इस कठोर, क्रूर, निर्मम और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा । अपने दाँतों और पंजों के साथ लड़ना होगा पूरी शक्ति के साथ ... मत भूलो जूलिया, इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है.. कोई स्थान नहीं है .. ।'

—०—

पठनीय

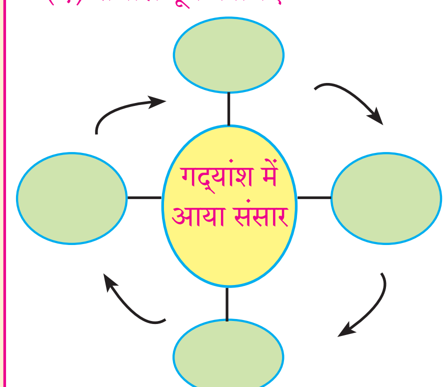
किसी अन्य पाठ्यपुस्तक से एकांकी पढ़िए ।

मौलिक सृजन

'जूलिया की जगह आप होते तो' ..... विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

पठित गद्यांश पर आधारित कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

(१) संजाल पूर्ण कीजिए



(२) कारण लिखिए :-

(क) गृहस्वामी द्वारा जूलिया से माफी माँगना

(ख) गृहस्वामी से जूलिया को संसार के साथ लड़ने के लिए कहना

(३)(क) परिच्छेद में प्रयुक्त कोई एक मुहावरा ढूँढ़कर उसका सार्थक वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(ख) 'पर' शब्द के दो अर्थ लिखिए ।

(४)'संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है', इसपर लगभग आठ से दस वाक्यों में अपने विचार लिखिए ।

शब्द संसार

रूबल (सं.) = रूस की मुद्रा/चलन
निर्मम (वि.) = निर्दयी
भीरु (वि.) = डरपोक
बोदा (वि.) =मूर्ख, गावदी, सुस्त
नागा (पुं.अ.) = वह दिन जिस दिन काम न किया हो

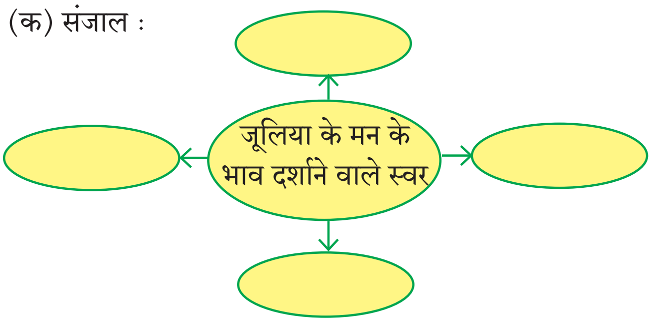
मुहावरे

ठग लेना = धोखा देना
हड़प लेना = बेईमानी से अधिकार कर लेना दूसरे की वस्तु हजम कर जाना ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) संजाल :



(ख) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो :
(१) वान्या (२) रुबल

(२) पाठ में प्रयुक्त अंकों का उपयोग करके मुहावरे लिखिए ।

(३) कई बार अज्ञान के कारण गरीबों को ठगा जाता है यह देखकर मेरे मन में विचार आए ....

पाठ से आगे

परिचारिका पाठ्यक्रम नर्सिंग कोर्स संबंधी जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कीजिए और आवश्यक अर्हता संबंधी चर्चा करें ।

भाषा बिंदु

नीचे दिए गए चिह्नों के सामने उनके नाम लिखिए तथा वाक्यों में उचित विरामचिह्न लगाइए :-

विरामचिह्न

क्र.	चिह्न	नाम	वाक्य
१.	-		१. स्त्री शिक्षा को लेकर लेखक के क्या विचार थे
२.	.		२. श्याम तुम आ गए
३.	———		३. मोहन बोला तुमने जो कुछ कहा ठीक है
४.	[ ]		४. जीवन संग्राम में सब लड़ रहे हैं कुछ जीतेंगे कुछ हारेंगे
५.	“.......”		५. भरत भैया ऐसा ना कहो
६.	,		६. अरे क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ
७.	!		७. जी धन्यवाद
८.	;		८. इसके अलावा तुमने तीन छुट्टियाँ और ली है ठीक है न
९.	( )		९. अच्छा और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बताई तक नहीं
१०.	।		१०. आप कह रहे हैं तो आप ने दिए ही होंगे

रचना बोध

....
....
....

६. ऐ सखि !

- अमीर खुसरो

श्रवणीय

पहेलियाँ सुने और सुनाएँ :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों को पहेलियाँ सुनाने के लिए कहें । ● गुटों में पहेलियाँ बुझाने का आयोजन करें । ● नई पहेलियाँ बनाने के लिए प्रेरित करें ।

रात समय वह मेरे आवे । भोर भये वह घर उठि जावे ।।
यह अचरज है सबसे न्यारा । ऐ सखि साजन ? ना सखि तारा ।।

वह आवे तब शादी होय । उस दिन दूजा और न कोय ।।
मीठे लागे वाके बोल । ऐ सखि साजन ? ना सखि ढोल ।।

जब माँगू तब जल भरि लावे । मेरे मन की तपन बुझावे ।।
मन का भारी तन का छोटा । ऐ सखि साजन ? ना सखि लोटा ।।

बेर-बेर सोवतहि जगावे । ना जागू तो काटे-खावे ।।
व्याकुल हुई मैं हक्की-बक्की । ऐ सखि साजन ? ना सखि मक्खी ।।

अति सुरंग है रंग रँगीलो । है गुणवंत बहुत चटकीलो ।।
राम भजन बिन कभी न सोता । क्यों सखि साजन ? ना सखि तोता ।।

अर्धनिशा वह आयो भौन । सुंदरता बरनै कवि कौन ।।
निरखत ही मन भयो अनंद । क्यों सखि साजन ? ना सखि चंद।।

शोभा सदा बढ़ावन हारा । आँखिन से छिन होत न न्यारा ।।
आठ पहर मेरो मनरंजन । क्यों सखि साजन ? ना सखि अंजन ।।

जीवन सब जग जासों कहै । वा बिनु नेक न धीरज रहै ।।
हरै छिनक में हिय की पीर । क्यों सखि साजन ? ना सखि नीर।।

बिन आए सबहीं सुख भूले । आए ते अँग-अँग सब फूले ।।
सीरा भई लगावत छाती । क्यों सखि साजन ? ना सखि पाती ।।

—०—

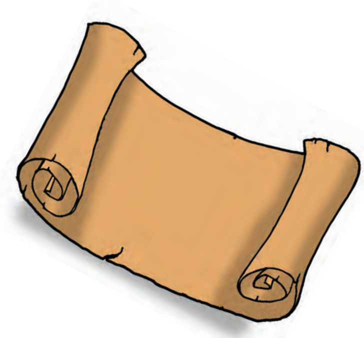
परिचय

जन्म : १२५३ पटियाली एटा (उ.प्र.)
मृत्यु : १३२५ **परिचय :** अबुल हसन यमीनुदीन खुसरो जनसाधारण में अमीर खुसरो के नाम से प्रसिद्‌ध हैं । वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी, हिंदवी और फारसी में एक साथ लिखा । अमीर खुसरो अपनी पहेलियों और मुकरियों के लिए जाने जाते हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : तुहफा-तुस-सिगर, वसतुल-हयात, गुर्रातुल-कमा नेहायतुल-कमाल, दोहे-घरेलू नुस्खे, कह मुकरियाँ, दुसुखने, ढकोसले, अनमेलियाँ/उलटबाँसियाँ आदि।

पद्‌य संबंधी

मुकरियाँ : यह लोक प्रचलित पहेलियों का ही एक रूप है जिसका लक्ष्य मनोरंजन के साथ-साथ बुद्‌धिचातुर्य की परीक्षा लेना होता है।

अमीर खुसरो ने इन मुकरियों के माध्यम से अपनी विशेष शैली में पहेलियाँ एवं उनके उत्तर दिए हैं



शब्द संसार

अचरज (पुं.सं.) = आश्चर्य
तपन (पुं.सं.) = गरमी, ताप
अर्धनिशा (स्त्री.सं..) = आधी रात
भौन (पुं.सं.) = भवन
अंजन (पुं.सं.)= काजल
हिय (पुं.सं.)= हृदय
बेर-बेर (क्रि.वि.)= बार-बार

संभाषणीय

'जीवन में हास्य का महत्त्व' पक्ष-विपक्ष में चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

सुवचनों का संकलन कीजिए तथा सुंदर, सजावटी लेखन करके चार्ट बनाइए । विद्यालय की दीवारों को सजाइए ।

आसपास

पहेलियों का संकलन कीजिए ।

पठनीय

किसी महिला साहित्यिक की जीवनी का अंश पढ़िए, और उनकी प्रमुख कृतियों के नाम बताइए ।

कल्पना पल्लवन

'पुस्तकों का संसार, ज्ञान-मनोरंजन का भंडार' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए ।

पाठ के आँगन में

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) मुकरियों के आधार पर निम्नलिखित शब्दों की विशेषताएँ लिखिए :

अ.क्र.	शब्द	विशेषता
१	तोता	राम भजन किए बिना कभी न सोने वाला
२	नीर	
३	अंजन	
४	ढोल	

(ख) भावार्थ लिखिए : मुकरियाँ - १, ५ और ९

पाठ से आगे

प्राकृतिक घटकों पर आधारित पहेलियाँ बनाइए और संकलन कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

७ डॉक्टर का अपहरण

- डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

आसपास

रात्रि में आकाश दर्शन का आनंद लेते हुए अपने अनुभवों का कथन कीजिए :-

कृति के आवश्यक सोपान :

● आकाश दर्शन का आयोजन करें । ● आकाश के ग्रह, तारों की जानकारी प्राप्त कराएँ । ● प्रकृति का सौंदर्य कहलवाएँ । ● अनुभव का कथन करके लेखन करने के लिए प्रेरित करें ।

कुछ महीनों पहले आपने डॉक्टर भटनागर के अचानक लापता हो जाने का समाचार पढ़ा होगा लेकिन उसके बाद फिर उनके बारे में कुछ भी पता न चला । हुआ यह था कि एक रात को लगभग दो बजे उनके घर की कॉलबेल बज उठी । आदत के अनुसार डॉक्टर भटनागर उठ गए । उनकी पत्नी जागकर भी बिस्तर पर ही पड़ी रहीं क्योंकि वह जानती थी कि ऐसा तो रोज ही होता है । जब भी कोई मरीज सीरियस होता तब अस्पताल का चौकीदार उन्हें उठाने आ जाता । अगर किसी को उन्हें घर बुलाकर ले जाना होता तो वह भी आकर उन्हें जगा देता । डॉक्टर भटनागर मरीजों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझते थे इसलिए वह इसका बुरा न मानते, बल्कि सहर्ष चले जाते । कोई उन्हें फीस दे या न दे-इसकी उन्हें कभी चिंता न थी । उस रात भी वह उठे और गाउन पहने ही दवाइयों का बैग उठाकर चले गए । आम तौर से होता यह था कि वह एक-दो घंटे में लौट आते थे या फिर सवेरा होते-होते तो अवश्य ही आ जाते थे क्योंकि उन्हें अस्पताल समय से पहुँचने की आदत थी ।

किंतु उस दिन जब देर सुबह तक डॉक्टर भटनागर नहीं लौटे तब उनकी पत्नी चिंतित हुईं । पहले सोचा कि शायद मरीज की हालत गंभीर होगी इसलिए देर लग गई होगी । फिर यह भी सोचा कि हो सकता है आज सीधे अस्पताल चले जाएँ । लेकिन जब मरीज उन्हें घर पर पूछने के लिए आने लगे तब उनकी हैरानी बढ़ गई । उन्होंने मित्रों तथा कुछ अन्य संबंधियों को फोन किया और डॉक्टर साहब के बारे में पूछताछ की किंतु कोई जानकारी न मिली । कुछ देर के लिए वह यही मान बैठी कि शायद वे किसी दूर के गाँव में गए हों और किसी कारण से जल्दी वापस न आ पाए हों ।

शाम तक भी जब डॉक्टर भटनागर नहीं लौटे तब उन्होंने पुलिस स्टेशन को फोन किया । डॉक्टर भटनागर का इस तरह गायब हो जाना पुलिस के लिए भी हैरानी का कारण बन गया । चारों ओर खोज शुरू हो गई । वायरलेस से संदेश भेज दिए गए । डॉक्टर भटनागर के गायब होने का समाचार बिजली की तरह शहर भर में फैल गया । उनकी पत्नी खोज के लिए केवल इतना ही सूत्र दे सकीं कि डॉक्टर साहब अपनी कार में नहीं गए । उन्हें लेने कोई गाड़ी आई थी । जिसके बड़े पहियों के निशान उन्होंने सवेरे घर के बाहर सड़क और फुटपाथ पर देखे थे । जाहिर था कि डॉक्टर साहब किसी

परिचय

जन्म : ९ मार्च १९३८

मृत्यु : १४ नवंबर २०१३ इंदिरापुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)

परिचय : हरिकृष्ण देवसरे जी हिंदी के प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार थे । उनकी बाल रचनाएँ परंपरा का अन्वेषण करती, बच्चों की जिज्ञासा को उभारने वाली तथा उनकी कल्पनाओं में नूतन रंग भरने वाली हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : खेल बच्चे का, आओ चंदा के देश चलें, मंगल ग्रह में राजू, उड़ती तश्तरियाँ, गिरना स्काईलैब का, दूसरे ग्रहों के गुप्तचर आदि (वैज्ञानिक बाल उपन्यास)

गद्य संबंधी

विज्ञान कथा : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही वर्णन कहानी है ।'डॉक्टर का अपहरण' एक विज्ञान कथा है ।

प्रस्तुत कथा के माध्यम से देवसरे जी ने उद्योगों के अंधाधुंध विकास, मशीनों की बढ़ती संख्या, फैलते प्रदूषण, बढ़ती बीमारियाँ, जलवायु परिवर्तन के कुप्रभावों के प्रति हमें जागरूक किया है।

ट्रक या बस में गए हैं । मुहल्लेवालों से पूछताछ करने पर भी कोई जानकारी न मिली । फिर भी पुलिस ने वायरलेस से यह सूचना भी जारी कर दी कि कहीं किसी एक्सीडेंट के बारे जानकारी मिले तो सूचना तुरंत दी जाए ।

कई दिन बीत गए । कोई सूचना नहीं मिली । चूँकि डॉक्टर भटनागर का कोई शत्रु भी न था इसलिए यह शंका करना व्यर्थ था कि उनकी हत्या कर दी गई होगी । पुलिस अब केवल दो ही सूत्रों पर विचार कर रही थी । एक यह कि कुछ गुंडों ने उन्हें छिपा लिया हो और सब उनकी पत्नी से मोटी रकम की माँग करें । दूसरा यह कि कोई डाकू दल उन्हें किसी डाकू का इलाज कराने के लिए ले गया हो ।

दिन पर दिन बीतते गए और डॉक्टर भटनागर के बारे में कोई जानकारी न मिली । उनके इस तरह रहस्यात्मक ढंग से गायब हो जाने से न सिर्फ पुलिस परेशान थी बल्कि लोग भी भयभीत हो गए थे । यही कारण था कि डॉ. भटनागर के गायब होने का समाचार केवल एक ही बार छापा गया और बाद में भय का वातावरण बन जाने के डर से उसे दबा दिया गया ।

धीरे-धीरे कई महीने बीत गए । श्रीमती भटनागर निराश हो चुकी थीं । उनकी हालत पागलों जैसी हो गई थी । हर रोज सुबह उठतीं और दरवाजे पर आकार खड़ी हो जातीं, जैसे वह डॉक्टर भटनागर के आने की प्रतीक्षा कर रही हों ।

कई महीने बाद एक दिन श्रीमती भटनागर ने दरवाजे पर फिर से वैसी ही गाड़ी के पहियों के निशान देखे । उन्हें लगा कि शायद डॉक्टर साहब आए थे । लेकिन कहाँ हैं ? उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी । खोज जारी हो गई । पुलिस का एक दल उनके घर पर भी आया । उसने गाड़ी के निशान देखें लेकिन उन निशानों को देखकर कुछ भी अंदाज लगाना कठिन था । हाँ, एक सी.डी अवश्य मिली, जो लिफाफे में बंद थी और उस पर श्रीमती भटनागर का नाम लिखा था । उस सी.डी. को तुरंत सुनने की व्यवस्था की गई । सी.डी. बजते ही सभी लोग हतप्रभ रह गए । उसमें डॉक्टर भटनागर बोल रहे थे :

'तुम सब लोग मेरे लिए परेशान होगे । शायद अब मरा हुआ समझ लिया हो । लेकिन मैं जिंदा हूँ और बिलकुल ठीक हूँ । तुम लोगों से कई करोड़ मील दूर मैं एक अन्य सौरमंडल के ग्रह में हूँ । हम धरतीवाले सोचते हैं कि शायद दुनिया में जो कुछ है, वह हम ही हैं लेकिन इस ब्रह्मांड में तो हमारे सूर्य जैसे न जाने कितने सूर्य हैं और सभी के अपने-अपने ग्रह हैं । उन ग्रहों पर दुनिया बसी है और हमसे वे लोग कई गुना ज्यादा उन्नतिशील हैं । मुझे यहाँ आकर अपने परिवार, मित्रों, देश और पृथ्वी से दूर का दुख तो बहुत ही ज्यादा है, लेकिन इस बात की खुशी है कि मेरा यह भ्रम जाता रहा कि दुनिया में सिर्फ हम ही हैं । मुझे उम्मीद है कि पृथ्वी के लोग मेरी इस बात से कुछ सबक लेंगे ।

पठनीय

डॉ. जयंत नारळीकर जी की विज्ञान संबंधी कोई किताब पढ़िए ।

संभाषणीय

'इसरो' (ISRO) के संदर्भ में प्राथमिक जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कर आपस में वार्तालाप कीजिए ।

हाँ, तो पहले सुनो वह कहानी कि मैं कैसे आया । अमरीका में हुए मेरे सम्मान और मेरे ज्ञान के बारे में इस ग्रह के लोगों ने गुप्त रीति से सूचनाएँ इकट्ठी की थीं । ये तभी से मेरा अपहरण करने की योजना बना रहे थे । उस रात को जब मैं बाहर आया तब एक आदमी ने मुझे बाहर खड़ी सवारी पर चलने का इशारा किया । मैं अपने सहज भाव से आगे बढ़ा लेकिन उस विचित्र यान को देखकर चौंक पड़ा । इसके पहले कि मैं कोई विरोध करता या भागने की कोशिश करता, तीन लोगों की मजबूत बाहों ने मुझे जकड़कर यान के अंदर डाल दिया । यान तेजी से घूमकर सूँ-सूँ की आवाज करता हुआ आसमान में उड़ गया । घबराहट के कारण मैं बेहोश हो गया था और जब मुझे होश आया तो वह यान इस ग्रह पर पहुँच चुका था । मुझे एक विशेष किस्म का प्लास्टिक सूट पहनाया गया ताकि मैं ग्रह के वातावरण के अनुकुल रह सकूँ । अब चूँकि मुझे यहाँ आए हुए काफी समय हो गया है, मैं यहाँ से भागने की कोशिश भी नहीं कर सकता इसलिए मुझे आप सब लोगों के लिए यह संदेश रिकार्ड करके भेजने की अनुमति दी गई है ।

✻ इस ग्रह का नाम बड़ा विचित्र-सा है । यहाँ के लोग विज्ञान में बहुत आगे बढ़ गए हैं । इनके पास ऐसे यान हैं कि ये एक सौरमंडल से दूसरे तक आसानी से आते-जाते हैं । यहाँ भी लोगों ने रहने के लिए घर बना रखे हैं, कारखाने हैं, बाजार हैं, बस्तियाँ है, मोटरें हैं- सभी कुछ है लेकिन हमसे बिलकुल भिन्न । इनके अपने वैज्ञानिक सिद्धांत हैं । इन्हें कई सौरमंडलों और उनके ग्रहों के बारे में जानकारी है । हमारा सौरमंडल इनके सबसे निकट है इसीलिए इन्होंने आसानी से मेरा अपहरण कर लिया । ✻

मेरे अपहरण का कारण जानने से पहले यह जान लें कि ये लोग चिकित्साशास्त्र में बहुत पिछड़े हुए हैं । यह एक ऐसा ग्रह है जहाँ विज्ञान अपनी चरमसीमा को पहुँच चुका है । यहाँ के आदमी अब आदमी नहीं मशीन हो गए हैं । यहाँ का सारा काम मशीनों से ही होता है और इसका नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे आदमी का महत्त्व कम होता गया । अब इस पूरे ग्रह में मशीनें ज्यादा और आदमी कम हैं । जो लोग हैं, वे मशीनों के गुलाम हैं । दूसरी ओर यहाँ के लोगों को एक विचित्र तरह का सड़न रोग होने लगा है । शरीर का कोई अंग अचानक सड़ना शुरू हो जाता है और फिर वह आदमी मर जाता है । इस रोग का इलाज इन्हें अब तक नहीं मालूम हो सका है । लेकिन इस रोग का कारण वे मशीनें ही हैं जो इन्हें नाकारा बनाए हुए है । यहाँ के वैज्ञानिकों ने मेरे बारे में सुना । इन्होंने सोचा कि क्यों न मुझे यहाँ बुलाया जाए । तब कोई ऐसी तरकीब सोची जाए कि सड़ा हुआ अंग काटकर उसके स्थान पर दूसरा अंग लगा दिया जाए । बस इसी कारण मेरा अपहरण हुआ है । आज मैं यहाँ बैठकर सोच रहा हूँ कि हमारी पृथ्वी पर भी विज्ञान तेजी से उन्नति कर रहा है । उद्योगों के विकास से मशीनों की संख्या बढ़ रही है । मशीनों और कारखानों से वातावरण दूषित हो रहा है । वह सब अगर

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए:-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :

ग्रह पर भिन्नता दर्शाने वाले घटक

....
....
....
....
....
....

(२) 'यदि मैं डॉ. भटनागर की जगह होता/होती' तो.................. इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

लेखनीय

'यदि मैं अंतरिक्ष यात्री होती/होता...' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

जारी रहा और ज्यादा मात्रा में हुआ तो पृथ्वी पर भी ऐसे ही दिन आने में देर नहीं लगेगी । आज भी पृथ्वी पर कैंसर, दिल की बीमारियाँ, तनाव के कारण होने वाली बीमारियाँ,ब्लड शुगर आदि उस भविष्य का संकेत हैं । इस ग्रह के लोग इन सभी मुसीबतों से गुजर चुके हैं लेकिन इन पर ध्यान नहीं दिए । अब स्थिति यह है कि अगर तुरंत कोई उपाय न किया गया तो शायद यहाँ से इंसानों का नामो-निशान मिट जाएगा । बस यहाँ होंगी ऊँची इमारतें, बड़े-बड़े कारखाने चिमनियाँ और दैत्याकार मशीनें ।

आप सोच रहे होंगे कि जो देश विज्ञान में इतना आगे बढ़ चुका है वह चिकित्साशास्त्र में इतना पीछे कैसे रह गया । इसका कारण यह रहा है कि यहाँ के निवासियों का शरीर बहुत मजबूत होता है । उसकी ऊपरी चमड़ी मोटे प्लास्टिक जैसे पदार्थ की बनी होती है । इस पर हवा, पानी या मिट्‌टी का कोई असर नहीं होता । हाँ, जब ये बच्चे रहते हैं तब अवश्य यह चमड़ी नरम रहती है लेकिन बाद में धीरे-धीरे वह सख्त हो जाती है । यह सब यहाँ की जलवायु का प्रभाव है । यहाँ लोग बीमार ही नहीं पड़ते इसलिए उन्हें चिकित्सा की जरूरत ही नहीं पड़ती और जब किसी चीज की जरूरत न हो तो भला उसके बारे में कोई कैसे सोच सकता है । इसी कारण ये लोग चिकित्साशास्त्र में पीछे रह गए । किंतु अब इन पर मुसीबत आ गई है ।

मैंने सड़न रोग का अध्ययन कर लिया है और इनके शरीर की बनावट का भी । किंतु समस्या यह है कि पृथ्वी के चिकित्सा सिद्‌धांतों को यहाँ लागू नहीं किया जा सकता । फिर भी कोशिश कर रहा हूँ । इस घातक रोग के इलाज के लिए दवाएँ बनाना है । अंग प्रत्यारोपण के लिए दवाएँ तथा आवश्यक साज सामान बनवाना है । ये काम अकेले मेरे लिए कर पाना संभव नहीं है । मेरा छुटकारा भी यहाँ से तभी होगा जब मैं इन्हें इस मुसीबत से बचने का रास्ता बता सकूँ । इसलिए अब ये लोग योजना बना रहे हैं कि मेरी सहायता के लिए पृथ्वी से कुछ और वैज्ञानिकों और डॉक्टरों को लाया जाए । मैं उनकी बात से सहमत नहीं हूँ । मैं तो चाहता हूँ कि ये लोग स्वयं ही सारी बातें सीख लें और अपना इलाज अपने आप करें किंतु उसके लिए ये अभी तैयार नहीं हैं । यही कारण है कि अब यह बात गुप्त रखी जा रही है कि पृथ्वी से कब और कितने डॉक्टरों और वैज्ञानिकों का अपहरण करके उन्हें यहाँ लाया जाएगा ।

जो भी हो, अब अगर मैं सही सलामत वापस पृथ्वी पर आना चाहूँ तो इनकी इच्छा के अनुसार ही आ सकता हूँ । इसलिए इनसे विरोध मोल लेना ठीक न होगा । फिलहाल यह कहना कठिन है कि मैं कब आ सकूँगा । आप लोग घबराएँ नहीं, मुझे यहाँ कोई कष्ट नहीं है । बस मेरे आने तक आप यही समझें कि मैं इस समय विदेश यात्रा पर हूँ ।

डॉक्टर भटनागर के इस रिकार्ड किए संदेश को सुनकर सभी चकित थे । कितना बड़ा रहस्योद्‌घाटन भी हुआ था - आज के लिए और भविष्य के लिए भी ।

—०—

मौलिक सृजन

'अन्य ग्रहवासी से मेरी मुलाकात' विषय पर संवाद बनाकर लिखिए ।

श्रवणीय

सौर मंडल के किसी एक ग्रह संबंधी जानकारी प्राप्त कर कक्षा में सुनाइए ।

शब्द संसार

लापता (वि.अ.) = जिसका पता न लगे
हुलिया (पुं.,अ.) = रूप, शकल

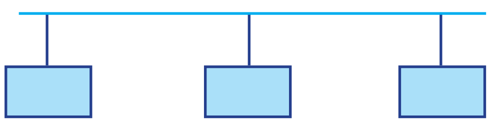
मुहावरें

हतप्रभ रहना = स्तब्ध रहना
नामो निशान मिटना = अस्तित्व समाप्त होना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

* सौरमंडल के अन्य ग्रह पर बसे लोगों के चिकित्साशास्त्र में पिछड़े रहने के कारणों की सूची तैयार कीजिए :



(२) 'स्वास्थ्य की समस्या सभी जगह पाई जाती है' इस विषय पर आपके विचार लगभग आठ से दस वाक्यों में लिखिए ।

पाठ से आगे

'उड़न तश्तरी' की संकल्पना अंतरजाल से पढ़कर स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु

निम्न वाक्यों में कारक रेखांकित कर उनके नाम और चिह्न लिखकर पाठ से अन्य वाक्य खोजकर तालिका में लिखिए : कारक चिह्न

(१) श्रीमती भटनागर ने दरवाजे पर फिर से वैसे ही गाड़ी के पहियों के निशान देखे ।
(२) उस सी.डी. को तुरंत सुनने की व्यवस्था की गई ।
(३) अजीब आशंकाओं से परेशान हो उठा ।
(४) यहाँ भी लोगों ने रहने के लिए घर बना रखे हैं ।
(५) घर से बाहर गए उन्हें काफी समय हो गया ।
(६) हे मानव, मुझे क्षमा कर मैं पृथ्वी से बहुत दूर पहुँच चुका हूँ ।

चिह्न	नाम	पाठ के वाक्य

रचना बोध

....
....
....

८. वीरभूमि पर कुछ दिन

– रुक्मणी संगल

श्रवणीय

किसी ऐतिहासिक स्थल का वर्णन सुनिए और सुनते समय मुद्दों का आकलन कीजिए :–
कृति के आवश्यक सोपान :

● अपने परिवेश के ऐतिहासिक स्थलों के नाम पूछें । ● भारत के विभिन्न राज्यों के ऐतिहासिक स्थलों के नाम बताने के लिए कहें । ● देखे हुए ऐतिहासिक स्थलों का वर्णन एक दूसरे को सुनाने के लिए कहें ।

गाड़ी अपनी गति से बढ़ रही थी । भटिंडा, हनुमानगढ़, लालगढ़ और बीकानेर होते हुए नागौर पहुँची । यहाँ से मेड़ता पहुँचे तो लगा, फिर से पंजाब के आसपास आ गए हैं, क्योंकि कुछ खेत, हरियाली और पशुधन भी दृष्टिगोचर होने लगे थे । सायंकाल होते-होते अपना गंतव्य स्टेशन 'जोधपुर' आ गया । आज का हमारा पड़ाव 'जोधपुर' था, यों भी सायंकाल हो चुका था । स्टेशन के समीप होटल में कमरा मिल गया । सामान वहाँ रखकर थोड़ा तरोताजा हुए ।

२२ दिसंबर अल्पाहार कर एक ऑटो रिक्शा लेकर अपनी पहली मंजिल 'उम्मेद भवन' की ओर चल पड़े जो 'राई का बाग' क्षेत्र में स्थित है । 'उम्मेद भवन' विश्व का विशालतम भवन । महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा निर्मित होने से 'उम्मेद भवन' कहलाता है । छीतर झील के पास होने से इसे 'छीतर भवन' भी कहते हैं । इसके निर्माण में बीस वर्ष का समय लगा । यह भवन अपनी भव्य एवं उत्कृष्ट सज्जा से सज्जित है । इसमें ऐश्वर्य, विलास और आमोद-प्रमोद के सभी साधन उपलब्ध हैं ।

महल के प्रवेश द्वार पर नियुक्त द्वारपाल ने बताया कि महल के तीन सौ तैंतालीस कमरों को 'होटल' के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है । एक भाग में शाही परिवार रहता है । होटल में प्रवेश और वहाँ बैठकर चाय या कॉफी का एक कप, एक व्यक्ति (पर्यटक) के लिए कम-से-कम एक हजार रुपया खर्च, कोई आश्चर्यवाली बात नहीं । भूतल पर एक म्यूजियम बनाया गया है, जिसमें वहाँ के राजाओं की, उनके क्रिया कलापों की, युद्ध-कौशल की अनेकानेक जानकारियाँ चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गई हैं । 'भवन' का मॉडल भी प्रदर्शित किया गया है । सबकुछ इतना सुंदर, सजीव भव्य और मनोहर था कि दृष्टि किसी भी चित्र पर चिपक- सी जाती थी, जिसे वहाँ से जबरन हटाना पड़ता था, क्योंकि अभी हमें अपने दूसरे गंतव्य की ओर बढ़ना था । गंतव्य था मंडोर गार्डन ।

यह उद्यान मारवाड़ की पुरानी राजधानी मांडव्यपुर के समीप जोधपुर नरेशों के द्वारा बनाया गया था । 'मांडव्यपुर' का ही अपभ्रंश रूप 'मंडोर' है । यहाँ बनाया गया भगवान कृष्ण का मंदिर कला की उत्कृष्टता का

परिचय

जन्म : १ सितंबर १९४५ बुढ़ाना (उ.प्र.)
परिचय : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन ।
कृतियाँ : 'दिनकर के काव्य में जीवन मूल्य' विषय पर शोध प्रबंध

गद्‍य संबंधी

यात्रा वर्णन : इसमें अपने द्वारा किए गए किसी पर्यटन की अपनी अनुभूतियों, प्रकृति कला का पर्यवेक्षण, स्थान की विशेषताओं आदि का लगावपूर्ण वर्णन किया जाता है ।

प्रस्तुत पाठ में वीरभूमि राजस्थान के जोधपुर, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़ आदि विविध स्थानों, वहाँ की कला-संस्कृति का सजीव वर्णन किया गया है ।



https://en.wikipedia.org/wiki/Seven_Wonders_of_India

प्रमाण है । चट्टानों को काट-काटकर निर्मित सीढ़ीनुमा उद्‌यान दर्शनीय है । 'रानी उद्‌यान' के आगे तीन तलोंवाली एक इमारत, इसकी प्रहरी जान पड़ती है । मार्ग के दोनों ओर जलाशय बने हैं, उद्‌यान में प्रवेश करते ही वहाँ के लोकगीत गायक अपने-अपने वाद्‌यों पर किसी-न-किसी हिंदी या राजस्थानी गीत की धुन छेड़कर, पर्यटकों को प्रसन्न कर उनसे कुछ दक्षिणा की आकांक्षा करते जान पड़ते ।

रानी उद्‌यान की बाईं ओर पहाड़ी की एक चट्‌टान पर वहाँ के वीरों ने देवताओं की विशाल मूर्तियाँ बनवाईं । चट्‌टान को काटकर मूर्तियों को दर्शाया गया है, वह दृश्य अनुपम है । मंडोर गार्डन के दृश्यों से अभिभूत हम मेहरान गढ़ किले की ओर बढ़ने लगे, जो शहर के मध्य में ४०० फीट ऊँची पहाड़ी पर २० फीट से १२० फीट ऊँची दीवार के परकोटे से घिरा है । इसका निर्माण कार्य १४५९ में जोधा जी राव द्‌वारा कराया गया था । उसके परकोटे में जगह-जगह बुर्जियाँ बनाई गई हैं । इस किले में भव्य प्रवेश द्‌वार जयपोल, लोहपोल और फतहपोल बने हैं । जयपोल तक आते-आते ही शहर नीचे रह जाता है और हम काफी ऊपर आ जाते हैं । दोपहर की रेगिस्तानी धूप और शाम की चमकती चाँदनी में शहर का भव्य व मनोरम दृश्य यहाँ से बड़ा ही मनभावन दिखाई देता है । ये प्रवेश द्‌वार जोधाजी राव के विभिन्न वंशजों द्‌वारा विजय के प्रतीक रूप में बनवाए गए हैं । द्‌वारों की दीवारों पर जौहर करने वाली वीरांगनाओं के हस्तचिह्न भी बने हैं । दुर्ग के अंदर कई भव्य और विशाल भवन हैं, जैसे-मोतीमहल, फूलमहल, शीशमहल, दौलतखाना, फतहमहल और रानी सागर आदि । कहीं बैठकखाना तो कहीं दीवानेखास; दीवानेआम हैं तो कहीं कला की प्रदर्शनी हेतु पेंटिंग्स एवं दरियाँ भी प्रदर्शित की गई हैं ।

इसके बाद हम दूसरी पहाड़ी पर स्थित 'जसवंत थंडा' नाम से विख्यात स्मारक देखने चल पड़े । प्रवेश द्‌वार के एक ओर महादेव का मंदिर है तो दूसरी ओर देव सरोवर । यहाँ अनेक पक्षी भाँति-भाँति की चिड़ियाँ चहचहाकर अपनी प्रसन्नता की सकारात्मक ऊर्जा पर्यटकों को प्रदान कर रही थीं । यह स्मारक १९०३ में महाराजा जसवंतसिंह की स्मृति में बनाया गया था । जोधपुर के इन सभी स्थलों की चित्रकला, स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला को देखकर भारतीय कलाकारों का सम्मान तथा उन्हें नमन करने का मन करता है । अब सूर्य भी अपनी किरणों को समेट अस्ताचलगामी हो गया था । फलतः हमें भी अपने विश्राम स्थल की ओर बढ़ना था ।

जोधपुर से जैसलमेर रात्रि की गाड़ी थी । जोधपुर-जैसलमेर एक्सप्रेस से तत्काल का आरक्षण कराया और चल पड़े । अगली प्रातः को हम जैसलमेर स्टेशन पर उतरे । समय व्यर्थ न गँवाते हुए हम शीघ्र ही होटल की वैन में बैठ गए और थोड़ी ही देर में होटल के स्वागत कक्ष में आसीन थे ।

एक कक्ष में हमारा सामान पहुँचाकर दिनभर का कार्यक्रम होटल के मालिक ने ऐसे निर्धारित कर दिया, जैसे किसी पूर्व परिचित अतिथि का । थोड़ी देर के बाद ही नगर-भ्रमण की व्यवस्था हो गई । पहले यहाँ का सबसे बड़ा आश्चर्य देखने गए-पटवा की हवेलियाँ । १८ वीं सदी में शहर के प्रसिद्‌ध व्यापारी सेठ पटवा ने अपने पाँच पुत्रों के लिए इन हवेलियों का निर्माण कराया था । एक के निर्माण में १२

पठनीय

हिंदवी स्वराज्य निर्माता छत्रपति शिवाजी महाराज की जीवनी का अंश पढ़कर प्रेरणा प्राप्त कीजिए ।

संभाषणीय

स्वयं देखे हुए महाराष्ट्र के दर्शनीय स्थलों के अपने बारे में मित्रों को बताइए ।

आसपास

ऐतिहासिक स्थलों के चित्रों का 'कोलाज' तैयार कीजिए ।

वर्ष का समय लगा । शहर के मध्य में खड़ी ये पाँच हवेलियाँ कलात्मक वास्तुशिल्प का अद्‌भुत नमूना है । इनकी छतें बहुत ही खूबसूरत पत्थर के खंभों (स्तभों) पर खड़ी हैं । हवेलियों में पत्थर से बनी जालियों का काम, कई पारदर्शक झरोखे, सोने की कलम से की गई चित्रकारी, सीपी और काँच का कार्य पर्यटकों को आश्चर्यचकित कर देता है । धन्य हैं वे शिल्पकार, जिनके हाथ और मस्तिष्क ने यह करिश्मा किया है ।

✲ आज ही 'सम' का कार्यक्रम भी था ।'सम' एक ग्राम है, जो होटल से ११-१२ कि.मी. दूर रेत की चादर पर बसा है । इस 'सम' ग्राम से डेढ़-दो कि.मी. पहले ही जीप ने हमें उतार दिया, जहाँ कई सारे रेगिस्तानी जहाज (ऊँट) अपनी सवारियों की प्रतीक्षा कर रहे थे । हम भी एक जहाज में सवार हो गए । डर भी लग रहा था, प्रसन्नता भी हो रही थी, उत्सुकता भी । हमारी मंजिल थी- सूर्यास्त केंद्र बिंदु । ऊँट की सवारी का यह पहला अनुभव था । ऊँटों की कतारें ही कतारें, सभी पर नर-नारी और बाल-वृद्‌ध सवार थे, शायद सभी की हृदयगति वैसे ही धड़क रही थी, जैसी हमारी । फिर भी रोमांचकारी और मनोरंजक । कुछ ऊँट अपनी सवारियों को गंतव्य तक पहुँचाकर वापस आ रहे थे । यहाँ रेत के मखमली गद्‌दे जिन पर आपके पग पाँच-सात अंगुल नीचे धँसते जाते हैं । पंक्तिबद्‌ध ऊँटों की कतारें, उनपर रंग-बिरंगी पोशाकों में आसीन पर्यटक शायद अपने गिरने के भय में खोए दम साधे बैठे थे । देखते-ही-देखते हम सब अपने गंतव्य पर पहुँच गए ।✲ क्या अद्‌भुत दृश्य था । बच्चों के खिलौने, दूरबीन, चिप्स, कुरकुरे, खाखड़ा चाट-पकौड़े जैसी अनेक वस्तुएँ लिए विक्रेता चलती-फिरती दुकानों की तरह घूम रहे थे । कुछ राजस्थानी कन्याएँ और स्त्रियाँ लोकगीत सुनाकर पर्यटकों को प्रसन्न करने में निमग्न थीं । अनेक पर्यटक अपने कैमरे के बटन ऑन कर अस्ताचलगामी भास्कर को कैमरे में बंद करने के लिए सन्नद्‌ध थे । देखते-ही-देखते चमकता सूर्य ताम्रवर्णी होकर जल्दी-जल्दी दूर क्षितिज में लय होता जा रहा था, साथ ही पर्यटकों के कैमरों में कैद भी । कुल मिलाकर वह जन सैलाब किसी महाकुंभ की याद ताजा करा रहा था ।

अब सब गाड़ियों की ओर चल पड़े जो लगभग आधे फर्लांग पहले खड़ी थीं, उस मार्ग में चलते हुए उस मखमली फोम के गद्‌दों की अनुभूति हो रही थी । जीप पर सवार हुए और आ गए जहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा रात्रि-भोज का प्रबंध था । मध्य में अग्नि प्रज्वलित की गई थी । तीन ओर दर्शकों के बैठने की व्यवस्था थी तो एक ओर प्रस्तुति देने वाले कलाकारों का मंच बनाया गया था । उसमें राजस्थान के जाने-माने कलाकारों ने वहाँ की लोक संस्कृति को नृत्य-नाटिका और गायन के माध्यम से जो प्रस्तुति दी, वह अद्‌भुत थी । देश-विदेश में प्रस्तुति देने वालों का यह संगम दर्शकों को भाव विभोर किए था । रात्रि-भोज की तैयारी संपन्न हो चुकी थी । भोजन में राजस्थानी व्यंजनों का वैविध्य था । सेल्फ सर्विस-जैसा रुचे, जितना रुचे, लीजिए, खाइए, आनंद उठाइए की तर्ज पर सब भोजन कर रहे थे ।

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

(१) उत्तर लिखिए :

(क) ऊँट की सवारी करने के बाद लेखिका की स्थिति-

(ख) ऊँट की सवारी का अनुभव रोमांचकारी और मनोरंजक था, यह दर्शाने वाला वाक्य

(२) जोड़ियाँ मिलाइए :-

अ	आ
(क) रेगिस्तान का जहाज	सूर्यास्त
(ख) मखमली गद्‌दे	ऊँट
(ग) रंग-बिरंगी पोशाक	होटल
(घ) पर्यटकों की मंजिल	रेत
	पर्यटक

(३) परिच्छेद में प्रयुक्त विलोम शब्द की जोड़ी लिखिए ।

(४) 'मेरा यात्रानुभव' पर आपके विचार लिखिए ।

लेखनीय

'चितौड़गढ़ बोलने लगा तो.....' अपने शब्दों में लिखिए ।

इन सब स्मृतियों के साथ होटल वापस आए, वहाँ से भी सामान उठा पुनः स्टेशन, वही रात्रि यात्रा और पहुँच गए 'जोधपुर' । जैसलमेर से 'चित्तौड़' जाने की यात्रा कर हम २४ दिसंबर के सायंकाल तक 'चित्तौड़गढ़' पहुँच गए ।

चित्तौड़गढ़ का नाम आए या चेतक का, तुरंत एक वीर, साहसी और स्वामिमानी देशभक्त का चित्र मानसपटल पर सजीव हो उठता है । महाराणा प्रताप, जिन्होंने चित्तौड़ की रक्षा में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, लेकिन आत्म-समर्पण नहीं किया । भले ही महलों को त्यागकर जंगल में शरण लेनी पड़ी, बच्चों और परिवार को भूखा रखना पड़ा, विशाल धरती शैया और खुली नीलगगन चादर रहा, पर हार नहीं मानी । ऐसे ही एक और देशभक्त और स्वामिभक्त की याद ताजा हो जाती है -भामाशाह जिसने अपनी सारी पूँजी अपने स्वामी सम्राट राणा प्रताप के चरणों में अति विनम्र भाव से रख दी । इसी शहर से मीरा जैसी कृष्ण भक्त की यादें भी जुड़ी हैं ।

यो यह छोटा सा शहर है लेकिन इसके कण-कण में वीरता, त्याग और भक्तिभाव भरा दिखता है । यहाँ के बाशिंदों की सहजता, सरलता और भाईचारा देखकर सहज ही यहाँ के महापुरुषों के गुणों की अभिव्यक्ति हो जाती है, जो इन्हें विरासत में मिले प्रतीत होते हैं ।

दर्शनीय स्थलों में एक विशाल दुर्ग है जिसके विषय में कहा जाता है कि गढ़ों में गढ़ चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया । इस गढ़ के अंदर मीरा मंदिर, विजय स्तंभ, गौमुखी कुंड, कालिका मंदिर, पद्‌मिनी महल, जौहरकुंड, कुंभा महल, जैन मंदिर और श्री महाराणा म्युजियम जैसे अनेक दर्शनीय स्थल हैं । जैन मंदिर में सभी २४ तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं । सभी प्रतिमाएँ श्वेत संगमरमर के आकर्षक पत्थर से निर्मित हैं, पश्चिम की ओर बना रामपोल ही किले का मुख्य प्रवेश द्‌वार है । जैन मंदिर के सामने ही बड़े से गेट में विजय स्तंभ है, जो महाराणा कुंभा द्‌वारा मालवा के सुल्तान और गुजरात के सुल्तान के संयुक्त आक्रमण की साहसिक विजय के रूप में बनाया गया । यहाँ जौहर कुंड में रानी पद्‌मिनी जैसी वीरांगनाओं के जौहर की कहानी का प्रतिबिंबित है ।

यहाँ के पार्क में भी महाराणा प्रताप की एक आकर्षक प्रतिमा 'चेतक' पर स्थापित है । राजस्थान के इन तीन शहरों की यात्रा ने एक गीत की कुछ पंक्तियाँ याद दिला दी-

'यह देश है वीर जवानों का, अलबेलों का, मस्तानों का'

'इस देश का यारों क्या कहना, यह देश है धरती का गहना ।'

संक्षेप में यदि मैं कहूँ कि यह वीरभूमि है, जहाँ त्याग भी है, बलिदान भी, शत्रु को परास्त करने का जज्बा भी है तो कला की परख भी, देशभक्ति भी है, ईश-भक्ति भी, यहाँ जौहर है तो अपने स्वत्व व सतीत्व की रक्षा का आदर्श भी तो रंच मात्र भी अत्युक्ति न होगी । भारतीय संस्कृति की धनी इस भूमि को हमारा शत-शत नमन ।

—०—

मौलिक सृजन

'ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा एवं संवर्धन करना हमारा कर्तव्य है', इसके आधार पर चर्चा कीजिए और दिए गए मुद्‌दों से सूचना फलक तैयार कीजिए :

- कूड़ा, कचरा प्लास्टिक
- वास्तु की सुरक्षा
- विरासत के प्रति आस्था

विषय से...

राष्ट्र का गौरव बनाए रखने के लिए पूर्व प्रधानमंत्रियों द्‌वारा किए सराहनीय कार्यों की सूची बनाइए ।

नौवीं कक्षा पाठ-२ इतिहास और राजनीति शास्त्र

शब्द संसार

लौहपथगामिनी (स्त्री.सं.) = रेल
जौहर (पुं.फा) = चिता में सामूहिक आत्मदहन
सैलाब (पुं.फा) = पानी की बाढ़

मुहावरे

दृष्टिगोचर होना = दिखाई देना
दस्तक देना = दरवाजा खटखटाना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :–

(क) संजाल :

भारत के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल

(ख)

चित्तौड़गढ़ में स्थित स्थान

(२) दिए गए शब्दों के वर्णों का उपयोग करके चार–पाँच अर्थपूर्ण शब्द तैयार कीजिए :–

लौहपथगामिनी

पाठ से आगे

ऐतिहासिक वस्तु संग्रहालय देखने का आयोजन करते हुए संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

(३) उत्तर लिखिए :–

स्वयं पढ़े हुए यात्रावर्णन :– (च) .... (छ) ....

(४) केवल एक शब्द में उत्तर लिखिए :–

(त) वीर जवानों का वह देश जो धरती का गहना
(थ) महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम

स्वमत – अभिव्यक्ति :–

मैं पाठशाला जा रहा था । रास्ते में एक युवक अपनी मोटरसाइकिल आड़ी–टेढ़ी चलाते, अपनी कलाबाजियाँ दिखाते हुए तथा जोर–जोर से हॉर्न बजाकर लोगों को परेशान कर रहा था। उसे देखकर मेरे मन में विचार आए ....

निबंध लेखन :–

'हमारी सैर' विषय पर निबंध लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) संधि पढ़ो और समझो : –

संधि

१. अमरनाथ ने शास्त्रीय **गायन** सीखना शुरू किया ।
२. कितने **विद्‌यार्थी** हैं ?
३. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा **प्रत्येक** का कर्तव्य है ।

गै + अन = ऐ + अ
विद्‌या + अर्थी = आ + अ
प्रति + एक = इ+ए

स्वर संधि

१. हिंदीं की **उन्नति** के लिए ही मेरी कामना है
२. आपके **संबंध** मद्रास के व्याख्यान के अनुसार व्यापक हों।
३. हर कार्य **सद्‌भावना** से करना चाहिए ।

उत् + नति = त् + न
सम् + बंध = म् + बं
सत् + भावना = त् + भा

व्यंजन संधि

१. चौकीदार **निष्कपट** भाव से सेवा करता है।
२. जीवन के अंतिम क्षण में मुझे **निर्भय** कर दे ।
३. मित्र को चोट पहुँचाकर उसे बहुत **मनस्ताप** हुआ ।

निः + कपट = विसर्ग(ः) का ष्
निः + भय = विसर्ग(ः) का र्
मन ः + ताप = विसर्ग (ः) का स्

विसर्ग संधि

संधि के भेद

संधि में दो ध्वनियाँ निकट आने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नया रूप धारण कर लेती हैं ।

उपरोक्त उदाहरणों में (१) में गै + अन, विद्‌या + अर्थी , प्रति+एक शब्दों में **दो स्वरों** के मेल से परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **स्वर संधि** हुई । उदाहरण (२) में उत्+नति, सम्+बंध, सत्+भावना शब्दों में व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **व्यंजन संधि** हुई । उदाहरण (३) में विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन हुआ है । अतः यहाँ **विसर्ग संधि** हुई ।

(२) निम्न संधि का विग्रह कर उसके प्रकार बताओ

१. थोड़ी ही देर में हॉटेल के स्वागत में आसीन थे ।
२. हमारी मंजिल थी सूर्यास्त केंद्र बिंदु ।
३. सब कुछ इतना सुंदर सजीव और मनोहर था ।
४. रेखांकित प्रत्येक लोकोक्ति को सोदाहरण लिखो ।
५. उपर्युक्त वाङ्‌मय दुष्कर एवं अत्यधिक दुर्लभ है।
६. भारतीय कलाकारों का सम्मान तथा उन्हें नमन करने का मन करता है ।

क्र.	शब्द	विग्रह	संधि	प्रकार
१.	रेखांकित	रेख + अंकित	अ + अ	स्वर संधि
२.	....	....	....	....
३.	....	....	....	....
४.	....	....	....	....
५.	....	....	....	....
६.				

रचना बोध

....
....
....

९. वरदान माँगूँगा नहीं

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

मौलिक सृजन

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए तथा उसे उचित शीर्षक दीजिए :–

कृति के आवश्यक सोपान :

वृक्ष → अंतरिक्ष → पुस्तक → कैमरा

यह हार एक विराम है
जीवन महा-संग्राम है
तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए
अपने खंडहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की संपत्ति चाहूँगा नहीं
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

लघुता न अब मेरी छुओ
तुम ही महान बने रहो
अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

चाहे हृदय को ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किंतु भागूँगा नहीं ।
वरदान माँगूँगा नहीं ।।

—०—

परिचय

जन्म : ५ अगस्त १९१५ उन्नाव (उ.प्र)

मृत्यु : २६ नवंबर २००२

परिचय : जनकवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी, प्रगतिवादी कविता के स्तंभ थे । उनकी कविताओं में जनकल्याण, प्रेम, इन्सानी जुड़ाव, रचनात्मक विद्रोह के स्वर मुख्य रूप से मुखरित हुए हैं । **प्रमुख कृतियाँ :** हिल्लोल, जीवन के गान, युग का मेल, मिट्टी की बारात, विश्वास बढ़ता ही गया, वाणी की व्यथा आदि (काव्य संग्रह) । महादेवी की काव्य साधना, गीतिकाव्य उद्‌भव और विकास (गद्‌य रचनाएँ)

पद्‌य संबंधी

गीत : स्वर, पद, ताल से युक्त गान ही, गीत होता है । इसमें एक मुखड़ा तथा कुछ अंतरे होते हैं । प्रत्येक अंतर के बाद मुखड़े को दोहराया जाता है । गीत गेय होता है ।

प्रस्तुत गीत में कवि ने स्वाभिमान से जीने सुख-दुख में समभाव रखने एवं कर्तव्य पथ पर डटे रहने के लिए प्रेरित किया है ।

शब्द संसार

महा-संग्राम (पु.सं.) = बड़ा युद्ध

खंडहर (पु.सं.) = भग्नावशेष

ताप (पु.सं.) = गर्मी

अभिशाप (पु.सं.) = श्राप

मुहावरा

तिल-तिल मिटना =धीरे-धीरे समाप्त होना



https://youtu.be/As2UQ3XCc5I

संभाषणीय

'गणतंत्र-दिवस' के अवसर पर जनतांत्रिक शासन प्रणाली पर अपना मंतव्य प्रकट कीजिए ।

आसपास

'जीत के लिए संघर्ष जरुरी है' विषय पर प्रतियोगिता में सहभागी टीम के साथ चर्चा कीजिए ।

श्रवणीय

किसी अवकाश प्राप्त सैनिक से उनके अनुभव सुनिए और उनसे प्रेरणा लीजिए ।

लेखनीय

'जीवन में परिश्रम का महत्त्व पर' अपने विचार लिखिए ।

पाठ से आगे

कविवर्य रवींद्रनाथ टैगोर की कविता पढ़िए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) कवि इन परिस्थितियों में वरदान नहीं माँगना चाहते -

१.

२.

३.

४.

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :

१. [ ] — सुखद स्मृति इनके लिए है — [ ]

२. कवि भयभीत नहीं है → [ ] [ ]

(२) पद्य में पुनरावर्तन हुई पंक्ति लिखिए ।

(३) रेखांकित वाक्यांशों के स्थान पर उचित मुहावरा लिखिए :-

रुग्ण शय्या पर पड़ी माता जी को देखकर मोहन का धीरज धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था । (तिल-तिल मिटना, जिस्म टूटना)

भाषा बिंदु

निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए :-

शुद्ध-वाक्य

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
१. लता कितनी मधुर गाती है ।	१. ....
२. तितली के पास सुंदर पंख होते हैं ।	२. ....
३. यह भोजन दस आदमी के लिए है ।	३. ....
४. कश्मीर में कई दर्शनीय स्थल देखने योग्य है ।	४. ....
५. उसने प्राण की बाजी लगा दी ।	५. ....
६. तुमने मीट्टी से का प्यार ।	६. ....
७. यह है न पसीने का धारा ।	७. ....
८. आओ सिंहासन में बैठो ।	८. ....
९. तुम हँसो कि फूले-फले देश ।	९. ....
१०. यह गंगा का है नवल धार ।	१०. ....

रचना बोध

....

....

....

१०. रात का चौकीदार

पूरक पठन

– सुरेश कुशवाहा 'तन्मय'

दिसंबर-जनवरी की हाड़ कँपाती ठंड हो, झमाझम बरसती वर्षा या उमस भरी गरमी की रातें । हर मौसम में रात बारह बजे के बाद चौकीदार नाम का यह निरीह प्राणी सड़क पर लाठी ठोकते, सीटी बजाते; हमें सचेत करते हुए कॉलोनी में रातभर चक्कर लगाते रोज सुनाई पड़ता है ।

हर महीने की तरह पहली तारीख को हल्के से गेट बजाकर खड़ा हो जाता है, 'साब जी, पैसे ?'

''कितने पैसे ?'' वह उससे पूछता है ।

'साब जी, एक रुपया रोज के हिसाब से महीने के तीस रुपए । आपको तो मालूम ही है ।'

'अच्छा एक बात बताओ बहादुर, महीने में तुम्हें कितने घरों से पैसे मिल जाते हैं ?'

'साब जी यह पक्का नहीं है, कभी साठ घर से कभी पचास से । तीज-त्योहार पर बाकी घरों से भी कभी कुछ मिल जाता है । इतने में ठीकठाक गुजारा हो जाता है हमारा ।'

'पर कॉलोनी में तो सौ-सवा सौ से भी अधिक घर हैं, फिर इतने कम क्यों ... ?

तो फिर तुम उनके घर के सामने सीटी बजाकर चौकसी रखते हो कि नहीं ?' उसने पूछा ।

'हाँ साब जी, चौकसी रखना तो मेरी जिम्मेदारी है । मैं केवल पैसे के लिए ही काम नहीं करता । फिर उनकी चौकसी रखना तो और जरूरी हो जाता है । भगवान नहीं करे, यदि उनके घर चोरी-वोरी की घटना हो जाए तो पुलिस तो फिर भी हमसे पूछेगी न । और वे भी हम पर झूठा आरोप लगा सकते हैं कि पैसे नहीं देते इसलिए चौकीदार ने ही चोरी करवा दी । ऐसा पहले मेरे साथ हो चुका है साब जी ।'

'अच्छा ये बताओ, रात में अकेले घूमते तुम्हें डर नहीं लगता ?'

'डर क्यों नहीं लगता साब जी, दुनिया में जितने जिंदे जीव हैं, सबको किसी न किसी से डर लगता है । बड़े आदमी को डर लगता है तो फिर हम तो बहुत छोटे आदमी हैं । कई बार नशे-पत्तेवाले और गुंडे-बदमाशों से मारपीट भी हो जाती है । शरीफ दिखने वाले लोगों से झिड़कियाँ, दुत्कार और धौंस मिलना तो रोज की बात है ।'

'अच्छा बहादुर, सोते कब हो तुम ?' वह फिर प्रश्न करता है ।

परिचय

जन्म : जबलपुर (म.प्र.)
परिचय : तन्मय जी कवि, लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं । उनकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : अक्षरदीप जलाएँ (बालकविता संग्रह) छोटू का दर्द (कहानी) शेष कुशल है (काव्य संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

लघुकथा : लघुकथा किसी बहुत बड़े परिदृश्य में से एक विशेष क्षण/प्रसंग को प्रस्तुत करने का चातुर्य है ।

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने 'चौकीदार' के माध्यम से जहाँ इस पेशे से जुड़े लोगों की ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा को दिखाया है वहीं कुछ लोगों की मुफ्तखोरी को दर्शाते हुए जन-जागृति करने का प्रयास किया है ।

'साब जी, रोज सुबह आठ-नौ बजे एक बार कॉलोनी में चक्कर लगाकर तसल्ली कर लेता हूँ कि सबकुछ ठीक है न, फिर कल की नींद पूरी करने और आज रात में फिर जागने के लिए आराम से अपनी नींद पूरी करता हूँ । अच्छा साब जी, अब आप पैसे दे दें तो मैं अगले घर जाऊँ ।'

'अरे भाई, अभी तुमने ही कहा कि जो पैसे नहीं देते उनका ध्यान तुम्हें ज्यादा रखना पड़ता है । तो अब से मेरे घर की चौकसी भी तुम्हें बिना पैसों के करनी होगी, समझे ?'

'जैसी आपकी इच्छा साब जी', और चौकीदार अगले घर की ओर बढ़ गया ।

मैं सोचता हूँ कि बिना किसी ऊपर दबाव अथवा नियंत्रण के एकाकी रूप से इतनी जिम्मेदारी से अपना कर्तव्य निभाने वाला, हमारी सुरक्षा की चिंता करने वाला निष्कपट भाव से करने वाला, यह रात का रखवाला स्वयं कितना असुरक्षित और अकेला है ।

मैं रातभर ऊहापोह में रहा। ठीक से नींद भी नहीं आई । सबेरे उठने तक मैं निर्णय ले चुका था। मैंने चौकीदार को बुलाया। उससे कहा, मेरे घर की चौकसी करने का तुम्हें पूरा मेहनताना मिलेगा। चौकीदार ने सलाम किया और चला गया। मैंने चैन की साँस ली और उसके प्रति श्रद्धा बढ़ गई।

—०—

श्रवणीय

हिंदी तथा मराठी भाषा में लिखी हुई किसी एक लघुकथा का आकलन करते हुए सुनिए और सुनाइए ।

पठनीय

'परिपाठ' में सप्ताह भर के समाचारपत्रों के मुख्य मुद्‌दों का चयन करके वाचन कीजिए ।

संभाषणीय

'ट्रैफिक पुलिस' से बातचीत करके उनकी दिनचर्या संबंधी जानकारी लीजिए ।

शब्द संसार

उमस (पुं.सं.) = उष्णता
धौंस (स्त्री.सं.) = धमकी, रोब
ऊहापोह (पुं.सं.) = उधेड़बुन

मुहावरे

तसल्ली करना = समाधान करना
चैन की साँस लेना = आश्वस्त होना

लेखनीय

लेखनीय- अपने परिसर के चौकीदार द्‌वारा अच्छा कार्य करने हेतु अभिनंदन करने वाला पत्र लिखिए ।

मौलिक सृजन

'पुलिस समाज के रक्षक' इस बारे में अपना मत लिखिए ।

आसपास

किसी परिचित सुरक्षा रक्षक से वार्तालाप कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

(क) संजाल :

चौकीदार से मारपीट करने वाले

(ख) कारण :

१. चौकीदार द्‌वारा पैसे न देने वाले घरों की भी रखवाली करने का कारण–

२. चौकीदार की असुरक्षा का कारण–

(२) नीचे दिए गए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए । इसी प्रकार के अन्य पाँच शब्द बनाकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(च) रातों में सड़क पर लाठी ठोंकते, सीटी बजाकर पहरा देने वाला–

(छ) अपनी जिम्मेदारियाँ तथा कर्तव्य निभाने वाला–

(३) घटना के अनुसार वाक्यों का उचित क्रम लगाकर लिखिए :

(त) ऐसा पहले मेरे साथ हो चुका है साब जी ।

(थ) जैसी आप की इच्छा साब जी ।

(द) रात में अकेले घूमते तुम्हें डर नहीं लगता ।

(४) 'लूट-डकैती करने वालों ने चौकीदार से मारपीट की' यह समाचार पढ़कर मन में आए विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में से सर्वनाम एवं क्रिया छाँटकर भेदों सहित लिखिए तथा अन्य पाठ्‌यपुस्तक से खोजकर नए वाक्य बनाइए :–

सर्वनाम

चाहे कुछ भी हो जाए, मैं निज व्रत नहीं छोड़ता । मैं सदैव-अपना कर्म करता हूँ और अन्यों से करवाता भी हूँ ।

क्रिया

(२) निम्न में से संज्ञा तथा विशेषण पहचानकर भेदों सहित लिखिए तथा अन्य पाठ्‌यपुस्तक से खोजकर नए वाक्य बनाइए :–

संज्ञा

मोहन ने फलों की टोकरी में कुछ रसीले आम, थोड़े से बेर तथा कुछ अंगूर के गुच्छे साफ पानी से धोकर रखवा दिए ।

विशेषण

रचना बोध

....

....

....

११. निर्माणों के पावन युग में

– अटल बिहारी वाजपेयी

श्रवणीय

'वसुधैव कुटुंबकम्' विषय पर समूह में चर्चा कीजिए और प्रभावशाली मुद्दों को सुनाइए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● इस सुवचन का अर्थ बताने के लिए कहें । ● आज के युग में विश्व शांति की अनिवार्यता के बारे में पूछें । ● पूरे विश्व में एकता लाने के लिए आप क्या कर सकते हैं, बताने के लिए प्रेरित करें ।

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

माना अगम अगाध सिंधु है संघर्षों का पार नहीं है,
किंतु डूबना मँझधारों में साहस को स्वीकार नहीं है,
जटिल समस्या सुलझाने को नूतन अनुसंधान न भूलें !!

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

शील, विनय, आदर्श, श्रेष्ठता तार बिना झंकार नहीं है,
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी यदि नैतिक आधार नहीं है,
कीर्ति कौमुदी की गरिमा में संस्कृति का सम्मान न भूलें !!

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

आविष्कारों की कृतियों में यदि मानव का प्यार नहीं है,
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है प्राणी का उपकार नहीं है,
भौतिकता के उत्थानों में जीवन का उत्थान न भूलें !!

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

परिचय

जन्म : २५ दिसंबर १९२४ (म.प्र.)

परिचय : अटल बिहारी वाजपेयी जी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री होने के साथ-साथ कवि, पत्रकार व प्रखर वक्ता भी हैं । आपकी रचनाएँ जीवन की जिजीविषा, राष्ट्रप्रेम एवं ओज से परिपूर्ण हैं । **प्रमुख कृतियाँ :** मेरी इक्यावन कविताएँ (कविता संग्रह) कुछ लेखः कुछ भाषण, बिंदु-बिंदु विचार, अमर बलिदान (गद्य रचनाएँ)

पद्य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली लोकोत्तर आनंद देने वाली रचना कविता होती है। इसमें दृश्य की अनुभूतियों को साकार किया जाता है।

इस कविता में वाजपेयी जी ने नूतन अनुसंधान, संस्कृति के सम्मान, जगत का कल्याण-उत्थान करने के साथ-ही-साथ चरित्र निर्माण करने को विशेष महत्त्व प्रदान किया है।

कल्पना पल्लवन

"भौतिकता के उत्थानों में जीवन का उत्थान न भूलें ।"

इस पंक्ति को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

वसुधा (स्त्री.सं.) = पृथ्वी
अगम (वि.) = अपार
अगाध (वि.) = अथाह
मँझधार (सं.) = लहरों के बीचोंबीच
कौमुदी (स्त्री.सं.) = चाँदनी
भौतिकता (भा.सं.) = सांसारिकता
उत्थान (पुं.सं.) = उन्नति

संभाषणीय

स्वातंत्रोत्तर भारत के इतिहास के बारें में चर्चा कीजिए ।

- उन्नीस सौ साठ से अस्सी का कालखंड
- इक्यासी से दो हजार का कालखंड
- दो हजार एक से अब तक का कालखंड

आसपास

अपने आसपास/परिवेश में घटित होने वाली समाज विघातक घटनाओं की रोकथाम से संबंधित अपना मत प्रस्तुत कीजिए ।

पठनीय

'पर्यावरण और मानव' पर आधारित पथनाटय (नुक्कड़ नाट्य) प्रस्तुत कीजिए ।

लेखनीय

'देश हित के लिए आप क्या करते हैं', लिखिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) निर्माणों के पावन युग में हम इसे न भूलें

१. .... २. ....
३. .... ४. ....

(२) कृति पूर्ण कीजिए :-

(ख) होना जरुरी

- आविष्कारों में → ....
- विज्ञान में → ....

पाठ से आगे

स्वामी विवेकानंद जी की जीवनी का अंश पढ़कर टिप्पणी लिखिए ।

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़िए तथा उचित शब्द रिक्त स्थानों में लिखिए :-

१. आर्यभट्ट ने शून्य की .... की । (खोज, अनुसंधान, आविष्कार)
२. प्रगति के लिए आपसी .... आवश्यक है । (ईर्ष्या, भागदौड़, स्पर्धा)
३. कार्यक्रम को शुरू करने के लिए अध्यक्ष महोदय की .... चाहिए । (अनुमति, आज्ञा, आदेश)
४. काले बादलों को देखकर बारिश की .... है । (आशंका, संभावना, अवसर)
५. सड़क-योजना में सैकड़ों मजदूरों को रोजगार मिला ।(निर्माण, निर्मिति, सृजन)

रचना बोध

....
....
....

१. कह कविराय

–गिरिधर

संभाषणीय

विपत्ति में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है, स्पष्ट कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से उनके मित्रों के नाम पूछें । ● विद्यार्थी किसे अपना सच्चा मित्र मानते हैं, बताने के लिए कहें । ● किन–किन कार्यों में मित्र ने उनकी सहायता की है, पूछें । ● विद्यार्थी अपने–अपने मित्रों के सच्चे मित्र बनने के लिए क्या करेंगे, बताने के लिए प्रेरित करें ।

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय ।
जैसे कागा–कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ।।
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊ के एक रंग, काग सब भये अपावन ।।
कह गिरिधर कविराय, सुनौ हो ठाकुर मन के ।
बिन गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के ।।

देखा सब संसार में, मतलब का व्यवहार ।
जब लगि पैसा गाँठ में, तब लगि ताको यार ।।
तब लगि ताको यार, यार सँग ही सँग डोलै ।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहि, बोलै ।।
कह गिरिधर कविराय, जगत का ये ही लेखा ।
करत बेगरजी प्रीति, मित्र कोई बिरला देखा ।।

झूठा मीठे वचन कहि, ऋण उधार ले जाय ।
लेत परम सुख ऊपजै, लैके दियो न जाय ।।
लैके दियो न जाय, ऊँच अरु नीच बतावै ।
ऋण उधार की रीति, माँगते मारन धावै ।।
कह गिरिघर कविराय, जानि रहै मन में रूठा ।
बहुत दिना हो जाय, कहै तेरो कागज झूठा ।।



परिचय

जन्म : एक अनुमान के अनुसार इनका जन्म १७१३ ई. में हुआ था ।

परिचय : गिरिधर की कुंडलियाँ बहुत प्रसिद्‌ध हैं । इन्होंने नीति, वैराग्य और अध्यात्म को ही अपनी रचनाओं का विषय बनाया है । जीवन के व्यावहारिक पक्ष का इनकी रचनाओं में प्रभावशाली वर्णन मिलता है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'गिरिधर कविराय ग्रंथावली' में ५०० से अधिक दोहे और कुंडलियाँ संकलित हैं ।

पद्‌य संबंधी

कुंडली : यह दोहा और रोला के मेल से बनती है । कुंडली में दोहा के अंतिम पद को रोला का पहला चरण बनाना होता है । कुंडलियों की एक विशेषता यह है कि यह जिस शब्द से शुरू होती है उसी से इसका समापन भी होता है ।

यहाँ कुंडलियों के माध्यम से विविध सामाजिक गुणों को अपनाने की बात की गई है ।

बिना विचारे जो करै, सो पाछै पछताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ।।
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै ।
खान-पान-सनमान, राग-रंग मनहि न भावै ।।
कह गिरिधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना विचारे ।।

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देइ ।।
ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै ।।
कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती ।
आगे की सुधि लेइ, समझु बीती सो बीती ।।

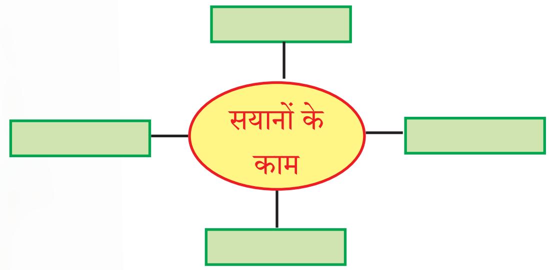
* पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ों दाम ।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ।।
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै ।
परस्वास्थ के काज, शीस आगे कर दीजै ।।
कह गिरिधर कविराय, बड़ेन की याही बानी ।
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी ।।

—०—



सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) संजाल :



(२) उत्तर लिखिए :

(क) अपना शीस इसके लिए आगे करना चाहिए तो इसकी प्राप्ति होगी

(ख) बड़ों के द्‌वारा दी गई सीख-

(३) 'हाथ' शब्द पर प्रयुक्त कोई एक मुहावरा लिखकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(४) 'खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं' इसपर अपना मत स्पष्ट कीजिए ।

श्रवणीय

संत कबीर तथा कवि बिहारी के नीतिपरक दोहे सुनिए और सुनाइए ।

पठनीय

मीरा का कोई पद पढ़िए ।

शब्द संसार

सहस (सं.पुं.) = सहस्र	**विरला** (वि.) = निराला
दोऊ (वि.) = दोनों	**लैके** (क्रिया.) = लेकर
ताको (सर्व.) = उसको	**अरु** (अ.) = और
लेखा (पुं.सं) = व्यवहार	**टारना** (क्रिया.) = टालना
बेगरजी (वि.फा.) = निस्वार्थ	**परतीती** (स्त्री.सं.) = प्रतीति, विश्वास

आसपास

भक्तिकालीन, रीतिकालीन कवियों के नाम और उनकी रचनाओं की सूची तैयार कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'गुन के गाहक सहस नर ' इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

लेखनीय

सामाजिक मूल्यों पर आधारित पद, दोहे, सुवचन आदि का सजावटी सुवाच्य लेखन कीजिए ।

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) कौआ और कोकिल में समानता तथा अंतर :

	समानता	अंतर	कवि की दृष्टि से
कौआ			
कोकिल			

(ख) कवि की दृष्टि से मित्र की परिभाषा-

(१)
(२)
(३)
(४)

पाठ से आगे

'बिना विचारे जो करै, सो पाछै पछताय', कवि के इस कथन की हमारे जीवन में सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(ग) आकृति

बिना सोचे काम करने के परिणाम

(२) कविता में प्रयुक्त तत्सम, तद्‌भव, देशज शब्दों का चयन करके उनका वर्गीकरण कीजिए तथा पाँच शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(३) कवि के मतानुसार मनुष्य की विचारधारा निम्न मुद्दों के आधार पर स्पष्ट कीजिए :

(च) ऋण लेते समय ....

(छ) ऋण लौटाते समय ....

रचना बोध

....

....

....

२. जंगल

– चित्रा मुद्‌गल

पूरक पठन

संभाषणीय

'जंगल में रहने वाले पक्षियों के मनोगत' इस विषय पर कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- पिंजड़े में कौन से पक्षी रखे जाते है; पूछें । ● पक्षियों की बोलियों की जानकारी लें ।
- पक्षी एक-दूसरे से और विद्‌यार्थी से पक्षियों के संवादों का नाट्‌यीकरण करवाएँ ।

रीडर अणिमा जोशी के मोबाइल पर फोन था मांडवी दीदी की बहू तविषा का । कह रही थी, ''आंटी, बहुत जरूरी काम है । अम्मा से बात करवा दें ।'' अणिमा दीदी ने असमर्थता जताई-मांडवी दीदी कक्षा ले रही हैं । बाहर आते ही वह संदेश उन्हें दे देंगी । वैसे हुआ क्या है ? घर में सब कुशल-मंगल तो है ?

परेशानी का कारण बताने की बजाय तविषा ने उनसे पुनः आग्रह किया, ''आंटी, अम्मा से बात हो जाए तो ...''अणिमा जोशी को स्वयं उसे टालना बुरा लगा । ''उचित नहीं लगेगा, तविषा । अनुशासन भंग होगा। मुझे बताओ, तविषा ! मुझे बताने में झिझक कैसी !''

''नहीं आंटी, ऐसी बात नहीं है ।'' तविषा का स्वर भर्रा-सा आया । तविषा ने बताया, ''घर में जो जुड़वाँ खरगोश के बच्चे पाल रखे हैं उन्होंने, सोनू-मोनू, उनमें से सोनू नहीं रहा ।''

साढ़े दस के करीब कामवाली कमला घर में झाड़ू-पोंछा करने आई तो बैठक बुहारते हुए उसकी नजर सोनू पर पड़ी । जगाने के लिए उसने सोनू को हिलाया, उसके जगाने की सोनू पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई । वह बुदबुदाई-'कैसे घोड़े बेचकर सो रहा है शैतान !' उसकी टाँग पकड़कर उसे सोफे के नीचे से बाहर घसीट लिया । मगर सोनू की कोई हरकत नहीं हुई । कमला ने चीखकर तविषा को पुकारा, ''छोटी बीजीऽऽऽ ।'' तविषा अचेत सोनू को देख घबड़ा गई । गोदी में उठाया तो उसकी रेशम-सी देह हाथों में टूटी कोंपल-सी झूल गई । उसकी समझ में नहीं आ रहा था, वह क्या करे ? आसपास जानवरों का कोई डॉक्टर है नहीं । अपनी समझ से उसने बच्चों के डॉक्टर को घर बुलाकर सोनू को दिखाया । डॉक्टर ने देखते ही कह दिया, ''प्राण नहीं है अब सोनू में । ''आंटी, आप अम्मा को जल्दी से जल्दी घर भेज दें । घंटे-भर में प्ले स्कूल से पीयूष घर आ जाएगा ।''

मांडवी दी घर पहुँची । सोफों के बीच के खाली पड़े फर्श पर सोनू निश्चेष्ट पड़ा हुआ था । पीयूष उसी के निकट गुमसुम बैठा हुआ था । मोनू, सोनू की परिक्रमा-सा करता कभी दाएँ ठिठक उसे गौर से ताकने लगता,

परिचय

जन्म : १० सितंबर १९४३ चेन्नई (तामिलनाडु)

परिचय : चित्रा मुद्‌गल जी के लेखन में वर्तमान समाज में रीतती हुई मानवीय संवेदनाओं, नए जमाने की गतिशीलता और उसमें जिंदगी की मजबूरियों का चित्रण बड़ी गहराई से हुआ है ।

प्रमुख कृतियाँ : एक जमीन अपनी, आवां आदि (उपन्यास), भूख, लाक्षागृह लपटें, मामला आगे बढ़ेगा अभी, आदि-अनादि (कहानी संग्रह), जीवक मणिमेख आदि (बाल उपन्यास), दूर के ढोल, सूझ-बूझ आदि (बालकथा संग्रह)

गद्‌य संबंधी

संवादात्मक कहानी : किसी विशेष घटना की रोचक ढंग से संवाद रूप में प्रस्तुति संवादात्मक कहानी कहलाती है ।

प्रस्तुत कहानी में मुद्‌गल जी ने खरगोश के माध्यम से बाल मानस की अनुभूतियों, प्राणियों के साथ व्यवहार, उनके संरक्षण एवं प्राणीमात्र के प्रति दयाभाव को दर्शाया है।

कभी बाएँ से । पीयूष की स्तब्धता तोड़ना उन्हें जरूरी लगा । नन्ही-सी जिंदगी में वह मौत से पहली बार मिल रहा है । मौत उसकी समझ में नहीं आ रही है । ऐसा कभी हुआ नहीं कि उन्होंने घर की घंटी बजाई हो और तीनों लपककर दरवाजा खोलने न दौड़े हों । खोल तो पीयूष ही पाता था, मगर मुँह दरवाजे की ओर उठाए वे दोनों भी पीयूष के नन्हे हाथों में अपने अगले पंजे लगा देते । पीयूष का सिर उन्होंने अपनी छाती से लगा लिया । पीयूष रोने लगा है-''दादी, दादी ! ये सोनू को क्या हो गया ? दादी, सोनू बीमार है तो डॉक्टर को बुलाकर दिखाओ न... दादी ! अम्मी अच्छी नहीं हैं न ! बोलती हैं- सोनू मर गया...''

वह रूँधे स्वर को साधती हुई उसे समझाने लगती हैं, ''रोते नहीं, पीयूष । सोनू को दुख होगा । सोनू तुम्हें हमेशा हँसते देखना चाहता था न !

मोनू उनकी गोदी में मुँह सटाए उनके चेहरे को देख रहा है, बिटर-बिटर दृष्टि, आँसुओं से भरी हुई । जानवर भी रोते हैं ! पहली बार उन्होंने किसी जानवर को रोते हुए देखा है । मोनू को हथेली में हल्के हाथों से दबोचकर उन्होंने उसे सीने से सटा लिया । हिचकियाँ भर रहा था मोनू ? काली बदली उनके चेहरों पर उतर आई है ।

अणिमा जोशी के मोबाइल से उन्होंने बेटे शैलेश को दफ्तर में खबर कर देना उचित समझा था । न जाने परेशान तविषा ने शैलेश को फोन किया हो, न किया हो । शैलेश ने कहा था, ''ऐसा करें, अम्मा, घर पहुँच ही रही हैं आप । नीचे सोसाइटी में चौकीदार को कहकर सोनू को उठाकर अपार्टमेंट्स से लगे नाले में फिंकवा दें ।

उन्होंने शैलेश से स्पष्ट कह दिया था-छुट्टी लेकर वह फौरन घर पहुँचे । उनके घर पहुँचने तक पीयूष घर पहुँच चुका होगा । नाले में वह सोनू को हरगिज नहीं फिंकवा सकतीं । पीयूष सोनू को बहुत प्यार करता है । स्थिति से भागने की बजाय उसका सामना करना ही बेहतर है । सोनू को घर में न पाकर उसके अबोध मन के जिन सवालों से पूरे घर को टकराना होगा-उसे संभालना कठिन होगा । जमादार को घर पहुँचते ही वे खबर कर देंगी । उनकी इच्छा है, घर के बच्चे की तरह सोनू का अंतिम संस्कार किया जाए । ''पहुँचता हूँ ।'' शैलेश ने कहा था ।

उन्होंने पीयूष को समझा दिया था- ''तुम्हारे सोनू को जमीन में गाड़ने ले जा रहे हैं, तुम्हारे पापा । नन्हे बच्चों की मौत होती है तो उन्हें जमीन में गाड़ दिया जाता है ।

''दादी, उसके दिल में दुख क्यों था ?''

''उसे अपने माँ-बाप से अलग जो कर दिया गया ।''

''किसने किया, दादी ?''

संभाषणीय

'जंगल के राजा का मनोगत' इस विषय पर कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए ।

मौलिक सृजन

'जंगल ऑक्सीजन की आपूर्ति करने वाले स्रोत हैं' इस विषय पर अपने शब्दों में लिखिए ।

''उस दुकानदार ने, जिससे हम उसे खरीदकर लाए थे । दुकानदार पशु-पक्षियों को बेचता है न ! तुम्हीं बताओ, माँ-बाप से दूर होकर बच्चे दुखी होते हैं कि नहीं ?''

''होते हैं, दादी । मम्मी, चार दिन के लिए मुझे छोड़कर नानू के पास मुंबई गई थीं तो मुझे भी बहुत दुख हुआ था ।''

''दादी, दादी ! दुख से मर जाते हैं ?''

''कभी-कभी पियूष ।''

''सोनू भी मर सकता है ?''

''मर सकता है ।''

... कैसे हठ पकड़ लिया था पीयूष ने । घर में वह भी खरगोश पालेगा, तोते का पिंजरा लाएगा । तविषा और शैलेश के संग महरौली शैलेश के मित्र के बच्चे के जन्मदिन पर गया था पीयूष । उन लोगों ने मँझोले नीम के पेड़ की डाल पर तोते का पिंजरा लटका रखा था । जालीदार बड़े से बांकड़े में उन्होंने खरगोश पाल रखे थे । पियूष को खरगोश और तोता चाहिए । तविषा और शैलेश ने बहुत समझाया-फ्लैट में पशु-पक्षी पालना कठिन है । कहाँ रखेंगे उन्हें ?''

''बालकनी में ।'' पीयूष ने जगह ढूँढ़ ली । तविषा ने उसकी बात काट उसे बहलाना चाहा ''पूरे दिन खरगोश बांकड़े में नहीं बंद रह सकते । उन्हें कुछ समय के लिए खुला छोड़ना होगा । छोटे-से घर में वे भागा-दौड़ी करेंगे । सुसु-छिछि करेंगे । उनकी टट्टी-पेशाब कौन साफ करेगा ?''

''दादी करेंगी ।''

''दादी पढ़ाने कॉलेज जाएँगी तो उनके पीछे कौन करेगा ?''

''स्कूल से घर आकर मैं कर लूँगा ।'' सारा घर हँस पड़ा ।

सब लोग तब और चकित रह गए, जब पीयूष ने दादी को पटाने की कोशिश की कि दादी उसके जन्मदिन पर कोई-न-कोई उपहार देती ही हैं । क्यों न इस बार वे उसे खरगोश और तोता लाकर दे दें । निरुत्तर दादी उसे लेकर लाजपत नगर चिड़ियों की दुकान पर गईं । पीयूष ने खरगोश का जोड़ा पसंद किया । तत्काल उनका नामकरण भी कर दिया-सोनू-मोनू ! सोनू-मोनू के साथ उनका घर भी खरीदा गया-जालीदार बड़ा-सा बाकड़ा । उस साँझ सोसाइटी के उसके सारे हमजोली बड़ी देर तक बालकनी में डटे खरगोश को देखते-सराहते रहे और पीयूष के भाग्य से ईर्ष्या करते रहे ।

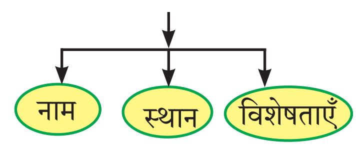
दूसरे रोज भी मोनू सामान्य नहीं हो पाया । पीयू को भी दादी ने प्ले स्कूल भेजना मुनासिब न समझा । पियू उसका घर का नाम था । पीयूष घर में रहेगा तो दोनों एक-दूसरे को देख ढाढ़स महसूस करेंगे । उन्होंने स्वयं भी कॉलेज जाना स्थगित कर दिया । सुबह मोनू ने दूध के कटोरे को छुआ तक

पठनीय

जंगलों से प्राप्त होने वाले संसाधनों की जानकारी का वाचन कीजिए ।

लेखनीय

महाराष्ट्र के प्रमुख अभयारण्यों की जानकारी निम्न मुद्‌दों के आधार पर लिखिए :



आसपास

अपने गाँव/शहर के वन विभाग अधिकारी से उनके कार्यसंबंधी जानकारी प्राप्त कीजिए ।

नहीं । बगल में रखे सोनू के खाली दूध के कटोरे को रह-रहकर सूँघता रहा । उन्हें मोनू की चिंता होने लगी ।

तविषा अपराध-बोध से भरी हुई थी । मांडवी दी से उसने अपना संशय बाँटा । चावल की टंकी में घुन हो रहे थे । उस सुबह उसने मारने के लिए डाबर की पारे की गोलियों की शीशी खोली थी चावलों में डालने के लिए । शीशी का ढक्कन मरोड़कर जैसे ही उसने ढक्कन खोलना चाहा, कुछ गोलियाँ छिटककर दूर जा गिरीं । गोलियाँ बटोर उसने टंकी में डाल दी थीं । फिर भी उसे शक है कि एकाध गोली ओने-कोने में छूट गई होगी और...

''दादी ... मोनू मेरे साथ खेलता क्यों नहीं ?''

''बेटा, सोनू जो उससे बिछड़ गया है । वह दुखी है । दोनों को एक-दूसरे के साथ रहने की आदत पड़ गई थी न ।''

''मुझे भी तो सोनू के जाने का दुख है ... दादी, क्या हम दोनों भी मर जाएँगे ?'' मांडवी दी ने तड़पकर पीयू के मुँह पर हाथ रख दिया । डाँटा - ''ऐसे बुरे बोल क्यों बोल रहा है ?'' पीयू ने प्रतिवाद किया, ''आपने ही तो कहा था, दादी, सोनू दुख से मर गया । '' ''कहा था । उसे अपने माँ-बाप से बिछड़ने का दुख था । जंगल उसका घर है । जंगल में उसके माँ-बाप हैं । तुम तो अपने माँ-बाप के पास हो ।''

''दादी, हम मोनू को उसके माँ-बाप से अलग रखेंगे तो वह भी मर जाएगा दुख से ?''

मांडवी दी निरुत्तर......... हो आईं ।

''दादी, हम मोनू को जंगल में ले जाकर छोड़ दें तो वह अपने मम्मी-पापा के पास पहुँच जाएगा । फिर तो वह मरेगा नहीं न ?''

''नहीं मरेगा ... पर तू मोनू के बिना रह लेगा न ?'' मांडवी दी का कंठ भर आया ।

''रह लूँगा ।''

''ठीक है । शैलेश से कहूँगी कि वह रात को गाड़ी निकाले और हमें जंगल ले चले । रात में ही खरगोश दिखाई पड़ते हैं । शायद मोनू के माँ-बाप भी हमें दिखाई पड़ जाएँगे ?''

''दादी, मैंने आपसे कहा था न, मुझे तोता भी चाहिए ?''

''कहा था ।''

''अब मुझे तोता नहीं चाहिए, दादी ।''

मांडवी दी ने पीयूष को सीने से भींच लिया और दनादन उसका मुँह चूमने लगीं ।

—०—

श्रवणीय

'मानो सूखा वृक्ष बोल रहा है', उसकी बातें ध्यान से सुनिए निम्न मुद्दों के आधारपर :

- बीज
- बचपन
- ऋतुओं का परिणाम
- मन की इच्छा

शब्द संसार

अनुशासन (पुं.सं.) = नियम
झिझक (क्रि.)= लज्जा, संकोच
बुहारना (क्रि.) = झाड़ू लगाना
बुदबुदाना (क्रि.) = अस्फुट स्वर में बोलना
कोंपल (स्त्री.सं.) = नई पत्तियाँ
धमाचौकड़ी (स्त्री.सं.) = उछलकूद, उपद्रव
बिटर दृष्टि (स्त्री.सं.) = नजर गड़ाए देखना
कीच(पुं.सं.) = कीचड़, दलदल
चितकबरी (वि.) = रंग-बिरंगी
पोखर (पुं.सं.) = जलाशय, तालाब
हमजोली (पुं.सं.)= साथी, संगी
निस्पंद (वि.) = निश्चल, स्तब्ध
प्रतिवाद (पुं.सं.) = खंडन, विरोध

मुहावरे

घोड़े बेचकर सोना = निश्चिंत होकर सोना
घात लगाना = किसी को हानि पहुँचाने के अवसर ढूँढ़ना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) प्रवाह तालिका : कहानी के पात्र तथा उनके स्वभाव की विशेषताएँ :-

पात्र
विशेषताएँ

(ख) पहचानिए रिश्ते :
(१) दादी - तविषा - ....
(२) पीयूष - शैलेश - ....
(३) तविषा - शैलेश - ....
(४) शैलेश - दादी - ....

पाठ से आगे

पालतू प्राणियों के लिए आप क्या करते हैं, विस्तार पूर्वक लिखिए ।

२) पत्र लेखन :-

गरमी की छुट्टियों में महानगरपालिका/नगर परिषद/ग्राम पंचायतों द्‌वारा पक्षियों के लिए बनाए घोंसले तथा चुग्गा-दाना-पानी की व्यवस्था किए जाने के कारण संबंधित विभाग की प्रशंसा करते हुए पत्र लिखिए ।

३) कहानी लेखन :-

दिए गए शब्दों की सहायता से कहानी लेखन कीजिए । उसे उचित शीर्षक देकर प्राप्त होने वाली सीख भी लिखिए :- अकाल, तालाब, जनसहायता, परिणाम

रचना बोध

....
....
....

३. इनाम

– अरुण

'बिजली बचत की आवश्यकता' पर चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

श्रवणीय

● विद्यार्थियों से बिजली से चलने वाले साधनों के नाम पूछें । ● बिजली का उपयोग अन्य किन–किन क्षेत्रों में होता है कहलवाएँ । ● बिजली की बचत की आवश्यकता पर चर्चा कराएँ । ● विद्यार्थी द्वारा किए जाने वाले उपाय बताने के लिए कहें ।

देसी कंपनी ने रेफ्रीजरेटर बनाया और उसकी प्रसिद्धि के लिए विदेशी विज्ञापन अपनाया । भारतभर में प्रतियोगिता का जुगाड़ किया । सवाल था– 'इस रेफ्रीजरेटर को खरीदने के क्या सात लाभ हैं ?' एक अप्रैल को फल निकलना था । जिस या जिन प्रतियोगी का उत्तर कंपनी के मुहरबंद उत्तर से मेल खा जाएगा, उसे या उन्हें एक रेफ्रीजरेटर मुफ्त इनाम दिया जाएगा ।

भारत में धूम मच गई है । मेरे विचार से इतने उत्तर अवश्य पहुँचे कि उनकी रद्दी बेचकर एक रेफ्रीजरेटर के दाम तो वसूल हो गए होंगे ।

लॉटरी खुलने वाले दिन से पहली वाली रात थी । हम सब बाहर छत पर लेटे थे । हेमंत ने कहा, ''पिता जी, हम रेफ्रीजरेटर रखेंगे कहाँ ?''

पत्नी ने उत्तर दिया, ''क्यों, रसोई में जगह कर लेंगे । क्यों जी, तुमने बिजली कंपनी में दरख्वास्त भी दे दी है ? घरेलू पावर चाहिए उसके लिए ।''

मैं मुस्करा कर बोला, ''तुम तो खयाली पुलाव पका रहे हो । मानो किसी ने तुम्हें टेलीफोन पर खबर कर दी हो ।''

''हमारे टेलीफोन तो तुम ही हो ।'' पत्नी ने मस्का लगाया । ''इतने अच्छे लेखक के होते हुए कौन जीत सकेगा ?''

''पर यह क्या पता, मैंने कंपनी के उत्तरों से मिलते उत्तर लिखे हों ।''

''अच्छा जी, अब हमसे उड़ने लगे । उस दिन खुद कह रहे थे कि कंपनी के पास लिखा लिखाया कुछ नहीं है, यह तो जिसका उत्तर सबसे अच्छा होगा उसे इनाम दे देगी । रेफ्रीजरेटर का विज्ञापन हो जाएगा और लाभ छाँटने के लिए किसी एक्सपर्ट को रखना पड़ता और उसके पैसे अलग बचेंगे ।''

''वह तो समय–समय पर दिमागी लहरें दौड़ती हैं ।''

अमिता ताली पीटकर बोली, ''पिता जी, मैं रोज आइसक्रीम खाया करूँगी ।'' हेमंत ने कहा, ''मैं बर्फ के क्यूब चूसूँगा ।''

तभी बगल की छत से आवाज आई, ''यह आइसक्रीम रोज–रोज कौन बना रहा है ? क्या अमिता के पिता जी रेस्ट्राँ खोल रहे हैं ?''

हेमंत चिल्लाया, ''नहीं ताऊ जी, कल हमारा रेफ्रीजरेटर आ रहा है ।''

अमिता भी खिलखिलाई, ''उसमें रोजाना आइसक्रीम जमाया करेंगे ।''

परिचय

जन्म : ३ जनवरी १९२८ मेरठ (उ.प्र.)

परिचय : कहानीकार, उपन्यासकार अरुण जी ने विविध विधाओं पर भरपूर लेखन किया है। आपके समग्र साहित्य की १४ पुस्तकों का संकलन प्रकाशित हो चुका है ।

प्रमुख कृतियाँ : मेरे नवरस (एकांकी संकलन) वृहद हास्य संकलन (कहानी संग्रह) विशेष उल्लेखनीय है ।

गद्‌य संबंधी

हास्य–व्यंग्यात्मक निबंध : किसी विषय का तार्किक, बौद्‌धिक विवेचनापूर्ण लेख निबंध है । हास्य–व्यंग्य में उपहास का प्राधान्य होता है ।

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने रेफ्रीजरेटर का आधार लेकर समाज की विभिन्न विसंगतियों पर हास्य के माध्यम से करारा व्यंग्य किया है ।

ताऊ जी ने कहा, ''क्या लॉटरी वाले की बाबत कह रहे हो ? वह तो मेरे नाम आ रहा है ।''

मैंने नम्र स्वर से पड़ौसी दीनदयाल को पुकारा, ''क्या आपने भी उत्तर भर कर भेजा है ?''

''हाँ ! क्योंकि मेरा उत्तर तुमसे सही है इसलिए रेफ्रीजरेटर मिलेगा तो मुझे ! खैर बच्चो ! आइसक्रीम तो तुम्हें खिलानी ही पड़ेगी ।''

बच्चे मायूस हो गए ।

किस्मत की बात है, अगले दिन लॉटरी खुली और रेडियो पर पता चला कि जिसके सब उत्तर ठीक है, उन दो भाग्यवानों में से एक मैं हूँ ।

रेफ्रीजरेटर मुंबई से आते-जाते काफी दिन लग गए । इतने में मैंने बिजली का प्रबंध कर लिया । उसका आना था कि सगे और संबंधियों में, मित्रों और मोहल्ले में धूम मच गई । सब देखने आने लगे जैसे कोई बहू को देखने आता है । मुझे शक है यदि मैं अपने कमाए पैसों से खरीदता तो भी ऐसी भीड़ लगती क्या ? यह सब लॉटरी का प्रताप था ।

पहले आने वालों को पत्नी ने शिकंजी बनाकर पिलाई, कुछ शौकीनों के लिए चाय बनी । भीड़ बढ़ती गई तो घबराकर उसने हथियार टेक दिए ।

झाँकी देखने वालों का ताँता बँधा था । एक जाता था, दो आते थे ।

बच्चों ने पहले से बोतलें इकट्‌ठी करके रखी थीं । आठों में पानी भर कर रखा हुआ था । परंतु वे पल-पल में खाली हो रही थीं, पानी कैसे ठंडा होता । दिनेश ने छींटा छोड़ा, ''अबे, यह तो पानी को गरम बना रहा है ।''

मैं हँस कर बोला, ''भीड़ नहीं देखी, हम खुद गरम हो रहे हैं । पानी रखे मुश्किल से एक मिनट हुआ होगा ।''

लकीर की फकीर बोलीं,''क्यों बेटा, किस देवी की मानता मानी थी ? हमें भी बता दें ।''

कुढ़मगज ने सुनाया, ''भई, मैंने भी उत्तर लिख रखे थे किंतु कोई आए और लेकर चलते बने । मैंने फिर दुबारा दिमाग पर जोर नहीं डाला ।''

उनके साथी ने पूछा, ''कहीं अरुण तो नहीं उठा लाया ?''

''नहीं, नहीं ! पर क्या कहा जा सकता है ! यह मैं जानता हूँ कि वे सब जवाब बिलकुल ठीक थे ।''

जला भुना बोला, ''जब बिजली का बिल आएगा तब बच्चू को पता लगेगा कि सफेद हाथी बाँध लिया है ।''

शक्की ने कहा, ''मुझे पता है, अरुण का रिश्तेदार कंपनी में नौकर है । उसने असली जवाब इसे चुपके से लिख भेजे कि मुफ्त का रेफ्रीजरेटर घर में ही रह जाए ।''

एक तो लगातार लोगों का आना परेशान कर रखा था, दूसरे इस जली-कटी ने काँटों में डंक का काम किया । हम दोनों बिलबिला उठे ।

एक बिगड़े दिल ने हेमंत को पुचकार कर पूछा, ''क्यों बेटे, तुम्हारे

मौलिक सृजन

'प्राकृतिक संसाधन मानव के लिए वरदान', इस विषय पर स्वमत लिखिए ।

आसपास

आपके गाँव-शहर को जहाँ से बिजली आपूर्ति होती है, उस केंद्र के बारे में जानकारी प्राप्त करके टिप्पणी तैयार कीजिए ।

पिता जी कितने दिन पहले मुंबई गए थे ?'' उसे निश्चय था कि मैं मुंबई जाकर इस रेफ्रीजरेटर के पैसे दे आया हूँ और अपने नाम के लिए इसे लॉटरी में जीतने का अनुबंध कर आया हूँ । बच्चे से यह तिरछा सवाल पूछकर उससे कबुलवाना चाहते थे ।

बच्चों को इन झगड़ों से क्या? वे हँस-हँस कर अपना रेफ्रीजरेटर सबको दिखा रहे थे । हेमंत बोतलों से पानी पिला रहा था और अमिता खाली बोतलें भरकर लगा रही थी ।

खैर, राम-राम करके उस दिन के टंटे से तो पीछा छूटा । लेकिन आगे क्या आने वाला था, उसका हमें आभास भी न था ।

शांति बुआ ने शुरुआत की । उनके हाथ में ढँका कटोरा था । आवाज लगाती चली आई, ''ओ बहू, कहाँ है ? जरा इधर तो सुन ।''

कल के भंभड़ से आज की शांति बड़ी प्यारी लग रही थी इसलिए हम दोनों का मूड ठीक था । पत्नी ने बड़े स्वागत से उन्हें बिठाया, ''बैठिए बुआ जी बैठिऐ । अजी, जरा बोतल से पानी भेजना ।''

बुआ जी बड़ी जल्दबाज हैं । ठंडा पानी पीकर उठ गईं । ''चल रही हूँ बहू । अभी चूल्हा नहीं बुझाया । यह आटा बच गया था, गर्मी में सड़ जाता । मैंने कहा, तेरे रेफ्रीजरेटर में रख आऊँ, शाम को मँगा लूँगी ।''

पत्नी का दिल बाग-बाग हो गया । शब्दों में मिसरी घोलकर बोली, ''बुआ जी, आप चिंता न करें । मैं शाम को हेमंत के हाथ भिजवा दूँगी ।''

कटोरा ले लिया गया और रेफ्रीजरेटर में रख दिया गया ।

उसी संध्या को लाला दीनदयाल पधारें । उनके हाथ में मिठाई का बोइया था । गुस्से के मारे वे पहले दिन नहीं आए थे इसलिए उन्हें देखकर मुझे दुगुनी खुशी हुई । सोफे पर टिकाते हुए बोला, ''कहिये लाला जी, अच्छी तरह से ?''

''सब भगवान की कृपा है । तुम तो ठीक-ठीक हो ।''

''आपकी दया है ।''

''सुना है तुम्हारा रेफ्रीजरेटर आ गया है ?''

''हाँ जी, आपकी दुआ से लॉटरी में जीत गया । आइए देखिएगा ?''

वे बैठे रहे । देखकर क्या करूँगा ? विदेश की नकल करी होगी ।''

मैं चुप रहा । पत्नी के कानों में बच्चों ने भनक डाल दी कि बगलवा-ले ताऊ जी आए हैं । आम की आइसक्रीम तश्तरियों में लगाकर चली आई । ''लाला जी, लीजिए । सवेरे जमाई थी ।''

''नहीं बेटी, मुझसे नहीं खाई जाएगी ।''

मैंने भी जोर दिया, ''लीजिए लाला जी, थोड़ी तो लीजिए ।''

''मैं आइसक्रीम नहीं खाता, दाँत चीसने लगते हैं ।''

बात साफ झूठी थी । किंतु जब भला आदमी इनकार कर रहा था तब

संभाषणीय

'ईंधन की बचत, समय की माँग है' इस विषय पर निम्न मुद्‌दों के आधार पर अपना मत व्यक्त कीजिए ।

- ईंधन से चलने वाले साधन
- ईंधन का उपयोग करने वाले के क्षेत्र
- बचत की आवश्यकता

हम जबरदस्ती कैसे करते और फिर मैं अकेला खाता क्या अच्छा लगता ? ''विमला, इसे ले जाओ । बाँट दो, नहीं तो पिघल जाएगी ।''

मोहल्ले में समाचार उड़ती बीमारी से भी तेज फैलते हैं । हमारे फ्रिज का यह उपयोग पता चलते ही फिर लाइन बँध गई । कोई रोटी ला रहा है, कोई पराठे, तरह-तरह साग, नाना प्रकार की मिठाइयाँ । चमनलाल लखनऊ गए तो टोकरा भर करेले ले आए क्योंकि मेरठ में अभी नहीं मिल रहे थे । बनर्जी कोलकाता से संदेश और खीर महीने भर के लिए ले आए ।

रेफ्रीजरेटर में हमें अपनी चीजों के लिए जगह न के बराबर मिलती थी, इसकी कोई चिंता नहीं । दुख तो इस बात का था कि हमारे घर की प्राइवेसी छिन गई थी । नहाना, खाना भी हराम हो गया था ।

बड़े परेशान ! करें तो क्या करें ? समझ में नहीं आता था । जी करता था किसी को रेफ्रीजरेटर दे दूँ और फिर उसकी मुसीबत देखकर ताली पीट-पीट कर नाचूँ । किंतु उसमें लोगों की अमानत जो पड़ी थी ।

चिंता ने चेतना की चिता सजा दी ।

उस दिन कैलाश आया । मोहल्ले में रहता था, पर मौहल्लेदार से अधिक था । कहने लगा, ''सिंधी आलू मुझे बड़े अच्छे लगते है, सो पत्नी से काफी बनवा लिए हैं । अपने फ्रिज में रख लो, जिस दिन खाने को जी करेगा ले जाया करूँगा ।''

उस दिन रेफ्रीजरेटर में तिल रखने की जगह न थी । मैंने उसे अपनी बेबसी बताई । बिगड़कर बोला, ''अच्छा जी, ऐरे-गैरे नत्थू खैरे तो तुम्हारे बाबा लगते हैं और यार लोगों की चीजें रखने को लाचारी है ।''

मैंने पत्नी से आँखों-आँखों में पूछा । उसने में सिर हिला दिया ।

वह भाँप रहा था । ''अच्छा, मुझे दिखाओ । मैं जगह कर लूँगा ।''

हम दोनों उसे निराश करते हुए वास्तव में दुखी थे । यह सुझाव खुद न देने की मूर्खता कर गए थे । खुश होकर फ्रिज खोलकर दिखा दिया ।

फ्रिज भरा नहीं कहिए, व्यंजनों से अटा पड़ा था । देखकर तबीयत घबराती थी ।

कैलाश ने ऊपर नीचे झाँका । दृष्टि भी अंदर घूसने को इनकार कर रही थी । सहसा उसने एक काँच का कटोरा निकाला और विमला से पूछा, ''भाभी जी, ये सिल्वर क्रीम किसकी है ?''

''अपनी है ।''

''तो फिर इन्हें रखने का क्या फायदा ? ऐसी चीज तो पेट में पहुँचनी चाहिए ।''

कहकर उसने दो मुँह में रख लीं ।

बाकी दो बची थीं । हेमंत-अमिता स्कूल गए थे और उसे जगह करनी थी इसलिए उन्हें हमने उदरस्थ किया ।

लेखनीय

समुद्री लहरों से विद्‌युत निर्मिति के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए । संदर्भ यू ट्यूब से लीजिए ।

पठनीय

दैनंदिन जीवन में उपयोग में लाए जाने वाले विविध उपकरणों के आविष्कारकों और उनके कार्यो की जानकारी प्राप्त करके पढ़िए ।

दो-तीन दिन में फ्रिज खाली हो गया । उसमें केवल हमारी चीजें थीं ।

शांति बुआ अपना पनीर मटर लेने आईं । ‘‘क्या करें बुआ जी उसमें मच्छर गिर गए थे इसलिए फेंक दिया ।’’

रामानुज ने मिठाई माँगी तो माफी माँगने लगा, ‘‘चाचा जी, बड़ा शरमिंदा हूँ । कल तीन-चार मित्र आ गए थे । बाजार जाने का मौका न मिला । आपकी मिठाई से काम चला लिया । फिर मैं आप में और अपने में कोई भेद नहीं मानता ।’’ ये शब्द उन्हीं के थे जब वे मिठाई रखने आए थे ।

साग लेने चक्रवर्ती आए तो लाचारी दिखाई, ‘‘भाई, तुम्हें तो पता है कल कैसी धुआँधार बारिश थी । पत्नी बोली-‘‘जब घर में साग रखा है तब भीगने से क्या फायदा । जैसा उन्होंने खाया वैसा हमने ।’’

रमा पराठे को पूछ रही थी, विमला ने उत्तर दिया, ‘‘सवेरे-ही-सवेरे एक साधु आ गए । बड़े पहुँचे हुए साधु थे । खाली हाथ कैसे जाने देती । घर में कुछ तैयार नहीं था । तुम्हारे पराठे दे दिए ।’’

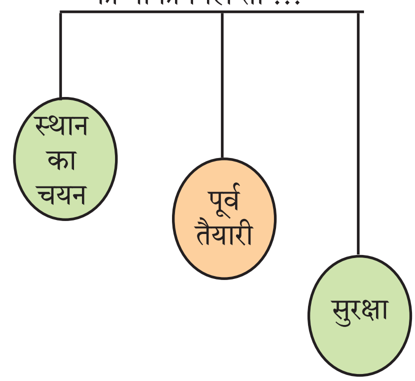
रमा ने शंका उपस्थित की, ‘‘किंतु तुम तो साधु-संतों में विश्वास नहीं करतीं ?’’

विमला ने बात बनाई, ‘‘वह फिर सारे मोहल्ले को तंग करता । मैंने पराठे तुम्हारी ओर से उसे दिए हैं । तुम्हारे घर का पता बता दिया है । झूठ समझो या सच, कल-परसों वह जब तुम्हारे घर आकर आज के पराठे के लिए आशीष देगा और भोजन माँगेगा तब तुम्हें मानना पड़ेगा ।’’

मैंने कहा न, मोहल्ले में समाचार उड़ती बीमारी की भाँति फैलते हैं । अब मेरे घर के पास भी कोई नहीं फटकता ।

—०—

स्वमत –अगर तुम्हें ‘पर्वतारोहण’ का मौका मिले तो ...



विषय से...

आपके परिवार के किसी वेतनभोगी सदस्य की वार्षिक आय की जानकारी लेकर उनके द्‌वारा भरे जाने वाले आयकर की गणना कीजिए ।

शब्द संसार

जुगाड़ (पुं.सं.) = व्यवस्था, प्रबंध
दरख्वास्त (स्त्री.सं.) = अर्ज, अरजी
भंभड़ (पुं.सं.) = शोरशराबा
अमानत (स्त्री.अ.) = धरोहर

मुहावरे

जली-कटी सुनाना = खरी-खोटी सुनाना
मिसरी घोलकर बोलना = मीठी-मीठी बातें करना
खयाली पुलाव पकाना = कल्पना में खोए रहना, स्वप्नरंजन

कहावत

ऐरे गैरे नत्थू खैरे = महत्वहीन

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) पाठ में आए और हिंदी में प्रयुक्त होने वाले पाँच–पाँच विदेशी एवं संकर शब्दों की सूची:

सूची	
विदेशी शब्द	संकर शब्द
१. २. ३. ४. ५.	

(ख) वाक्य में कि, की के स्थान को स्पष्ट कीजिए–
'माँ ने कहा कि बच्चों ने आम की आईसक्रीम तैयार की ।'

कि – ---------
की– ---------
की– ---------

(ग) रेफ्रीजरेटर आने के पूर्व घरवालों के विचार –
१.
२.
३.
४.

घ) रेफ्रीजरेटर आने के बाद घर की स्थिति–
१.
२.
३.
४.

पाठ से आगे

प्रशंसापत्र / पुरस्कार/ इनाम के प्रसंग का कक्षा में वर्णन कीजिए।

भाषा बिंदु

दिए गए अनुसार रचना की दृष्टि से सरल, संयुक्त, मिश्र अन्य वाक्य पाठ से खोजकर तालिका पूर्ण कीजिए :–

सरल वाक्य

१. मैंने एक दुबला–पतला व्यक्ति देखा ।
२. कैलाश ने ऊपर– नीचे झाँका
३. ____________
४. ____________

संयुक्त वाक्य

१. गौतमी ने कहानी सुनाई और गीता रो पड़ी ।
२. कोलकाता के संदेश और खीर महीने भर के लिए ले आए ।
३. ____________
४. ____________

मिश्र वाक्य

१. उसने कहा कि मैं परिश्रमी हूँ ।
२. उसका आना था कि सगे संबंधियों में धूम मच गई
३. ____________
४. ____________

रचना बोध

....
....
....

४. सिंधु का जल

– अशोक चक्रधर

आसपास

नदी के जल–प्रदूषण पर चर्चा कीजिए :–

कृति के आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से उनके परिवेश की नदी का नाम पूछें । ● उस नदी के उद्‌गम–स्थल का नाम जानें । ● नदी के जल का उपयोग किन कामों के लिए होता है, बताने के लिए कहें । ● नदी की वर्तमान स्थिति और सुधार के उपाय पर चर्चा कराएँ ।

सतत प्रवाहमान !
जीवन की पहचान !
मैं एक गीली हलचल हूँ,
मेरे स्वर में कल–कल है
मैं जल हूँ !
सिंधु यानी
धरती पर सभ्यताओं का
आदि बिंदु ।
मेरे ही किनारे पर
संस्कृतियों ने साँस ली
मेरे ही तटों पर
इंसानियत के यज्ञ हुए
गति कभी मंद ना हुई मेरी
गति में चंचल
पर भावना में अचल हूँ ।
मैं सिंधु नदी का
पावन जल हूँ ।
मैं नहाने वाले से
नहीं पूछता उसकी जात,
उनका मजहब,
उनका धर्म,
मैं तो बस जानता हूँ
जीवन का मर्म ।
वो लहरें
जो सहसा उछलती हैं,
सदा जिंदगी की ओर मचलती हैं ।
प्यास बुझाने से पहले
मैं नहीं पूछता
दोस्त है या दुश्मन ।

परिचय

जन्म : ८ फरवरी १९५१ खुर्जा (उ.प्र)

परिचय : अशोक चक्रधर जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । आपने कविता, हास्य–व्यंग्य, निबंध, नाटक, बालसाहित्य, समीक्षा, अनुवाद, पटकथा आदि अनेक विधाओं में लेखन किया है । **प्रमुख कृतियाँ :** बूढ़े बच्चे, तमाशा, खिड़कियाँ, बोल–गप्पे, जो करे सो जोकर आदि कविता संग्रह ।

पद्‌य संबंधी

नई कविता : संवेदना के साथ मानवीय परिवेश के संपूर्ण वैविध्य को नए शिल्प में अभिव्यक्त करने वाली काव्यधारा है ।

प्रस्तुत कविता के माध्यम से चक्रधर जी ने सभ्यता, संस्कृति, इंसानियत, सर्वधर्म समभाव, परदुःख कातरता आदि मानवीय गुणों पर दृष्टिक्षेप किया है।



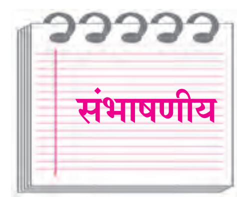
मैल हटाने से पहले
नहीं पूछता मुस्लिम है या हिंदुअन ।
मैं तो सबका हूँ
और जी भर के पिएँ ।
छोटी-छोटी सांस्कृतिक नदियाँ
दौड़ी-दौड़ी आती हैं
मुझमें सभ्यताएँ समाती हैं
घुल-मिल जाती हैं
लेकिन क्या बताऊँ
और कैसे कहूँ
कभी-कभी
बहता हुआ आता है लहू
जब मेरे घाटों पर
खनकती हैं तलवारें
गूँजती हैं टापें
गरजती हैं तोपें
होते हैं धमाके
और शहीद होते हैं
रणबाँकुरे बाँके,
मैं नहीं पूछता
कि वे थे कहाँ के ।
मैं नहीं देखता
कि वे यहाँ के हैं
कि वहाँ के ।
मैं तो सबके घाव धोता हूँ
विधवा की आँखों में
आँसू बनकर मैं ही तो रोता हूँ ।

ऐसे बहूँ या वैसे
प्यारे मनुष्यों, बताऊँ कैसे
मैं सिंधु में बिंदु हूँ,
बिंदु में सिंधु हूँ,
लहराते बिंबों में
झिलमिलाता इंदु हूँ ।

—०—

शब्द संसार

प्रवाहमान (वि.) = गतिशील, निरंतर, प्रवाहित
मजहब (पुं.अ.) = धर्म
मर्म (पुं.सं.) = सार
टापें (स्त्री.सं.) = घोड़ों के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द
रणबाँकुरे (पुं.सं.) = बहादुर, वीर, योद्‌धा
बिंब (पुं.सं.) = छाया, आभास
इंदु (पुं.सं.) = चंद्रमा
घाव धोना (क्रि.) = मरहमपट्‌टी करना, घाव साफ करना



'जल ही जीवन है' इस विषय पर कक्षा में गुट बनाकर चर्चा कीजिए ।



रवींद्रनाथ टैगोर की कोई कविता पढ़कर ताल और लय के साथ उसका गायन कीजिए ।



अंतरजाल/यू ट्यूब से 'जल संधारण' संबंधी जानकारी सुनकर उसका संकलन कीजिए ।

‘मैं हूँ नदी’ इस विषय पर कविता कीजिए ।

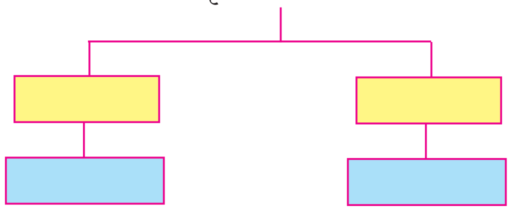
कल्पना पल्लवन

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क)आकृति पूर्ण कीजिए :

प्राकृतिक जलस्रोत



(ख) पूर्ण कीजिए:-

पावन जल स्नान करने वालों से नहीं पूछता -

१.

२.

३.

२) भारत के मानचित्र में अलग-अलग राज्यों में बहने वाली नदियों की जानकारी निम्न मुद्दों के आधार पर तालिका में लिखिए:

अ.क्र.	नदी का नाम	उद्‌गम स्थल	राज्य	बाँध का नाम

(३) पाठ से ढूँढ़कर लिखिए :

(च) संगीत- लय निर्माण करने वाले शब्द ।

(छ) भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए और ऐसे अन्य दस शब्द ढूँढ़िए ।

अलि-　　　　अली-

पाठ से आगे

‘नदी जल मार्ग योजना’ के संदर्भ में अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१.) प्रेरणार्थक क्रिया का रूप पहचानकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए :-

(क) जिसे वहाँ से जबरन हटाना पड़ता था ।

(ख) महाराजा उम्मेद सिंह द्‌वारा निर्मित होने से ‘उम्मेद भवन’ कहलवाया जाता है ।

(२.) सहायक क्रिया पहचानिए :-

(च) हम मेहरान गढ़ किले की ओर बढ़ने लगे ।

(छ) काँच का कार्य पर्यटकों को आश्चर्यचकित कर देता है ।

(३.) सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(त) होना (थ) पड़ना (द) रहना (ध)करना

रचना बोध

....

....

....

५. अतीत के पत्र

– विनोबा और गांधीजी

श्रवणीय

'वैष्णव जन तो तेणे कहिए' यह पद सुनिए और उसके आशय पर चर्चा कीजिए :–

कृति के आवश्यक सोपान :

● इस पद की रचना करने वाले का नाम पूछें । ● इस पद में कौन-से शब्द कठिन हैं, बताने के लिए कहें । ● पद से प्राप्त होने वाली सीख कहलवाएँ ।

परम पूज्य बापूजी,

एक साल पहले अस्वास्थ्य के कारण आश्रम से बाहर गया था । यह तय हुआ था कि दो-तीन मास वाई रहकर आश्रम लौट जाऊँगा । पर एक साल बीत गया, फिर भी मेरा कोई ठिकाना नहीं । पर मुझे कबूल करना चाहिए कि इस बारे में सारा दोष मेरा ही है । वैसे मामा (फड़के) को मैंने एक-दो पत्र लिखे थे । आश्रम ने मेरे हृदय में खास स्थान प्राप्त कर लिया है, इतना ही नहीं, अपितु मेरा जन्म ही आश्रम के लिए है, ऐसी मेरी श्रद्‌धा बन गई है । तो फिर प्रश्न उठता है कि मैं एक वर्ष बाहर क्यों रहा ?

जब मैं दस वर्ष का था तभी मैंने ब्रह्‌मचर्य व्रत का पालन करते हुए देशसेवा करने का व्रत लिया था । उसके बाद मैं हाईस्कूल में दाखिल हुआ । उस समय मुझे भागवत गीता के अध्ययन का शौक लगा । पर मेरे पिता जी ने दूसरी भाषा के तौर पर फ्रेंच लेने की आज्ञा दी । तो भी गीता पर का मेरा प्रेम कम नहीं हुआ था और तभी से मैंने घर पर ही खुद-ब-खुद संस्कृत का अभ्यास शुरू कर दिया था । मैं आपकी आज्ञा लेकर आश्रम में दाखिल हुआ पर उसी समय वेदांत का अभ्यास करने का अच्छा मौका हाथ लगा । वाई में नारायण शास्त्री मराठे नामक एक आजन्म ब्रह्‌मचारी विद्‌वान विद्‌यार्थियों को वेदांत तथा दूसरे शास्त्र सिखाने का काम करते हैं । उनके पास उपनिषदों का अध्ययन करने का लोभ मुझे हुआ । इस लोभ के कारण वाई में मैं ज्यादा समय रह गया । इतने समय में मैंने क्या-क्या किया, यह लिखता हूँ ।

जिस लोभ के खातिर मैं इतने दिनों आश्रम से बाहर रहा, मेरा वह लोभ और उसका कार्य नीचे लिखे अनुसार है :

स्वास्थ्य सुधार के निमित्त पहले तो मैंने दस-बारह मील घूमना शुरू किया । बाद में छह से आठ सेर अनाज पीसना चालू किया । आज तीन सौ सूर्य नमस्कार और घूमना, यह मेरा व्यायाम है । इससे मेरा स्वास्थ्य ठीक हो गया ।

परिचय

विनोबा भावे जी , (विनायक नरहरी भावे)

जन्म : ११ सितंबर १८९५ **मृत्यु** : १५ नवबंर १९८२ **परिचय** : विनोबा भावे का पूरा नाम विनायक नरहरी भावे था । आप स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता तथा प्रसिद्‌ध गांधी विचारक थे । **प्रमुख कृतियाँ** : गीताई (गीता का मराठी में अनुवाद) गीता पर वार्ता, शिक्षा पर विचार आदि कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं ।

महात्मा गांधीजी

जन्म : २ अक्टूबर १८६९ **मृत्यु** : ३० जनवरी १९४८ **परिचय** : गांधीजी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था । आप भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख राजनीतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे ।

प्रमुख कृतियाँ : 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग', (आत्मकथा) 'हिंद स्वराज्य या इंडियन होमरूल' इनके अतिरिक्त लगभग प्रत्येक दिन अनेक व्यक्तियों और समाचार पत्रों के लिए लेखन करते थे ।

गद्‌य संबंधी

यहाँ प्रथम पत्र में विनोबा भावे जी का दृढ़ निश्चय, देशसेवा व्रत, परिश्रम, अनुशासन एवं गांधीजी के प्रति समर्पण एवं श्रद्‌धा परिलक्षित होती है।

दूसरे पत्र में गांधीजी का भावे जी के प्रति विश्वास, पितृवत प्रेम दिखाई पड़ता है। इन पत्रों से विविध मानवीय मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

आहार के विषय में : पहले छह महीने तक तो नमक खाया । बाद में उसे छोड़ दिया । मसाले वगैरा बिलकुल नहीं खाए और आजन्म नमक और मसाले न खाने का व्रत लिया । दूध शुरू किया । बहुत प्रयोग करने के बाद यह सिद्‌ध हुआ कि दूध बिना बराबर चल नहीं सकता । फिर भी अगर इसे छोड़ा जा सकता हो तो छोड़ देने की मेरी इच्छा है । एक महीना केले, दूध और नींबू पर बिताया । इससे ताकत कम हुई ।

कार्य

१. गीता का वर्ग चलाया । इसमें छह विद्‌यार्थियों को अर्थ-सहित सारी गीता सिखाई बिना पारिश्रमिक के ।

२. ज्ञानेश्वरी छह अध्याय । इस वर्ग में चार विद्‌यार्थी थे ।

३. उपनिषद नौ । इस वर्ग में दो विद्‌यार्थी रहे ।

४. हिंदी प्रचार : मैं स्वयं अच्छी हिंदी नहीं जानता । फिर भी विद्‌यार्थियों को हिंदी के समाचार-पत्र पढ़ने-पढ़ाने का क्रम रखा ।

५. अंग्रेजी दो विद्‌यार्थियों को सिखाई ।

६. यात्रा लगभग चारसौ मील पैदल । राजगढ़, सिंहगढ़, तोरणगढ़ आदि इतिहास प्रसिद्‌ध किले देखें ।

७. प्रवास करते समय गीता जी पर प्रवचन करने का क्रम भी रखा था । आजतक ऐसे कोई पचास प्रवचन किए । अब यहाँ से आश्रम आते हुए पहले पैदल मुंबई जाऊँगा और वहाँ से रेल से आश्रम पहुँचूँगा। मेरे साथ पच्चीस वर्ष का एक विद्‌यार्थी प्रवास कर रहा है । मुझसे गीता सीखने का उसका विचार है । मैं अधिक से अधिक चैत्र शुक्ल १ को आश्रम पहुँचूँगा ।

८. वाई में 'विद्‌यार्थी मंडल' नाम की एक संस्था की स्थापना की । उसमें एक वाचनालय खोला और उसकी सहायता के लिए चक्की पीसने वालों का एक वर्ग शुरू किया । उसमें मैं और दूसरे १५ विद्‌यार्थी चक्की पीसते । जो मशीन की चक्की पर पिसवाने ले जाते उनका काम हम (एक पैसे में दो सेर हिसाब से) करते और ये पैसे वाचनालय को देते । पैसेवालों के लड़के भी इस वर्ग में शामिल हुए थे । यह वर्ग कोई दो मास चला और वाचनालय में चारसौ पुस्तकें इकट्‌ठी हो गईं ।

९. सत्याग्रहाश्रम के तत्वों का प्रचार करने का मैंने काफी प्रयत्न किया ।

१०. बड़ौदा में दस-पंद्रह मित्र हैं । इन सबको लोकसेवा करने की इच्छा है । इस कारण वहाँ तीन वर्ष पहले हमने मातृभाषा के प्रसार के लिए एक संस्था स्थापित की थी । इस संस्था के वार्षिकोत्सव में गया

पठनीय

गांधीजी द्‌वारा लिखित 'मेरे सत्य के प्रयोग' (आत्मकथा) पुस्तक का कोई अंश पढ़िए ।

संभाषणीय

किसी महान विभूति के जीवन संबंधी कोई प्रेरक प्रसंग बताइए ।

था । (उत्सव यानी संस्था के सभासद इकट्‌ठे होकर क्या काम किया, आगे क्या करना है इसकी चर्चा) । उसमें मैंने वहाँ हिंदी प्रचार करने का विचार रखा । मेरी श्रद्‌धा है कि वह संस्था यह काम जरूर करेगी। आपने हिंदी प्रचार का जो प्रयत्न शुरू किया है उसमें बड़ौदा की यह संस्था काम करने को तैयार रहेगी ।

अंत में सत्याग्रहाश्रम निवासी के तौर पर मेरा आचरण कैसा रहा, यह कहना आवश्यक है ।

अस्वादव्रत-इस विषय पर भोजन संबंधी प्रकरण में ऊपर लिखा जा चुका है ।

अपरिग्रह-लकड़ी की थाली, कटोरी, आश्रम का एक लोटा, धोती, कंबल और पुस्तकें, इतना ही परिग्रह रखा है । बंडी, कोट, टोपी वगैरा न पहनने का व्रत लिया है । इस कारण शरीर पर भी धोती ही ओढ़ लेता हूँ । करघे पर बुना कपड़ा ही इस्तेमाल करता हूँ ।

स्वदेशी-परदेशी का संबध मेरे पास है ही नहीं, (आपके संबंध मद्रास के व्याख्यान के अनुसार व्यापक अर्थ न किया हो तो ही) ।

सत्य-अहिंसा-ब्रह्मचर्य- इन व्रतों का परिपालन अपनी जानकारी में मैंने ठीक-ठीक किया है, ऐसा मेरा विश्वास है ।

अधिक क्या कहूँ ? जब भी सपने आते हैं तब मन में एक ही विचार आता है । क्या ईश्वर मुझसे कोई सेवा लेगा ? मैं पूर्ण श्रद्‌धा से इतना कह सकता हूँ कि आश्रम के नियमों के अनुसार (एक को छोड़कर) मैं अपना आचरण रखता हूँ । यानी मैं आश्रम का ही हूँ । आश्रम ही मेरा साध्य है । जिस एक बात की कमी का मैंने उल्लेख किया है वह है अपना भोजन (यानी भाकरी) स्वयं बनाना । मैंने इसका भी प्रयत्न किया; पर प्रवास में यह संभव न हो सका ।

सत्याग्रह का या दूसरा कोई (शायद रेल संबंधी सत्याग्रह शुरू करने का) सवाल पैदा होता हो तो मैं तुरंत ही पहुँच जाऊँगा ।

इधर आश्रम में क्या फेरफार हुए हैं तथा कितने विद्‌यार्थी हैं ? राष्ट्रीय शिक्षा की योजना क्या है ? तथा मुझे अपने आहार में क्या परिवर्तन करना चाहिए, यह जानने की मेरी प्रबल इच्छा है । आप स्वयं मुझे पत्र लिखें, ऐसा विनोबा का-आपको पितृतुल्य समझने वाले आपके पुत्र का आग्रह है ।

मैं दो-चार दिन में ही यह गाँव छोड़ दूँगा ।

विनोबा के प्रणाम

× - × - × - × - ×

(यह पत्र पढ़कर ''गोरख ने मछंदर को हराया । भीम है भीम ।'' यह उद्‌गार बापू के मुँह से निकले थे । सुबह उनको इस प्रकार उत्तर

लेखनीय

'गांधी जयंती' के अवसर पर आकर्षक कार्यक्रम पत्रिका तैयार कीजिए ।

मौलिक सृजन

'मेरे सपनों का भारत' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

मैं हूँ यहाँ

1 https://hi.wikipedia.org/wiki/विनोबा_भावे

2 https://hi.wikipedia.org/wiki/महात्मा_गांधी

दिया)

तुम्हारे लिए कौन-सा विशेष काम मैं लाऊँ, यह मुझे नहीं सूझता । तुम्हारा प्रेम और तुम्हारा चरित्र मुझे मोह में डुबो देता है । तुम्हारी परीक्षा करने में मैं असमर्थ हूँ । तुमने जो अपनी परीक्षा की है उसे मैं स्वीकार करता हूँ । तुम्हारे लिए पिता का पद ग्रहण करता हूँ । मेरे लोभ को तो तुमने लगभग पूरा ही किया है । मेरी मान्यता है कि सच्चा पिता अपने से विशेष चरित्रवान पुत्र पैदा करता है । सच्चा पुत्र वह है जो, पिता ने जो कुछ किया है उसमें वृद्‌धि करें । पिता सत्यवादी, दृढ़, दयामय हो तो स्वयं अपने में ये गुण विशेषता से धारण करें । यह तुमने किया है, ऐसा दिखता है । तुमने यह मेरे प्रयत्नों से किया है, ऐसा मुझे नहीं मालूम होता । इस कारण तुमने मुझे जो पिता का पद दिया है उसे मैं तुम्हारे प्रेम की भेंट के रूप में स्वीकार करता हूँ । उस पद के योग्य बनने का प्रयत्न करूँगा और जब मैं हिरण्यकश्यप साबित होऊँ तो प्रह्लाद भक्त के समान मेरा सादर निरादर करना ।

तुम्हारी यह बात सच्ची है कि तुमने बाहर रहकर आश्रम के नियमों का बहुत अच्छी तरह पालन किया है । तुम्हारे आश्रम में आने के बारे में मुझे शंका थी ही नहीं । तुम्हारे संदेश मामा (फड़के) ने मुझे पढ़कर सुनाए थे । ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करें और तुम्हारा उपयोग हिंद की उन्नति के लिए हो, यही मेरी कामना है ।

तुम्हारे आहार में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का अभी तो मुझे कुछ नहीं लगता । दूध का त्याग अभी तो मत करना । इतना ही नहीं, आवश्यकता हो तो दूध की मात्रा बढ़ाओ ।

रेल-विषयक सत्याग्रह की आवश्यकता अभी नहीं है । पर उसके लिए ज्ञानी प्रचारकों की आवश्यकता है । यह संभव है कि शायद खेड़ा जिले में सत्याग्रह करना पड़ जाय । अभी तो मैं रमता राम हूँ । दो-एक दिन में दिल्ली जाऊँगा ।

विशेष तो जब आओगे तब । सब तुमसे मिलने को उत्सुक हैं ।

बापू के आशीर्वाद

(बाद में बापू के उद्‌गार-''बहुत बड़ा मनुष्य है । मुझे अनुभव होता रहा है कि महाराष्ट्रियों और मदरासियों के साथ मेरा अच्छा संबंध रहा है । महाराष्ट्रियों में तो किसी ने मुझे निराश किया ही नहीं । उसमें भी विनोबा ने तो हद कर दी !'')

—०—

आसपास

हमारी ऐतिहासिक स्मृतियाँ जगाने वाले स्थलों की जानकारी प्राप्त कीजिए और उनपर टिप्पणी बनाइए ।
जैसे – आगाखान पैलेस पुणे

शब्द संसार

अस्वादव्रत (पुं.सं.) = फीका भोजन करने का व्रत
अपरिग्रह (पुं.सं.) = संग्रह न करना
करघा (पुं.सं.) = कपड़ा बुनने का यंत्र
रमता राम (वि.) = फक्कड़, एक स्थान पर न टिकनेवाला
वाकचातुर्य (भा.सं.) = बोलने में चतुर
अचेतन (वि.) = चेतनारहित

मुहावरे

हाथ लगना = प्राप्त होना
हृदय में स्थान बनाना = किसी का प्रिय बनना
निरादर करना = अपमान करना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) कार्य :

स्वास्थ्य सुधार के लिए विनोबा जी द्वारा किए गए कार्य :–

१.
२.
३.
४.

(ख) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

	अ	आ
१.	विद्यार्थी मंडल	योजना
२.	राष्ट्रीय शिक्षा	व्रत
३.	विनोबा जी का साध्य	संस्था
४.	ब्रह्मचर्य	आश्रम
		सत्याग्रह

(ग) अर्थ लिखिए :–

१. ‘अपरिग्रह’ शब्द से तात्पर्य है कि ....

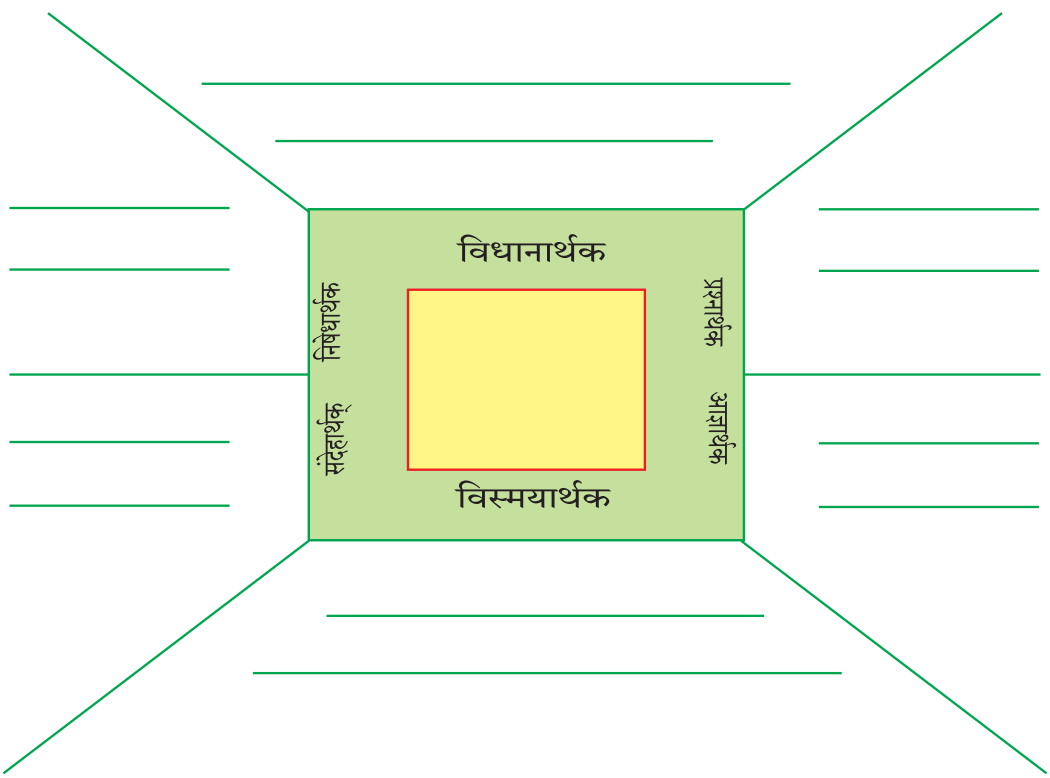
२. ‘रमताराम’ शब्द से तात्पर्य है कि ....

(२) ‘स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है’ – इस पर स्वमत लिखिए ।

भाषा बिंदु

*** अर्थ की दृष्टि से वाक्य परिवर्तित करके लिखिए :–**

सब तुमसे मिलने को उत्सुक हैं ।



रचना बोध

....
....
....

६. निसर्ग वैभव

– सुमित्रानंदन पंत

पूरक पठन

संभाषणीय

किसी विषय पर स्वयं स्फूर्त भाषण दीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● दस–पंद्रह भिन्न विषयों की चिट बनाइए ● विद्यार्थियों को चिट पर लिखित विषय पर विचार करने के लिए कुछ समय दें । ● उस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहें ।

कितनी सुंदरता बिखरी
प्राकृतिक जगत में, ईश्वर,
टपक रही गिरि–शिखरों से झर,
लोट रही घाटी में
लिपटी धूप छाँह में निःस्वर !

अनिल स्पर्श से पुलकित तृण दल,
बहती सीमाहीन
श्लक्ष्ण संगीत स्रोत–सी
अहरह वन–भू मर्मर !

फूलों की ज्वालाएँ
आँखें करतीं शीतल,
मुकुल अधर मधु पीते
गुंजन भर मधुकर दल !
तितली उड़तीं,
दूर, कहीं पल्लव छाया में
रुक–रुक गाती वन प्रिय कोयल !

× × ×

लेटी नीली छायाएँ
कृश रवि किरणों में गुंफित,
दुरारोह भातीं ढालें,
निश्चल तरंग–सी स्तंभित !
स्वर्ण–भाल गिरी सर्वप्रथम
करती ऊषा अभिनंदन,
साँझ यहीं सोती छिप,
निर्जन में कर संध्यावंदन !

परिचय

जन्म : २० मई १९०० कौसानी (उ.खं.) **मृत्यु** : २८ दिसंबर १९७७

परिचय : पंत जी छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं । वे प्रकृति के साथ–साथ मानव सौंदर्य और आध्यात्मिक चेतना के भी कुशल कवि थे ।

प्रमुख कृतियाँ : वीणा, गुंजन, पल्लव, ग्राम्या, चिदंबरा, कला और बूढ़ा चाँद आदि (काव्य संग्रह), हार (उपन्यास), साठ वर्षः एक रेखांकन (आत्मकथात्मक संस्मरण)

पद्य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली, सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली, हृदय की कोमल अनुभूतियों का साकार रूप कविता है ।

प्रस्तुत रचना में प्राकृतिक वैभव, सौंदर्य, निसर्गरम्य अनुभूति–उदात्तता, आध्यात्मिकता, अद्‌भुत भाषा प्रभाव एवं वर्णन शैली का साक्षात्कार होता है ।





https://youtu.be/CTWrBxcysOU

अपलक तारापथ शशिमुख का
बनता लेखा दर्पण,
यहीं शैल कंधों पर सोया
जगता गंध समीरण !

सद्यः स्फुट सौंदर्य राशि
सम्मोहन भरती मन में,
कितना विस्मयकर वैचित्र्य
भरा पर्वत जीवन में !

खग चखते फल,
कुतर रहीं गिलहरियाँ कोंपल,
वन-पशु सब लगते प्रसन्न
परिचित मरकत आँगन में !

स्वाभाविक,
यदि मुझे याद आता
ईश्वर इस क्षण में !
जड़ जग इतना सुंदर जब
चेतन जग में क्या कारण
रहता अहरह जो
विषण्ण जीवन मन का संघर्षण ?

मनुज प्रकृति का करना फिर
नव विश्लेषण, संश्लेषण,-
ईश्वर का प्रतिनिधि नर,
अभिशापित हो उसका जीवन ?
लगता, अपनी क्षुद्र अहंता ही में
सीमित, केंद्रित,
छिन्न हो गया विश्व चेतना से
मानव मन निश्चित !

—०—

('पतझड़' से)

पठनीय

निम्न शब्द पढ़िए । शब्द पढ़ने के बाद जो भाव आपके मन में आते हैं वे कक्षा में सुनाइए ।

नदी, पर्वत, वृक्ष, चाँद

शब्द संसार

श्लक्ष्ण (वि.) = मधुर
अनिल (पुं.सं.) = पवन
अहरह (क्रि.वि.) = प्रतिदिन
मुकुल (स्त्री.सं.) = कली
मँझधार (स्त्री.सं.) = बीचोबीच, लहरों के बीच
शैल (पुं.सं.) = पर्वत
समीरण (पुं.सं.) = पवन
मरकत (पुं.सं.) = पन्ना (एक रत्न)
निर्जन (वि.) = वीरान
अपलक (वि.) = बिना पलक झपकाए
वैचित्र्य (भा.सं.) = अनोखापन

कल्पना पल्लवन

किसी कार्यालय में नौकरी पाने हेतु साक्षात्कार देने वाले और लेने वाले व्यक्तियों के बीच होने वाला संवाद लिखिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : –

(क) संजाल :

- कविता में आए प्राकृतिक सौंदर्य के घटक

(ख) कविता की पंक्तियों को उचित क्रमानुसार लिखकर प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :

(१) परिचित मरकत आँगन में
(२) अभिशापित हो उसका जीवन ?
(३) अनिल स्पर्श से पुलकित तृणदल
(४) निश्चल तरंग-सी स्तंभित

प्रवाह तख्ता

श्रवणीय

नीरज जी द्वारा लिखित कोई कविता यू ट्यूब पर सुनिए और उसके केंद्रीय भाव पर चर्चा कीजिए ।

(२) कविता द्वारा प्राप्त संदेश लिखिए ।

(३) कविता के तृतीय चरण का भावार्थ सरल हिंदी में लिखिए ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित मुहावरे/कहावतों में से अनुपयुक्त शब्द काटकर उपयुक्त शब्द लिखिए :

मुहावरे - कहावतें

१. टोपी पहनना –
२. कमर बंद करना –
३. गेहूँ गीला होना –
४. नाक की किरकिरी होना –
५. धरती सर पर उठाना –
६. लाठी पानी का बैर –

रचना बोध

....
....
....

७. शिष्टाचार

– भीष्म साहनी

संभाषणीय

'आपके व्यवहार में शिष्टाचार झलकता है' इस विषय पर चर्चा कीजिए :–

कृति के आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से शिष्टाचार संबंधी प्रश्न पूछें ● विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं बताने के लिए कहें ● विद्यालय के शिक्षकों से कैसा व्यवहार करते हैं, कहलवाएँ । ● शिष्टाचार से होने वाले लाभ बताने लिए कहें और उनके शिष्टाचार पर चर्चा कराएँ ।

जब तीन दिन की अनथक खोज के बाद बाबू रामगोपाल एक नौकर ढूँढ़कर लाए तो उनकी क्रुद्ध श्रीमती और भी बिगड़ उठीं । पलंग पर बैठे-बैठे उन्होंने नौकर को सिर से पाँव तक देखा और देखते ही मुँह फेर दिया ।

''यह बनमानस कहाँ से पकड़ लाए हो ? इससे मैं काम लूँगी या इसे लोगों से छिपाती फिरूँगी ?'' इसका उत्तर बाबू रामगोपाल ने दिया ।

''जानती हो, तलब क्या होगी ? केवल बारह रुपए । .... सस्ता नौकर तुम्हें आजकल कहाँ मिलेगा ?''

'तो काम भी वैसा ही करता होगा,' श्रीमती बोलीं ।

'यह मैं क्या जानूँ ? नया आदमी है, अभी अपने गाँव से आया है ।'

श्रीमती जी की भौंवें चढ़ गईं, ''तो इसे काम करना भी मैं सिखाऊँगी ? अब मुझपर इतनी दया करो, जो किसी दूसरे नौकर की खोज में रहो । जब मिल जाए तो मैं इसे निकाल दूँगी ।''

बाबू रामगोपाल तो यह सुनकर अपने कमरे में चले गए और श्रीमती दहलीज पर खड़े नौकर का कुशल-क्षेम पूछने लगीं । नौकर का नाम हेतू था और शिमला के नजदीक एक गाँव से आया था । चपटी नाक, छोटा माथा, बेतरह से दाँत, मोटे हाथ और छोटा-सा कद, श्रीमती ने गलत नहीं कहा था । नाम-पता पूछ चुकने के बाद श्रीमती अपने दाएँ हाथ की उँगली पिस्तौल की तरह हेतू की छाती पर दागकर बोलीं, ''अब दोनों कान खोलकर सुन लो । जो यहाँ चोरी-चकारी की तो सीधा हवालात में भिजवा दूँगी । जो यहाँ काम करना है तो पाई-पाई का हिसाब ठीक देना होगा ।''

श्रीमती जी का विचार नौकरों के बारे में वही कुछ था, जो अकसर लोगों का है कि सब झूठे, गलीज और लंपट होते हैं । किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता । सभी झूठ बोलते हैं, सभी पैसे काटते हैं और सभी हर वक्त नौकरी की तलाश में रहते हैं, जो मिल जाए तो उसी वक्त घर से बीमारी की चिट्ठी मँगवा लेते हैं । श्रीमती जी का व्यवहार नौकरों के साथ नौकरों का-सा ही था । यों भी घर में उनकी हुकूमत थी । जब उन्हें पतिदेव पर गुस्सा आता तो अंग्रेजी में बात करतीं और जब नौकर पर गुस्सा आता तो गालियों में बात करतीं । दोनों की लगाम खींचकर रखतीं । उनकी तेज नजर पलंग पर बैठे-बैठे भी नौकर के हर काम की जानकारी रखती कि

परिचय

जन्म : ८ अगस्त १९१५ रावलपिंडी (अविभाजित भारत)
मृत्यु : ११ जुलाई २००३
परिचय : बहुमुखी प्रतिभा के धनी भीष्म साहनी जी ने सामाजिक विषमता, संघर्ष, मानवीय करुणा, मानवीय मूल्य, नैतिकता को अपनी लेखनी का आधार बनाया ।
प्रमुख कृतियाँ : भाग्य-रेखा, पहला पाठ, भटकती राख, निशाचर आदि (कहानी संग्रह), झरोखे, तमस, कुंतो, नीलू नीलिमा नीलोफर आदि (उपन्यास), कबिरा खड़ा बाजार में, माधवी आदि (नाटक), आज के अतीत (आत्मकथा)

गद्‌य संबंधी

चरित्रात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, एवं चरित्रपूर्ण कहानी है ।

'शिष्टाचार' कहानी के माध्यम से साहनी जी ने पति-पत्नी, नौकर-मालिक के संबंध, उनके प्रति दृष्टिकोण, नौकर का अपने मालिक के प्रति कर्तव्यबोध, अनजाने में किए गए कार्य का पश्चात्ताप आदि विविध स्थितियों को बड़े ही मनोरंजक एवं मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

नौकर ने कितना घी इस्तेमाल किया, कितनी रोटियाँ निगल गया है । अपनी चाय में कितने चम्मच चीनी उड़ेली है । जासूसी नॉवेलों की शिक्षा के फलस्वरूप उन्हें नौकरों की हर क्रिया में षड्‍यंत्र नजर आता था ।

काम चलने लगा । हेतू अरूप तो था ही, उसपर उजड्ड और गँवार भी निकला । उसके मोटे-मोटे स्थूल हाथों से काँच के गिलास टूटने लगे, परदों पर धब्बे पड़ने लगे और घर का काम अस्त-व्यस्त रहने लगा । श्रीमती दिन में दस-दस बार उसे नौकरी से बरखास्त करतीं । पर तब भी हेतू की पीठ मजबूत थी । दिन कटने लगे और बाबू रामगोपाल की खोज दूसरे नौकर के लिए शिथिल पड़ने लगी । नौकर उजड्ड और अरूप था, पर दिन में केवल दो बार खाता था । उसपर वेतन केवल बारह रुपए । जो किसी चीज का नुकसान करता तो उसकी तनख्वाह कटती थी । दिन बीतने लगे, हेतू के कपड़े मैले होकर जगह-जगह से फटने लगे, मुँह का रंग और गहरा होने लगा और गाँव का भोला धीरे-धीरे एक शहरी नौकर में तब्दील होने लगा । इसी तरह तीन महीने बीत गए ।

पर यहाँ पहुँचकर श्रीमती एक भूल कर गईं । श्रीमान और श्रीमती जी का एक छोटा-सा बालक था, जो अब चार-आठ बरस का हो चला था और प्रथानुसार उसके मुंडन संस्कार के दिन नजदीक आ रहे थे । पूरे घर में बड़े उत्साह और प्यार से मुंडन की तैयारियाँ होने लगीं । बेटे के वात्सल्य ने श्रीमती जी की आँखें आटे, दाल और घी से हटाकर रंग-बिरंगे खिलौनों और कपड़ों की ओर फेर दीं, शामियाने और बाजे का प्रबंध होने लगा । मित्रों-संबंधियों को निमंत्रण-पत्र लिखे जाने लगे और धीरे-धीरे चाबियों का गुच्छा श्रीमती जी के दुपट्टे के छोर से निकलकर नौकर के हाथों में रहने लगा ।

आखिर वह शुभ दिन आ पहुँचा । श्रीमान और श्रीमती के घर के सामने बाजे बजने लगे । मित्र-संबंधी मोटरों व ताँगों पर बच्चे के लिए उपहार ले-लेकर आने लगे । फूलों, फानूसों और मित्र मंडली के हास्य-विनोद से घर का सारा वातावरण जैसे खिल उठा था । श्रीमान और श्रीमती काम में इतने व्यस्त थे कि उन्हें पसीना पोंछने की भी फुरसत नहीं थी ।

ऐन उसी वक्त हेतू कहीं बाहर से लौटा और सीधा श्रीमान के सामने आ खड़ा हुआ ।

''हुजूर, मुझे छुट्‍टी चाहिए, मुझे घर जाना है ।''

श्रीमान उसी वक्त दरवाजे पर खड़े अतिथियों का स्वागत कर रहे थे, हेतू के इस अनोखे वाक्य पर हैरान हो गए ।

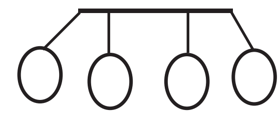
''क्या बात है ?''

''हुजूर, मुझे घर बुलाया है, मुझे आप छुट्‍टी दे दें ।''

''छुट्‍टी दे दें । आज के दिन तुम्हें छुट्‍टी दे दूँ ?'' श्रीमान का क्रोध

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(१) गद्‍यांश में 'हेतू' की बताई गई विशेषताएँ :



(२) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्दों हों :

१. बरखास्त २. हेतू

(३) कारण लिखिए ।

१. रामगोपाल जी की नौकरों की खोज शिथिल हुई

२. हेतु की तनख्वाह से कटौती होती ......

(४) 'नौकर और मालिक के बीच सौहार्दपूर्ण व्यवहार होना चाहिए'-स्वमत लिखिए ।



'व्यक्तित्व विकास' संबंधी कोई लेख पढ़िए ।

उबलने लगा, ''जाओ अपना काम देखो । छुट्टी-वुट्टी नहीं मिल सकती । मेहमान खाना खाने वाले हैं और इसे घर जाना है ।'' हेतू फिर भी खड़ा रहा, अपनी जगह से नहीं हिला । श्रीमान झुँझला उठे ।

''जाते क्यों नहीं ? छुट्टी नहीं मिलेगी ।''

फिर भी जब हेतू टस-से-मस न हुआ तो श्रीमान का क्रोध बेकाबू हो गया और उन्होंने छूटते ही हेतू के मुँह पर एक चाँटा दे मारा ।

''उल्लू के पट्ठे यह वक्त तूने छुट्टी माँगने का निकाला है ।''

चाँटे की आवाज दूर तक गई । बहुत से मित्र-संबंधियों ने भी सुनी और आँखें उठाकर भी देखा, मगर यह देखकर कि केवल नौकर को चाँटा पड़ा है, आँखें फेर लीं ।

श्रीमती को जब इसकी सूचना मिली तो वह जैसे तंद्रा से जागीं । हो न हो, इसमें कोई भेद है । मैं भी कैसी मूर्ख, जो इस लंपट पर विश्वास करती रही और सब ताले खोलकर इसके सामने रख दिए । इसने न मालूम किस-किस चीज पर हाथ साफ किया है, जो आज ही के दिन छुट्टी माँगने चला आया है । भागी हुई बाहर आई और बरांडे में खड़ी होकर हेतू को फटकारने लगीं । उन्होंने वह कुछ कहा, जो हेतू के कानों ने पहले कभी नहीं सुना था । कुछ एक संबंधी इकट्ठे हो गए और जलसे में विघ्न पड़ता देखकर श्रीमान को समझाने लगे । एक ने हेतू से पूछा, ''क्यों, घर क्यों जाना चाहते हो ?''

''क्या काम है ?''

हेतू ने फिर धीरे से कह दिया ।

''जी काम है ।''

इसपर श्रीमती का गुस्सा और भड़क उठा, मगर बाकी लोग तो बात को निबटाना चाहते थे, हेतू को चुपचाप धकेलकर परे हटा दिया । फिर पति-पत्नी में परामर्श हुआ । दोनों इस नतीजे पर पहुँचे कि इस वक्त चुप हो जाना ही ठीक है । मुंडन के बाद इसका इलाज सोचेंगे । हेतू बजाय इसके कि फिर काम में जुट जाता, बरांडे के एक कोने में जाकर बैठ गया और न हूँ न हाँ, चुपचाप इधर-उधर ताकने लगा । इस पर श्रीमान आपे से बाहर होने लगे । पहले तो देखते रहे, फिर उसके पास जाकर उससे कड़ककर बोले , ''काम करेगा या मैं किसी को बुलाऊँ ?''

हेतू ने फिर वही रट लगाई ।

''साहब, मुझे जाने दो, मैं जल्दी लौट आऊँगा, मुझे काम है ।''

आखिर जब जलसे में बहुत से लोगों का ध्यान उसी तरफ जाने लगा तो दो-एक मित्रों ने सलाह दी कि उसका नाम-पता लिख लिया जाए, उसकी तनख्वाह रोक ली जाए और उसे जाने दिया जाए । श्रीमान ने अपनी डायरी खोली, उसपर हेतू का पूरा पता लिखा, नीचे अँगूठा लगवाया और धक्के मारकर बाहर निकाल दिया ।

श्रवणीय

अपने गाँव/शहर में आए हुए किसी अपरिचित व्यक्ति की मदद के बारे में किसी बुजुर्ग से सुनिए और अपने विचार सुनाइए ।

आसपास

बैंक / डाकघर में जाकर वहाँ के कर्मचारी एवं ग्राहकों के बीच होने वाले व्यवहारों का निरीक्षण कीजिए तथा उन व्यवहारों के संबंध में अपनी उचित सहमति या असहमति प्रकट कीजिए ।

दूसरे दिन श्रीमती ने अपना ट्रंक खोलकर अपनी चीजों की पड़ताल शुरू की । अपने जेवर, सिल्क के जड़ाऊ सूट, चाँदी के बटन, एक-एक करके जो याद आया, गिन डाला । मगर बड़े घरों में चीजों की सूची कहाँ होती है और एक-एक चीज किसे याद रह सकती है। श्रीमती जल्दी ही थककर बैठ गईं ।

''तुमने उसे जाने क्यों दिया ? कभी कोई नौकरों को यों भी जाने देता है? अब मैं क्या जानूँ क्या-क्या उठा ले गया है ।''

''जाएगा कहाँ ? उसकी तीन महीने की तनख्वाह मेरे पास है ।''

''वाह जी, सौ-पचास की चीज ले गया तो बीस रुपए तनख्वाह की वह चिंता करेगा ?''

''तुम अपनी चीजों को अच्छी तरह देख लो । अगर कोई चीज भी गायब हुई तो मैं पुलिस में इत्तला कर दूँगा । मैंने उसका पता-वता सब लिख लिया है ।''

''तुम समझे बैठे हो कि उसने तुम्हें पता ठीक लिखवाया होगा ?''

दूसरा नौकर आ गया और घर का काम पहले की तरह चलने लगा । जब श्रीमती जी को कोई चीज न मिलती तो वह हेतू को गालियाँ देतीं, पर श्रीमान धीरे-धीरे दिल ही दिल में अफसोस करने लगे । कई बार उनके जी में आया कि उसके पैसे मनीऑर्डर द्‌वारा भेज दें, मगर फिर कुछ श्रीमती के डर से, कुछ अपने संदेश के कारण रुक जाते ।

एक दिन शाम का वक्त था । थके हुए श्रीमान दफ्तर से घर लौट रहे थे, जब उनकी नजर सड़क के पार एक धर्मशाला के सामने खड़े हुए हेतू पर पड़ गई । वही फटे हुए कपड़े वही शिथिल अरूप चेहरा । उन्हें पहचानने में देर नहीं लगी । झट से सड़क पार करके हेतू के सामने जा खड़े हुए और उसे कलाई से पकड़ लिया ।

''अरे तू कहाँ था इतने दिन? गाँव से कब लौटा?''

''अभी-अभी लौटा हूँ साहब ।'' हेतू ने जवाब दिया।

''काम कर आया है अपना ।''

हेतू ने धीरे से कहा –

''जी ।''

''कौन-सा ऐसा जरूरी काम था, जो जलसेवाले दिन भाग गया?''

हेतू चुप रहा ।

''बोलते क्यों नहीं, क्या काम था? मैं कुछ नहीं कहूँगा, सच-सच बता दो ।''

सहसा हेतू की आँखों में आँसू आ गए । होंठ बात करने के लिए खुलते, मगर फिर बंद हो जाते । बार-बार आँसू छिपाने का यत्न करता, मगर आँखें ऐसी छलक आई थीं कि आँसुओं को रोकना असंभव हो गया था ।

बाबू रामगोपाल पसीज उठे ।



https://youtu.be/ei_Ine1o0eA

‘‘अच्छा, क्या बात है ?’’ उसका कंधा सहलाते हुए बोले ।

‘‘जी मेरा बच्चा मर गया था ।’’ लड़खड़ाती हुई आवाज में हेतू ने कहा ।

बाबू रामगोपाल को सुनकर दुख हुआ । थोड़ी देर तक चुपचाप खड़े उसके मुँह की ओर देखते हैं, फिर बोले, ‘‘मगर तुमने उस वक्त कहा क्यों नहीं ? तुमसे बार-बार पूछा गया, मगर तुम कुछ भी न बोले ?’’

‘‘क्यों ?’’ हेतू ने धीरे से कहा, ‘जी वहाँ कैसे कहता ।’

‘‘खुशीवाले घर में यह नहीं कहते । हमारे गाँव में इसे बुरा मानते हैं ।’’

और श्रीमान स्तब्ध और हैरान उस उजड्ड गँवार के मुँह की ओर देखने लगे ।

—०—

शब्द संसार

अनथक (वि.) = जो थके नहीं, बिना थके

षड्यंत्र (पुं.सं.) = कपटपूर्ण योजना

तब्दील (क्रिया.) = बदलना, परिवर्तन

अफसोस (पुं.फा.) = पश्चात्ताप

पसीजना (क्रि.) = पिघलना

मुहावरे

मुँह फेरना = दुर्लक्ष्य करना, ध्यान न देना

बरखास्त करना = अपदस्थ करना, निकाल देना

टस-से-मस न होना = दृढ़ रहना, कहने का प्रभाव न पड़ना

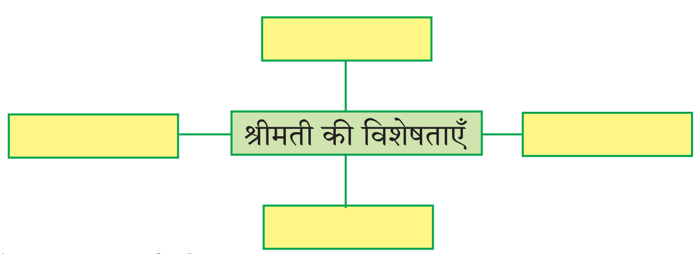
बेकाबू होना = अनियंत्रित होना

हाथ साफ करना = चोरी करना, सामान गायब करना ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए :-

(क) संजाल -



(ख) विधानों के सामने दी हुई चौखट में सत्य/असत्य लिखिए :-

१. अगले दिन श्रीमती ने अपना ट्रंक खोलकर अपनी चीजों की पड़ताल शुरू की । [ ]

२. सहसा हेतू की आँखों में आँसू आ गए । [ ]

(ग) श्रीमती के नौकरों के बारे में विचार -

१. [ ]

२. [ ]

३. [ ]

मौलिक सृजन

निम्नलिखित मुद्‌दों के उचित क्रम लगाकर उनके आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

[मुद्‌दों का उचित क्रम लगाना आवश्यक है ।]

- मन में निश्चय
- लोगों का जुड़ना
- एक लड़का
- छुट्‌टियों में गाँव आना
- कुआँ पानी से भरना
- कुआँ तैयार होना
- लोगों का खुश होना
- सीख,शीर्षक
- कुआँ खोदने का प्रारंभ
- शहर के महाविद्‌यालय में पढ़ना
- लोगों का हँसना
- प्रतिवर्ष सूखे की समस्या का सामना
- एक मित्र का साथ देना

पाठ से आगे

'मानवता ही श्रेष्ठ धर्म है' विचार को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु

दिए गए अव्यय भेदों के वाक्य पाठ्‌यपुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए :–

अव्यय

क्रियाविशेषण अव्यय	समुच्चयबोधक अव्यय
....	....
....	....

संबंधबोधक अव्यय	विस्मयादिबोधक अव्यय
....	....
....	....

रचना बोध

....

....

....

८. उड़ान

– चंद्रसेन विराट

संभाषणीय

विद्‌यालय के काव्यपाठ कार्यक्रम में सहभागी होकर कविता प्रस्तुत कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● काव्यपाठ का आयोजन करवाएँ । ● विषय निर्धारित करें । ● विद्‌यार्थियों को निश्चित विषय पर काव्यपाठ प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

अँधेरे के इलाके में किरण माँगा नहीं करते
जहाँ हो कंटकों का वन, सुमन माँगा नहीं करते ।

जिसे अधिकार आदर का, झुका लेता स्वयं मस्तक
नमन स्वयमेव मिलते हैं, नमन माँगा नहीं करते

परों में शक्ति हो तो नाप लो उपलब्ध नभ सारा
उड़ानों के लिए पंछी, गगन माँगा नहीं करते ।

जिसे मन–प्राण से चाहा, निमंत्रण के बिना उसके
सपन तो खुद–ब–खुद आते, नयन माँगा नहीं करते ।

जिन्होंने कर लिया स्वीकार, पश्चात्ताप में जलना
सुलगते आप, बाहर से, अगन माँगा नहीं करते ।

****

जिसकी ऊँची उड़ान होती है ।
उसको भारी थकान होती है ।

बोलता कम जो देखता ज्यादा,
आँख उसकी जुबान होती है ।

बस हथेली ही हमारी हमको,
धूप में सायबान होती है ।

एक बहरे को एक गूँगा दे,
जिंदगी वो बयान होती है ।

तीर जाता है दूर तक उसका,
कान तक जो कमान होती है ।

खुशबू देती है, एक शायर की,
जिंदगी धूपदान होती है ।

—०—

परिचय

जन्म : ३ दिसंबर १९३६ इंदौर (म.प्र.)
परिचय : हिंदी गजल के इतिहास में चंद्रसेन विराट जी का नाम शीर्षस्थ गजलकारों में है । आपने नवगीतों और गजलों से मिलीजुली मुक्तिकाओं में आम आदमी के जीवन को गहराई से देखा है ।
प्रमुख कृतियाँ : मेंहदी रची हथेली, स्वर के सोपान, मिट्‌टी मेरे देश की, धार के विपरीत आदि (गीत संग्रह), आस्था के अमलतास, कचनार की टहनी, न्याय कर मेरे समय आदि (गजल संग्रह) कुछ पलाश कुछ पाटल, कुछ सपने, कुछ सच आदि (मुक्तक संग्रह)

पद्‌य संबंधी

गजल : गजल एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गए शेरों का समूह है । इसके पहले शेर को मतला और अंतिम शेर को मकता कहते हैं ।

प्रस्तुत रचनाओं में विराट जी ने स्वाभिमान, विनम्रता, हौसलों, बुलंदी, दूरदृष्टि जैसे अनेक मानवीय गुणों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है ।

शब्द संसार

अगन (पुं.सं.) = अग्नि, आग
सायबान (पुं.फा.) = छाया देने वाला
बयान (पुं.सं.) = वक्तव्य
तीर (पुं.सं.) = बाण
कमान (स्त्री.फा.) = धनुष

पठनीय

'दहेज' जैसी सामाजिक समस्याओं को समझते हुए इसके संदर्भ में जनजागृति करने हेतु घोषवाक्यों का वाचन कीजिए ।

श्रवणीय

हिंदी-मराठी भाषा के प्रमुख गजलकारों की गजल रचना सुनिए और सुनाइए ।

कल्पना पल्लवन

'मैं चिड़िया बोल रही हूँ' इस विषय पर स्वयंप्रेरणा से लेखन कीजिए ।

आसपास

अंतरजाल की सहायता लेकर कोई कविता पढ़िए और निम्न मुद्दों के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए :-

- कवि का नाम
- कविता का विषय
- केंद्रीय भाव
- कविता का संदेश

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए लिखिए :-

✲ सही विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

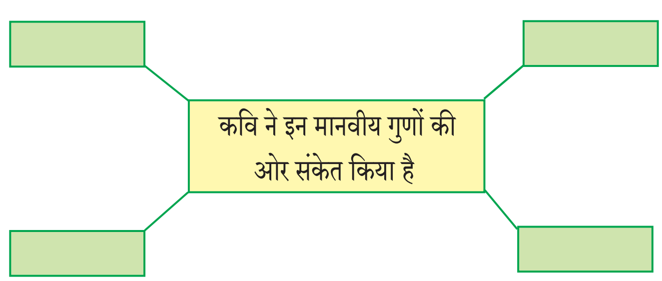
(क) परो में शक्ति हो तो ....

१. उपलब्ध नभ को नापना है ।
२. उपलब्ध जल को नापना है ।
३. भू को नापना है ।

(ख) सुलगते आप, बाहर से

१. तपन नहीं माँगा करते ।
२. अगन नहीं माँगा करते ।
३. बुझन नहीं माँगा करते ।

(४) संजाल :-



(२) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का सरल भावार्थ लिखिए:-

अँधेरे के इलाके में .... नमन माँगा नहीं करते ।

(३) कविता द्वारा दिया गया संदेश अपने शब्दों में लिखिए ।

(४) कविता में प्रयुक्त विरामचिह्नों के नाम लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

९. मेरे पिता जी

(पूरक पठन)

– डॉ. हरिवंशराय बच्चन

पॉयनियर प्रेस में प्रताप की समय की पाबंदी, शुद्ध-स्वच्छ लिखावट, सही-साफ हिसाब-किताब रखने की आदत, विनम्र-निश्चल व्यवहार ने बहुत जल्दी उनको विशिष्टता दे दी । अपना काम खत्म कर वे सहयोगी क्लार्कों का पिछड़ा काम भी अपनी मेज पर रख लेते और दफ्तर बंद हो जाने के घंटों बाद, रात देर तक काम में जुटे रहते । इस प्रकार वे अधिकारियों और सहकर्मियों, दोनों के प्रिय बन गए । घर से दफ्तर चार मील होगा; कुछ कम भी हो सकता है । फासले के मामले में मेरा अनुमान हमेशा गलत होता है-ज्यादा की तरफ । वे पैदल ही आते-जाते शायद पैसे बचाने की गरज से, साइकिल न उन्होंने खरीदी, न उसकी सवारी की ।

दफ्तर के लिए उन्होंने एक तरह की पोशाक अपनाई और जितने दिन दफ्तर में गए उसी में गए-काला जूता, ढीला पाजामा, अचकन जो उनके लंबे-इकहरे शरीर पर खूब फबती थी और दुपल्ली टोपी । जाड़ों में मेरी माँ के हाथ का बुना ऊनी गुलूबंद उनके गले में पड़ा रहता था । दफ्तर से बाहर के लिए वे धोती पर बंद गले का कोट पहनते थे, सिर पर फेल्ट कैप जो उन दिनों विलायत से आती थी और काफी महँगी होती थी । पिता जी बाहर निकलते तो छाता उनके हाथ में जरूर होता । मौसम साफ हो और रात हो तो वे छड़ी लेकर चलते थे, पर पतली नहीं अच्छी मोटी-मजबूत । लंबी लाठी मेरे घर में नहीं थी, पर लाठी चलाने की तालीम पिता जी ने कभी जरूर ली होगी । मुझे एक बार की याद है । शहर में किसी कारण हिंदू-मुस्लिम दंगा हो गया था ।

पिता जी ने धोती ऊपर कर ली, कुरते की बाँहे चढ़ा लीं और अपना पहाड़ी मोटा डंडा दाहिने हाथ से कंधे पर सँभाले, बायाँ हाथ तेजी से हिलाते, नंगे पाँव आगे बढ़े । उन्होंने उनके पास जाकर कहा, ''मैं लड़ने नहीं आया हूँ । लड़ने को आता तो अपने साथ औरों को भी लाता । डंडा केवल आत्मरक्षा के लिए साथ है, कोई अकेला मुझे चुनौती देगा तो पीछे नहीं हटूँगा । मर्द की लड़ाई बराबर की लड़ाई है, चार ने मिलकर एक को पीट दिया तो क्या बहादुरी दिखाई । अकेले सिरफिरे की बात समझी जा सकती है; चार आदमी मिलें तो उन्हें कुछ समझदारी की बात करनी चाहिए । इस तरह की लड़ाई तो बे-समझी की लड़ाई है, कहीं किसी ने किसी को मारा, आपने दूसरी जगह किसी दूसरी को मार दिया । धरम का नाता है तो पास-पड़ोस इन्सानियत का नाता भी है । इन्सान मेल से रहने को बना है । लड़ाई कितने दिन चलेगी,

परिचय

जन्म : २७ नवंबर १९०७ प्रतापगढ़ (उ.प्र)
मृत्यु : १८ जनवरी २००३
परिचय : हरिवंशराय 'बच्चन' जी हिंदी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक है । 'मधुशाला' उनकी अत्यंत प्रसिद्ध रचना है जिसने लोकप्रियता के नए कीर्तिमान स्थापित किए ।
प्रमुख कृतियाँ : मधुशाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, खादी के फूल, हलाहल, धार के इधर उधर आदि (कविता संग्रह), क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक (आत्मकथा के ४ खंड)

गद्य संबंधी

आत्मकथा: हिंदी साहित्य में गद्य की एक विधा है । आत्मकथा में व्यक्ति स्वयं अपने जीवन की कथा, स्मृतियों के आधार पर लिखता है । निष्पक्षता आत्मकथा का आवश्यक पक्ष है ।

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से 'बच्चन' जी ने अपने पिता के रहन-सहन, व्यक्तित्व, दृढ़ता, स्वाभिमान, कर्तव्यनिष्ठा आदि गुणों के साथ-साथ देश-काल परिस्थिति एवं स्वयं में आए संस्कारों एवं परिवर्तनों को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है ।

दो दिन, चार दिन; पाँचवें दिन फिर सुलह से रहना होगा । दोन-चार, दस-बारह, सौ-पचास हिंदू-मुसलमानों के कट-मरने से न हिंदुत्व समाप्त होगा न इस्लाम खत्म होगा । साथ रहना है तो खूबी इसी में है कि मेल से रहें । एक-दूसरे से टकराने की जरूरत नहीं; दुनिया बहुत बड़ी है ।'

पिता जी की बातों का असर हुआ । उस दंगे में फिर कोई वारदात नहीं हुई । आगे भी कई बार जब शहर में हिंदू-मुस्लिम दंगे हुए, हमारे मुहल्ले में शांति बनी रही ।

मेरे पिता का दैनिक जीवन प्रायः एक ढर्रे पर चलने वाला, नियमबद्ध और नैमित्तिक था । वे सवेरे तीन बजे उठते, शौचादि से निवृत्त होते और ठीक साढ़े तीन बजे गंगा स्नान के लिए चले जाते । पैदल आते; गंगा जी घर से तीन-चार मील के फासले पर होंगी । वे ठीक साढ़े छह बजे नहाकर लौटते, साथ में एक सुराही गंगाजल भी लाते, और पूजा पर बैठ जाते । पूजा के लिए जीने के नीचे एक छोटी-सी कोठरी थी; बगल की दीवार में एक अलमारी थी; उसपर एक बस्ते में बँधी दो पुस्तकें रखी रहतीं, एक रामचरित मानस और दूसरी गीता । पूजा की कोठरी में कोई मूर्ति न थी, दीवार से राम, कृष्ण, शिव, गणेश, हनुमान, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा की शीशे जड़ी छोटी-छोटी तस्वीरें लटकी थीं । पिता जी को बहुत झुककर उस कोठरी में जाना होता और अब वे उसमें बैठ जाते तो बस इतनी ही जगह बचती कि सामने रेहल रखकर उसपर पोथियाँ खोली जा सकें । वे मानस का नवाहिक पाठ करते थे, यानी प्रतिदिन इतना कि नौ दिन में पूरी रामायण समाप्त हो जाए । उनकी मानस की पोथी में, जो अब तक मेरे पास है, उन्हीं के हाथ के नवाहिक के निशान लगे हैं । पाठ वे सस्वर करते थे । उनकी आवाज सुरीली नहीं थी; गाते मैंने उनको कभी नहीं सुना, पर उनका स्वर साफ, सप्राण और लयपूर्ण था और कोठरी से निकली उनकी आवाज सारे घर में गूँजती थी । आवाज की पहली स्मृति मुझे उन्हीं के मानस पाठ के स्वर की है और जब तक मैं उनके साथ रहा प्रतिदिन उनके पास का स्वर मेरे कानों में गया । मैं कल्पना करता हूँ कि सौरी में जन्म के पहले दिन से ही मैंने उनका पाठ स्वर सुनना शुरू कर दिया होगा । सौरी, पूजा की कोठरी के सामने दालान के एक सिरे पर बनाई जाती थी । राधा बताया करती थीं कि जब मैं बच्चा था तब चाहे कितना ही रोता क्यों न होऊँ जैसे ही मेरा खटोला पूजा की कोठरी के सामने लाकर डाल दिया जाता था, मैं चुप हो जाता था । जैसे मैं भी पिता जी का मानस पाठ सुन रहा होऊँ । मेरी माता तथा परिवार के अन्य लोग इसमें मेरे पूर्व जन्म के धार्मिक संस्कार की कल्पना करते थे । अब मैं ऐसा समझता हूँ यह मेरे पिता जी के स्वर की लिफ्ट या लय थी जो मुझे शांत कर देती थी । इतना मैं जरूर मानता हूँ कि इन श्रवण संस्कारों ने उस समय अद्‌भुत रूप से मेरी सहायता की होगी जब मैं गीता को 'जनगीता' का रूप दे रहा था, अवधी भाषा में, मानस की शैली में । अज्ञात

२) निम्नलिखित **अपठित** गद्‌यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

१) कारण लिखिए :-

क) विमान के प्रति लेखक का आकर्षित होना -

ख) लेखक का एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना अध्ययन क्षेत्र चुनना -

पहली बार मैंने एम. आई. टी. में निकट से विमान देखा था, जहाँ विद्‌यार्थियों को विभिन्न सब- सिस्टम दिखाने के लिए दो विमान रखे थे । उनके प्रति मेरे मन में विशेष आकर्षण था । वे मुझे बार - बार अपनी ओर खींचते थे । मुझे वे सीमाओं से परे मनुष्य की सोचने की शक्ति की जानकारी देते थे तथा मेरे सपनों को पंख लगाते थे । मैंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना अध्ययन क्षेत्र चुना क्योंकि उड़ान भरने के प्रति मैं आकर्षित था । वर्षों से उड़ने की अभिलाषा मेरे मन में पलती रही । मेरा सबसे प्यारा सपना यही था कि सुदूर आकाश में ऊँची और ऊँची उड़ान भरती मशीन को हैंडल किया जाए ।

२) स्वमत -

३) 'मेरी अभिलाषा' विषय पर लगभग छह से आठ पंक्तियों में लिखिए ।

रूप से मेरे अवचेतन और ज्ञात रूप से मेरे चेतन की शिरा-शिरा मानस की ध्वनियों से भीगी हुई थी ।

* पिता जी मौन रहकर गीता पढ़ते थे, शायद चिंतन करने की दृष्टि से; मानस में वे बहा करते थे । संस्कृत का उन्हें साधारण ज्ञान था । मानस में आए संस्कृत अंशों को वे शुद्धता और सुस्पष्टता से पढ़ते थे पर संस्कृत से वह उच्चारण सुख अनुभव न करते थे जो अवधी से । कविता सस्वर पढ़ने का मुझे भी शौक है । ब्रज और अवधी की कविता मैं घंटों पढ़ सकता हूँ। मानस का तो सस्वर अखंड पाठ मैंने कई बार किया है, पर मानस की बात ही और है-खड़ी बोली की कविता मैं घंटेभर भी पढ़ूँ तो मेरी जीभ ऐंठने लगती है, उर्दू के साथ यह बात नहीं है । खड़ी बोली कविता ने, कहते हुए खेद होता है, मानस की सूक्ष्म शिराओं को अभी कम ही छुआ है । वह जीवन से उठी हुई कम लगती है, कोष से उतरी हुई अधिक । कारणों पर यहाँ न जाऊँगा ।

पूजा से पिता जी ठीक साढ़े आठ बजे उठते । उस समय तक मेरी माता जी भोजन तैयार कर देतीं । वे रसोई में बैठकर भोजन करते और कपड़े पहन नौ बजते-बजते दफ्तर के लिए रवाना हो जाते । किसी-किसी दिन ऐसा भी होता कि किसी कारण भोजन समय पर तैयार न होता । पिता जी को बहुत गुस्सा आता, माँ काँपने लगतीं, पर गुस्सा निकालने का समय भी उनके पास न होता । वे जल्दी-जल्दी कपड़े पहनते और बगैर खाए दफ्तर के लिए चल पड़ते । अपनी पैंतीस वर्ष की नौकरी में, वे कहा करते थे एक दिन वे दफ्तर देर से नहीं पहुँचे । मेरी माता जी जल्दी-जल्दी पूरियाँ बनातीं और एक डिब्बे में खाना रखकर मुहल्ले के किसी आदमी से दफ्तर भिजवाती और जब तक आदमी मेरे पिता जी को खाना खिलाकर वापस न आ जाता वे भोजन न करतीं । जब कोई जाने वाला न मिलता तो उनका भी दिनभर का उपवास होता । घर की तीन बूढ़ियाँ-राधा, मेरी दादी और महारानी की बातें सुनने को ऊपर से मिलती। मेरी माँ न खातीं तो वे कैसे खातीं, पर अपनी भूख का गुस्सा वे दिनभर माँ पर उतारती रहतीं ।

पिता जी के दफ्तर से लौटने का कोई ठीक समय नहीं था । नौकरी के प्रारंभिक वर्षों में वे प्रायः देर से लौटते थे, आठ-नौ बजे, इससे भी अधिक देरी से, और खाना खाकर सो जाते थे । बाद को जब कुछ जल्दी आने लगे तो खाना खाने से पहले कुछ देर पढ़ते कभी खाना खाने के बाद भी, और कभी तो घूमने निकल जाते । सुबह गंगा स्नान में आने-जाने के आठ मील, दिन को दफ्तर आने-जाने के आठ मील, यानी कुल सोलह मील चल लेने पर भी उनकी चलास तृप्त नहीं होती थी और रात को भी दो-तीन मील घूम-फिर आने को वे तैयार



http://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=1069&pageno=1

रहते थे । तभी तो मैं कहता हूँ कि उन्हें चलने का मर्ज था । सबसे अचरज की बात यह थी कि रात को चाहे जितनी देर से सोएँ, उठते वे सुबह तीन ही बजे थे । उनका कहना था कि नींद लंबाई नहीं गहराई माँगती है । यानी कम घंटों की भी गहरी नींद ज्यादा घंटों की हल्दी नींद का काम कर देती है । उनके इस फारमूले के प्रति विश्वास ने मुझसे अपनी नींद पर कितना अत्याचार कराया है ! इसे सोचकर कभी-कभी मैं कहता हूँ कि जब मैं मरूँ तो मुझे सात-आठ दिन तक यों ही पड़े रहने देना-इस असंभव की कल्पना भर सुखद है-क्योंकि मुझे अपने जीवन की बहुत-सी रातों की नींद पूरी करनी है ।

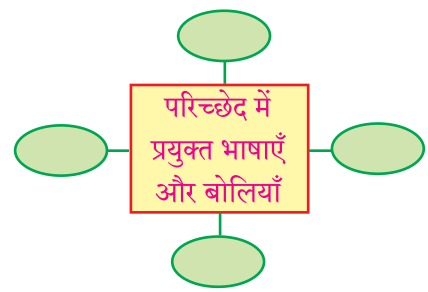
समय की पाबंदी की जो उत्कटता उन्होंने अपनाई थी, उनके निबाहने के लिए घर के लोगों का सहयोग आवश्यक था । उन्हें सेंस ऑफ टाइम-वक्त का अंदाज-देने के लिए पिता जी ने अपनी नौकरी के पहले वर्ष में एक आराम घड़ी खरीदी और लाकर दालान की तिकोनिया पर रख दी । यह घड़ी नई नहीं थी, विक्टोरियन युग की थी, और पॉयनियर के दफ्तर में बहुत दिनों से काम दे रही थी । वहाँ वह 'कंडम' माल की तरह निकाल दी गई तो पिता जी ने शायद दो रुपए में ले ली । यह घड़ी बेहया साबित हुई । थोड़ी-बहुत सफाई के बाद वह चलने लगी-चलने लगी तो चलती ही चली गई । सातवें दिन उसमें चाभी देनी पड़ती, वह एलार्म भी बजाती । उसके कभी घड़ीसाज के यहाँ जाने की मुझे याद नहीं । तिकोनिया और खाली, इसकी कोई तस्वीर मेरे दिमाग में नहीं । मेरे पिता के जीवनपर्यंत वह चलती रही । उनकी मृत्यु को लगभग तीस वर्ष होने आए हैं, अब भी वह चल रही है । मेरे पास नहीं है । मेरी बड़ी बहन के लड़के रामचंद्र (फुटबॉल के अखिल भारतीय प्रसिद्धि के खिलाड़ी) उसे अपने नाना की एक निशानी के रूप में ले गए थे । मैं जब कभी राम के घर जाता हूँ । हिर-फिरकर मेरी आँख उस घड़ी पर जा टिकती है । हमारे घर में कितने जन्म-मरण, शादी-ब्याह, भोजमहोत्सव उसने देखे हैं; कितने हर्ष-विषाद, अश्रु-हास, वाद-विवाद, कितने क्रोध-कलह, रोदन-गायन, श्रम-संघर्ष की वह साक्षी रही है ! मेरी माँ अक्सर कहती थीं कि ''नाम तो एकर आराम घड़ी है, पर न ई खुद आराम करत है न केहू क आराम करै देत है !'' आराम घड़ी नाम ऐसी घड़ियों को शायद इसलिए दिया गया होगा कि ये एक जगह रख दी जाती हैं, 'अलार्म' से 'आराम' आया हो तो भी कोई अचरज की बात नहीं । कभी-कभी 'आराम' का 'आ' भी छोड़ दिया गया है और ऐसी घड़ियों को मैंने लोगों को राम घड़ी भी कहते सुना है ।

—०—

('क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' से)

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

१) संजाल :-



२) 'अपना व्यक्तित्व समृद्ध करने के लिए अलग-अलग भाषाओं का ज्ञान उपयुक्त होता है,' इस पर अपने विचार लिखिए ।

शब्द संसार

नैमित्तिक (वि.) = निमित्यसंबंधी
विलायत (पुं.सं.) = विदेश
वाकचातुर्य (भा.सं.) = वाकपटुता, बोलने में चतुराई
अचेतन (वि.) = चेतनारहित
चलास (भा.सं.) = चलने का शौक

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : –

(क) निम्नलिखित शब्दों को पढ़कर उनके लिए पाठ में प्रयुक्त विशेषताएँ लिखिए :

१. जूता ....
२. पाजामा ....
३. अचकन ....
४. टोपी ....

(ख) 'संयुक्त परिवार' संबंधी अपने विचार लगभग छह से आठ पंक्तियों में लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) विरामचिह्न पढ़ो, समझो :–

विरामचिह्न

स्थान सूचक ...

यह चिह्न सूचियों में खाली स्थान भरने के काम आता है।
जैसे (१) लेख– कविता... (२) बाबू मैथिलीशरण गुप्त ...

अपूर्ण सूचक
XXX

किसी लेख में से जब कोई अंश छोड़ दिया जाता है; तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।
जैसे – तुम समझते हो कि यह बालक है ।
XXX
गाँव के बाजार में वह सब्जी बेचा करता था ।

विरामचिह्न

किसी संज्ञा को संक्षेप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।
जैसे – डॉ. (डाक्टर)
कृ.पी.दे. – कृपया पीछे देखिए ।

संकेत सूचक
.

बहुधा लेख, कहानी आदि पुस्तक की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है । जैसे – इस तरह राजा और रानी सुख से रहने लगे ।
–0–

समाप्ति सूचक –0–

रचना बोध

....
....
....

१०. अपराजेय

– कमल कुमार

संभाषणीय

विद्यालय में आते समय आपको रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त कोई महिला दिखी । आपने उसकी सहायता की, इस घटना का वर्णन कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान : –

● दुर्घटना किस रास्ते पर हुई पूछें । ● महिला घायल होने का कारण बताने के लिए कहें । ● महिला के घरवालों तक समाचार पहुँचाने के लिए किए गए उपाय कहलवाएँ । ● घायल महिला पर क्या प्रथमोपचार किए गए, बताने के लिए कहें ।

स्ट्रेचर को धकेलते हुए वे बड़ी तेजी से अस्पताल के गलियारे से ले जा रहे थे । स्ट्रेचर के पीछे घर के सदस्यों, मित्रों, परिजनों और पड़ोसियों का एक काफिला-सा था । सभी के चेहरों पर अकुलाहट थी । त्वरा से नर्सों ने स्ट्रैचर को ऑपरेशन थिएटर के भीतर धकेला और दरवाजा बंद हो गया । सभी बाहर रुके खड़े थे । अमरनाथ के परिवार के लोग परेशान थे । उनका बेटा अनिल बेंच पर मुँह नीचा किए बैठ गया था । 'धीरज रखो,' चोपड़ा ने उसके कंधे थपथपाए थे ।

'उम्मीद बहुत कम है । डॉक्टर ने कोई आश्वासन नहीं दिया है ।'

'पर हुआ कैसे ?'

दुर्घटना हाईवे पर हुई थी । हम तो दुपहर से ही इंतजार कर रहे थे । दुबारा बाबू जी ने मोबाइल पर बताया कि वे सुबह नहीं निकल सके । इसलिए शाम तक ही पहुँचेंगे । नौ बजे तक वे नहीं पहुँचे तो सब चिंतित हुए । मोबाइल की घंटी बज रही थी, पर कोई उठा नहीं रहा था । रास्ते में रुकना तो उन्हें था ही नहीं । अगर रुकते भी तो फोन पर बता सकते थे । आसपास कई जगह फोन किया । लेकिन कुछ पता नहीं चला । रात के एक बजे हम पुलिस स्टेशन पहुँचे । पुलिस से मदद माँगी । सुबह पाँच बजे फोन आया था । उन्होंने बताया कि इस नंबर की गाड़ी अलवर के रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त हुई थी । दुर्घटनास्थल पर भयावह दृश्य था । किसी के बचने की उम्मीद नहीं थी । अनिल धीरज को साथ लेकर गया था ।

'भगवान मन में चिंता थी । अपनी-अपनी बात कह रहे थे ।

'अमरनाथ जैसा इनसान । उनके साथ भी यही होना था !'

'ट्रकवाला जरूर पिया होगा । परंतु सबूत कोई नहीं था, वह तो रुका ही नहीं वहाँ, टक्कर मारकर निकल गया । इन्सानियत का भी सबूत दिया होता तो ड्राइवर भी बच जाता । अधिक रक्तस्राव से उसकी मृत्यु हुई । दस साल से इस परिवार के साथ था ।'

दस-पंद्रह मिनट का समय भी मुश्किल से गुजर रहा था । अनिल से बताया था तो सबके चेहरे बुझ गए थे । 'यह कैसे हो सकता है ?

परिचय

लेखिका कमल कुमार की कहानियाँ जीवन के अनुभवों की कहानियाँ हैं । इनमें आसक्ति, आस्था, आशा और जीवन का स्पंदन है ।

प्रमुख कृतियाँ : पहचान, क्रमशः फिर से शुरू आदि (कहानी संग्रह) अपार्थ, आवर्तन, हैमबरगर, पासवर्ड आदि (उपन्यास)

गद्‍य संबंधी

वर्णनात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही वर्णन कहानी है ।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखिका ने मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने हेतु तत्पर रहने के लिए प्रेरित किया है ।

बच गया, इसलिए हैरान हो क्या ? मुझे अभी मरना ही नहीं था, इसलिए बच गया ।' वे हँसे थे ।

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि उनसे बात कैसे की जाए । सब चुप थे । अमरनाथ अपनी रौ में कह रहे थे, 'भाग्य-शाली हूँ, इसलिए बच गया । मुझे ड्राइवर का दुख है । अगर मैं उस वक्त बेहोश न हुआ होता तो उसे बचा लेता कभी-भी मरने न देता ।'

सब चुप उनकी बात सुन रहे थे । उनकी तरफ देखकर अमरनाथ ने पूछा था, 'कुछ समस्या ? मुझसे कुछ छिपा रहे हो तुम ! क्या हुआ ?'

अनिल ने डॉक्टर की तरफ देखकर कहा था, आप ही बता दीजिए डॉक्टर ।' डॉक्टर ने अपने को समेटते हुए-सा कहा था, 'अमरनाथ जी, ऐसी दुर्घटना में आप बच गए हैं, यह एक चमत्कार है । अब आप ठीक भी हो जाएँगे । लेकिन... ।' डॉक्टर अटका था । हिम्मत जुटाकर कह दिया था, 'देखिए आपकी टाँग बुरी तरह से कुचली गई है । बिना देखभाल के चार घंटे आप वहाँ पड़े रहे । उनमें जहर फैल गया है । इसलिए...।' वह रुका था ।

'आपकी टाँग काटनी पड़ेगी । नहीं तो शरीर में जहर फैलने का अंदेशा है ।' अमरनाथ ने अपने परिवार के लोगों की तरफ, फिर डॉक्टर की तरफ देखा था और हँसे थे ।

'टाँग ही काटनी है तो काट दो । साठ साल तक इन टाँगों के साथ जिया हूँ । खूब घुमक्कड़ी की है मैंने । देश में, विदेशों में, पहाड़ों पर, समुद्र के किनारे रेगिस्तान में, पठारों में, सभी जगह घूमता रहा हूँ । जीने के लिए सिर्फ टाँगें थोड़ी ही हैं मेरे हाथ हैं देखो !' उन्होंने दोनों हाथ उपर उठाए थे । 'मेरा बाकी शरीर है ।'

वे खुलकर हँसे थे । डॉक्टर ने चैन की साँस ली थी ।

अनिल बढ़कर पिता के गले लग गया था ।

'बाबू जी-ऽ बाबू जी-ऽ'

'अरे ! इसमें ऐसा क्या है ? मेरा जीवन मेरी इस तीन फीट की टाँग से तो बड़ा ही होगा न । फिर क्या है ?'

अमरनाथ की टाँग कट गई थी । वे घर गए थे । एक स्वचालित व्हीलचेयर उनके लिए आ गई थी । जिस पर बैठकर वे घर भर में घूमते थे । अमरनाथ के कहने पर घर में कैनवस, रंग, ब्रश और ईजल, सब सामान आ गया था । उन्होंने ईजल पर कैनवास लगाया था । वे हँसते हुए कहते, 'देखो, वर्षों तक मैं चित्रकार बनने और चित्र बनाने की सोचता रहा, पर मुझे फुरसत

श्रवणीय

हेलन केलर की जीवनी का अंश सुनिए और मुख्य मुद्दे सुनाइए ।

लेखनीय

''कला की साधना जीवन के दुखमय क्षणों को भुला देती है '' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

पठनीय

सुदर्शन की 'हार की जीत' कहानी पढ़िए ।

ही नहीं मिली । मैंने विश्वभर में कलादीर्घाओं में विश्व के बड़े-बड़े चित्रकारों के चित्र देखे हैं और सराहे हैं । पर जब भी मैं उन्हें देखता तो उन चित्रों में मैं अपने रंगों के लगाए जाने की कल्पना करता था । फिर सारा परिदृश्य ही बदल जाता था ।

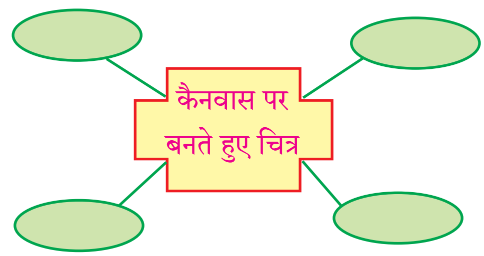
इन मानव आकृतियों के चित्रों में मूर्तिशिल्प का समन्वय था । स्त्री रंगों के बिना जहाँ उन्होंने रेखाओं से आकृतियाँ बनाई थीं, वहाँ उनमें मांस, मज्जा और अस्थियाँ तक को देखा जा सकता था । रेखाओंवाले चित्रों में एक प्रवाह, ऊर्जा, उमंग और चुस्ती-फुर्ती थी । लगता था, ये आकृतियाँ अभी संवाद करेंगी, हाथ पकड़कर साथ हो लेंगी । इतनी जीवंतता । रंग-रेखाओं से उनका प्यार उनकी हर साँस से निःसृत होता, जो उनके चित्रों को सजीव कर देता । लगता था, वे हर दृश्य, परिदृश्य, स्थिति और व्यक्ति को रंगों और रेखा में ढाल देंगे ।

✻ अमरनाथ घर के भीतर कैनवास पर फूलों, पत्तों झरने और हरियाली के चित्र बनाते, वहीं घर के बाहर की जितनी खुली जमीन थी, माली के साथ उन्होंने उस जमीन को तैयार करवाया था । सामने की जमीन में बगीचा बनाया था, जिसमें रंग-बिरंगे मौसम के फूल क्यारियों में लगाए थे । उन्होंने ऋतुओं के क्रम से फूलों के पौधे लगवाए थे । गरमी के बाद बरसात और बरसात के बाद सरदी के पौधों में फूल खिलते । घर के पीछे की जमीन में उन्होंने फलों के पेड़ लगा दिए थे । घर की चारदीवारी के साथ फूलों और फलों की बेलें चढ़ा दी थीं । घर और बाहर के लोग आश्चर्य से उनकी ओर देखते । वे हँसते, मैं जीवन का व्याकरण बना रहा हूँ । जीवन के अछूते सच के शिखर पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ लगा रहा हूँ ,' कहकर हँसने लगते ।

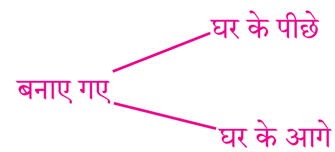
डॉक्टर ने खून की फिर से जाँच करवाई थी । खून की जाँच की रिपोर्ट आई तो वह परेशान हो गया था । घर के लोग चिंतित थे, अब क्या हो गया ? डॉक्टर ने बताया था, 'बीमारी फिर से पसर रही है ।' उनकी दाईं बाँह में खून की गर्दिश बंद हो गई थी । धीरे-धीरे बाँह हिलाना भी मुश्किल हो गई । बाँह निर्जीव होकर काठ-सी हो गई थी । बहुत सारी दवाइयाँ दी जा रही थीं । घर पर ही नर्स रख ली थी । घर का कोई-न-कोई सदस्य भी आस-पास ही रहता । डॉक्टर ने बताया, 'जहर फैल गया है । अब और रुका नहीं जा सकता । पहले से भी ज्यादा भयावह स्थिति । बाँह काटनी पड़ेगी ।' घर के लोग सन्न थे । लेकिन फैसला तो बाबू जी को ही लेना था । वे वैसी हँसी हँसे थे ।

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

१) संजाल पूर्ण कीजिए :



२) रिक्त स्थान पूर्ण कीजिए :



३) परिच्छेद से ऐसे दो शब्द ढूँढ़कर लिखिए जिनका वचन परिवर्तन नहीं होता ।

४) 'कला में अभिरुचि होने से जीवन का आनंद बढ़ता है' अपने विचार लिखिए ।

आखिर मैं बाँह तो नहीं हूँ न !' सप्ताह भर बाद अमरनाथ अस्पताल से लौट आए थे । उनकी दाईं बाँह काट दी गई थी । उन्होंने जल्दी ही बाएँ हाथ से अपना काम करना सीख लिया था । धीरे-धीरे वे अपने सारे काम खुद ही करने लगे थे । उनके लिए खुले कमीज सिलवाए गए थे । वे पहले की ही तरह सामान्य लग रहे थे । अमरनाथ के कहा था, 'कल से मैं शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू करूँगा । शास्त्री जी को सूचित कर दो कि वे कल से आ जाएँ । बचपन में मैंने सीखना शुरू किया था, पर कहीं सीखा था । बीच मे ही छोड़ना पड़ा था ।'

शास्त्री जी आ गए थे । अमरनाथ ने शास्त्रीय गायन सीखना शुरू कर दिया । सुबह का समय उनके रियाज का समय था । दिन में शास्त्री जी आते थे । शाम को फिर अभ्यास करते । पहले रंग और रेखाएँ थीं, अब स्वर लहरियाँ थीं । स्वर-साधना में वे ध्वनियों का आह्‌वान करते । कभी ध्रुपद की गायकी की खुली खेलते अवतरित होते । शास्त्री जी कभी-कभार खयाल में तान अलापते तो कभी ठुमरी के उनके शब्दों के भाव स्वरों में बँधकर मन-प्राण तक पहुँच जाते ।

जहाँ लौकिक और अलौकिक, भौतिक और आत्मिक तथा स्थूल और सूक्ष्म की सारी सीमाएँ टूट गई थीं । मानों स्वर जीवन का एक नया बोध, एक नया अर्थ उद्‌घाटित कर रहे हों ।

इस सबके साथ भी अमरनाथ की डॉक्टरी जाँच अपने निश्चित समय पर होती थी । वे फिर बीमार पड़े, वही तेज बुखार । डॉक्टर के चेहरे पर वही चिंता । घर के लोग दुख से व्याकुल । 'अब क्या होगा डॉक्टर ?' उन्हें अस्पताल ले जाया गया । वे सप्ताह भर बाद लौट आए थे । उनकी आवाज जा चुकी थी । पर उनकी आँखें हँस रही थीं वैसी ही हँसी जैसे कह रही हों, देखो, मैं जीवित हूँ । मुझे चुनौती मत दो ।' जीवनानुभव और कला के अनुभव की एकात्मता का खौलता सच ।

उनके कहने पर शास्त्रीय संगीतज्ञों के कैसेट और डिस्क, उनका म्यूजिक सिस्टम उनके कमरे के साइन बोर्ड पर रख दिया गया । उनके कमरे की सज्जा नए सिरे से उनकी सुविधानुसार कर दी गई । उन्होंने इशारों से बताया था, 'मैंने संगीत सीखा, पर सुना तो था ही नहीं । मेरी साधना अधूरी रही । जिन्होंने अपनी साधना पूरी की, उनकी सिद्‌धि का लाभ तो ले सकता हूँ ।' उनकी दिनचर्या बदल गई थी । वे मुसकराते, इशारों में जैसे कहते हों, 'मैं

आसपास

कलाक्षेत्र में 'भारतरत्न' उपाधि से अलंकृत महान विभूतियों के नाम, क्षेत्र, वर्षानुसार सूची बनाइए ।

मौलिक सृजन ८०

'समाज के जरुरतमंद लोगों की मैं सहायता करूँगा' विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

शब्द संसार

अकुलाहट (वि.) = व्याकुलता, बेचैनी
घुमक्कड़ी (स्त्री.सं.) = घूमने की क्रिया
परिदृश्य (पुं.सं.) = चारों ओर के दृश्य
उजास (पुं.सं.) = प्रकाश, उजाला

आनंद में हूँ । वे सुबह उठते, अपनी व्हीलचेयर पर बाहर खुले में बगीचे में बैठ जाते । पक्षियों का कलरव सुनते । सूखे पत्तों के झरने की आवाज, कलियों के चटखने की आवाजें उन्हें सुनाई देतीं । उन्हें ओस की टिपटिप पत्तियों के खुलने की, धीमी हवा के सरसराने की सूक्ष्म ध्वनियाँ बहुत स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी थीं । उनके चेहरे पर एक उजास दीपता था । आँखें बंद करके कजरी की तान सुनते । दिन में वे अपनी रुचि और समय की अनुकूलता से शास्त्रीय गायन की सी. डी. सुनते । घर के लोग चाहते थे, जैसे भी हो, वे जो चाहते हों करें । वे उन्हें इतनी खुशी तो दे ही सकते थे ।

इस समय अलवैर कामू का 'कालिगुला नाटक' उनके भीतर मंचित होता है । ईश्वर क्रूर रोमन शहंशाह कालिगुला बन गया है । अपनी इच्छा से वह मेरे अंगों को कटवाता जा रहा है । जैसे-जैसे उसे जरूरत पड़ती है, उसी क्रम से वह एक-एक अंग-भंग कर मुझे मरवा रहा है । मुझे कालिगुला के विरुद्ध एक शांत संघर्ष करना है क्योंकि मैं जानता हूँ जीवन का विकास पुरुषार्थ में है, आत्महीनता में नहीं ।

वे सोचते सारे गत्यावरोध समाप्त हों । निर्बंध हूँ मैं । जीवन का हर पल, हर वस्तु, हर स्थिति अद्‌वितीय हो । मेरी अपराजेय आस्था जीवन के अंतिम साक्ष्य में मुझे निर्भय कर दे ।' ......

—०—

पाठ से आगे

दिव्यांग महिला खिलाड़ियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके टिप्पणी तैयार कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) केवल एक शब्द में उत्तर लिखिए :

१. जिनमें चल - फिरने की क्षमता का अभाव हो - ______

२. जिनमें सुनने की क्षमता का अभाव हो - ______

३. जिनमें बोलने की क्षमता का अभाव हो - ______

४. स्वस्थ शरीर में किसी भी एक क्षमता का अभाव होना - ______

(ख) पाठ में प्रयुक्त वाक्य पढ़कर व्यक्ति में निहित भाव लिखिए :

१. 'टाँग ही काटनी है तो काट दो ।'

२. 'मैं जानता हूँ कि, जीवन का विकास पुरुषार्थ में हैं, आत्महीनता में नहीं ।'

(२) 'हीन' शब्द का प्रयोग करके कोई तीन अर्थपूर्ण शब्द तैयार करके लिखिए :-

जैसे - आत्म + हीन = आत्महीन

(च) ____ + ____ = ______

(छ) ____ + ____ = ______

(ज) ____ + ____ = ______

(३) 'परिस्थिति के सामने हार न मानकर उसे सहर्ष स्वीकार करने में ही जीवन की सार्थकता है', स्पष्ट कीजिए ।

११. स्वतंत्रता गान

– गोपालसिंह नेपाली

संभाषणीय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम संबंधी पढ़ी/सुनी किसी प्रेरणादायी घटना/प्रसंग पर चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ और उसमे सम्मिलित सेनानियों के नाम पूछें । ● अपने परिसर की किसी ऐतिहासिक भूमि के बारे में बताने के लिए कहें । ● किसी सेनानी के जीवन की प्रेरणादायी घटना का महत्वपूर्ण अंश कहलवाएँ । ● यदि विद्यार्थी सेनानी के स्थान पर होते तो क्या करते, बताने के लिए प्रेरित करें ।

घोर अंधकार हो,
चल रही बयार हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दिया बुझे नहीं,
यह निशीथ का दिया ला रहा विहान है ।

शक्ति का दिया हुआ,
शक्ति को दिया हुआ,
भक्ति से दिया हुआ,
यह स्वतंत्रता दिया हुआ,
रुक रही न नाव हो,
जोर का बहाव हो,
आज गंगधार पर यह दिया बुझे नहीं,
यह स्वदेश का दिया प्राण के समान है ।

यह अतीत कल्पना,
यह विनीत प्रार्थना,
यह पुनीत भावना,
यह अनंत साधना,
शांति हो, अशांति हो,
युद्ध, संधि, क्रांति हो,
तीर पर, कछार पर, यह दिया बुझे नहीं,
देश पर, समाज पर, ज्योति का वितान है ।

परिचय

जन्म : ११ अगस्त १९११ बेतिया, चंपारण (बिहार)
मृत्यु : १७ अप्रैल १९६३
परिचय : इनका मूल नाम गोपाल बहादुर सिंह है । आप हिंदी के छायावादोत्तर काल के कवियों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । कविता के क्षेत्र में आपने राष्ट्र प्रेम, प्रकृति प्रेम तथा मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : उमंग, पंछी, रागिनी, नीलिमा, पंचमी, रिमझिम आदि (काव्य संग्रह), रतलाम टाइम्स, चित्रपट, सुधा एवं योगी नामक चार पत्रिकाओं का संपादन ।

पद्‍य संबंधी

प्रेरणागीत : प्रेरणागीत वे गीत होते हैं जो हमारे दिलों में उतरकर हमारी जिंदगी को जूझने की शक्ति और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं ।

प्रस्तुत कविता में गोपाल सिंह नेपाली जी ने स्वतंत्रता के दीपक को हर परिस्थिति में प्रज्वलित रखने के लिए प्रेरित किया है ।



तीन-चार फूल हैं,
आस-पास धूल हैं,
बाँस हैं-बबूल हैं,
घास के दुकूल हैं,
वायु भी हिलोर दे,
फूँक दे, चकोर दे,
कब्र पर, मजार पर, यह दिया बुझे नहीं,
यह किसी शहीद का पुण्य प्राण दान है ।

झूम-झूम बदलियाँ
चूम-चूम बिजलियाँ,
आँधियाँ उठा रहीं,
हलचलें मचा रहीं,
लड़ रहा स्वदेश हो,
यातना विशेष हो,
क्षुद्र जीत-हार पर, यह दिया बुझे नहीं,
यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है ।

—०—

शब्द संसार

बयार (स्त्री.सं.) = हवा
निशीथ (स्त्री.सं.) = निशा, रात
विहान (पुं.सं.) = सवेरा
कछार (पुं.सं.) = किनारा
वितान (पुं.सं.) = आकाश, गगन
दुकुल (पुं.सं.) = दुपट्टा
हिलोर (स्त्री.सं.) = लहर

श्रवणीय

क) राष्ट्रभक्ति पर आधारित कोई कविता सुनिए ।
ख) अपने देश की विविधताएँ सुनिए ।

लेखनीय

समूह बनाकर भारत की विशेषता बताने वाले संवाद का लेखन कीजिए तथा समारोह में उसकी प्रस्तुति कीजिए ।

पठनीय

भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र संबंधी जानकारी पढ़िए और छोटी-सी टिप्पणी तैयार कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'विश्व स्तर पर भारत की पहचान निराली है', स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) 'यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है' इस पंक्ति में आई कवि की भावना स्पष्ट कीजिए ।

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अतीत	प्रार्थना
पुनीत	साधना
अनंत	भावना
विनीत	कल्पना
	अशांति

पाठ से आगे

अंतरजाल/ग्रंथालय से 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन' (सार्क) में भारत की भूमिका की जानकारी प्राप्त करके टिप्पणी लिखिए ।

व्याकरण विभाग

(१) शब्द

- विकारी शब्द और उनके भेद
- अविकारी (अव्यय)

(२) विकारी शब्द और उनके भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	अनिश्चयवाचक निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

अविकारी (अव्यय)

क्रियाविशेषण
संबंधसूचक
समुच्चयबोधक
विस्मयादिबोधक

(३) क्रिया के काल

- वर्तमान काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्य काल
  - सामान्य

(७) वाक्य के प्रकार

रचना की दृष्टि से
(१) साधारण
(२) मिश्र
(३) संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से
(१) विधानार्थक
(२) निषेधार्थक
(३) प्रश्नार्थक
(४) आज्ञार्थक
(५) विस्मयाधिबोधक
(६) संदेशसूचक

(४) **शुद्‌धाक्षरी–** शब्दों को शुद्‌ध रूप में लिखना ।

(५) **मुहावरों का प्रयोग/चयन करना**

(८) संधि

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(६) **शब्द संपदा–** व्याकरण ५ वीं से ८ तक

शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थक, समानार्थी, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, विरामचिहन, उपसर्ग-प्रत्यय पहचानना/अलग करना, लय-ताल युक्त शब्द ।

रचना विभाग

- पत्रलेखन (व्यावसायिक /कार्यालयीन)
- कहानी लेखन
- गद्‌य आकलन
- प्रसंग वर्णन / वृत्तांत लेखन
- विज्ञापन
- निबंध

पत्रलेखन

कार्यालयीन पत्र

कार्यालयीन पत्राचार के विविध क्षेत्र :-

✼ बैंक, डाकविभाग, विद्‌युत विभाग, दूरसंचार, दूरदर्शन आदि से संबंधित पत्र
✼ महानगर निगम के अन्यान्य / विभिन्न विभागों में भेजे जाने वाले पत्र
✼ माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल से संबंधित पत्र
✼ अभिनंदन/प्रशंसा (किसी अच्छे कार्य से प्रभावित होकर) पत्र लेखन करना ।
✼ सरकारी संस्था द्‌वारा प्राप्त देयक (बिल आदि) से संबंधित शिकायती पत्र

व्यावसायिक पत्र

व्यावसायिक पत्राचार के विविध क्षेत्र :-

✼ किसी वस्तु/सामग्री/ पुस्तकें आदि की माँग करना ।
✼ शिकायती पत्र - दोषपूर्ण सामग्री/ चीजें/ पुस्तकें/ पत्रिका आदि प्राप्त होने के कारण पत्रलेखन
✼ आरक्षण करने हेतु (यात्रा के लिए) ।
✼ आवेदन पत्र - प्रवेश, नौकरी आदि के लिए ।

प्रशंसा पत्र

प्रशंसनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में

उद्‌यान विभाग प्रमुख

अनुपयोगी वस्तुओं से आकर्षक तथा उपयुक्त वस्तुओं का निर्माण - उदा. आसन व्यवस्था, पेय जल सुविधा, स्वच्छता गृह आदि ।

अभिनंदन/प्रशंसा पत्र

प्रशंसनीय कार्य के उपलक्ष्य में

बस स्थानक प्रमुख

ब्रेक फेल होने के बाद चालक ने अपनी समयसूचकता तथा होशियारी से सभी यात्रियों के प्राण बचाए ।

कहानी लेखन

- ✻ मुद्‌दों के आधार पर कहानी लेखन करना ।
- ✻ शब्दों के आधार पर कहानी लेखन करना ।
- ✻ किसी कहावत, सुवचन, मुहावरे, लोकोक्ति पर आधारित कहानी लेखन करना ।

मुहावरे, कहावतें, सुवचन, लोकोक्तियाँ

मुहावरे–

- ✻ आँखों पर परदा पड़ना ।
- ✻ एड़ी–चोटी का जोर लगाना ।
- ✻ रुपया पानी की तरह बहाना ।
- ✻ पहाड़ से टक्कर लेना ।
- ✻ जान हथेली पर धरना (रखना) ।
- ✻ लकीर का फकीर होना ।
- ✻ पगड़ी सँभालना ।
- ✻ काला अक्षर भैंस बराबर ।
- ✻ घाट घाट का पानी पीना ।
- ✻ अकल के घोड़े दौड़ाना ।
- ✻ पत्थर की लकीर होना ।
- ✻ भंडाफोड़ करना ।
- ✻ रंगा सियार होना ।
- ✻ हाँ में हाँ मिलाना

लोकोक्तियाँ तथा कहावतें

- ✻ अंधों में काना राजा ।
- ✻ ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर ।
- ✻ चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए ।
- ✻ जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि ।
- ✻ अंधा बाँटे रेवड़ी अपने कुल को देय ।
- ✻ अंधेर नगरी चौपट राजा ।
- ✻ आँख और कान में चार अंगुल का फर्क है ।
- ✻ अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।
- ✻ हाथ कंगन को आरसी क्या ?
- ✻ चोर की दाढ़ी में तिनका ।
- ✻ कोयले की दलाली में हाथ काला ।
- ✻ अधजल गगरी छलकत जाए ।
- ✻ निंदक नियरे राखिए ।
- ✻ ढाक के तीन पात ।

सुवचन

- ✻ वसुधैव कुटुंबकम् ।
- ✻ सत्यमेव जयते ।
- ✻ पेड़ लगाओ, पृथ्वी बचाओ ।
- ✻ जल ही जीवन है ।
- ✻ पढ़ेगी बेटी तो सुखी रहेगा परिवार ।
- ✻ अनुभव महान गुरु है ।
- ✻ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ ।
- ✻ अतिथि देवो भवः ।
- ✻ राष्ट्र ही धन है ।
- ✻ जीवदया ही सर्वश्रेष्ठ है ।
- ✻ असफलता सफलता की सीढ़ी है ।
- ✻ श्रम ही देवता है ।
- ✻ राखौ मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध ।
- ✻ करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।

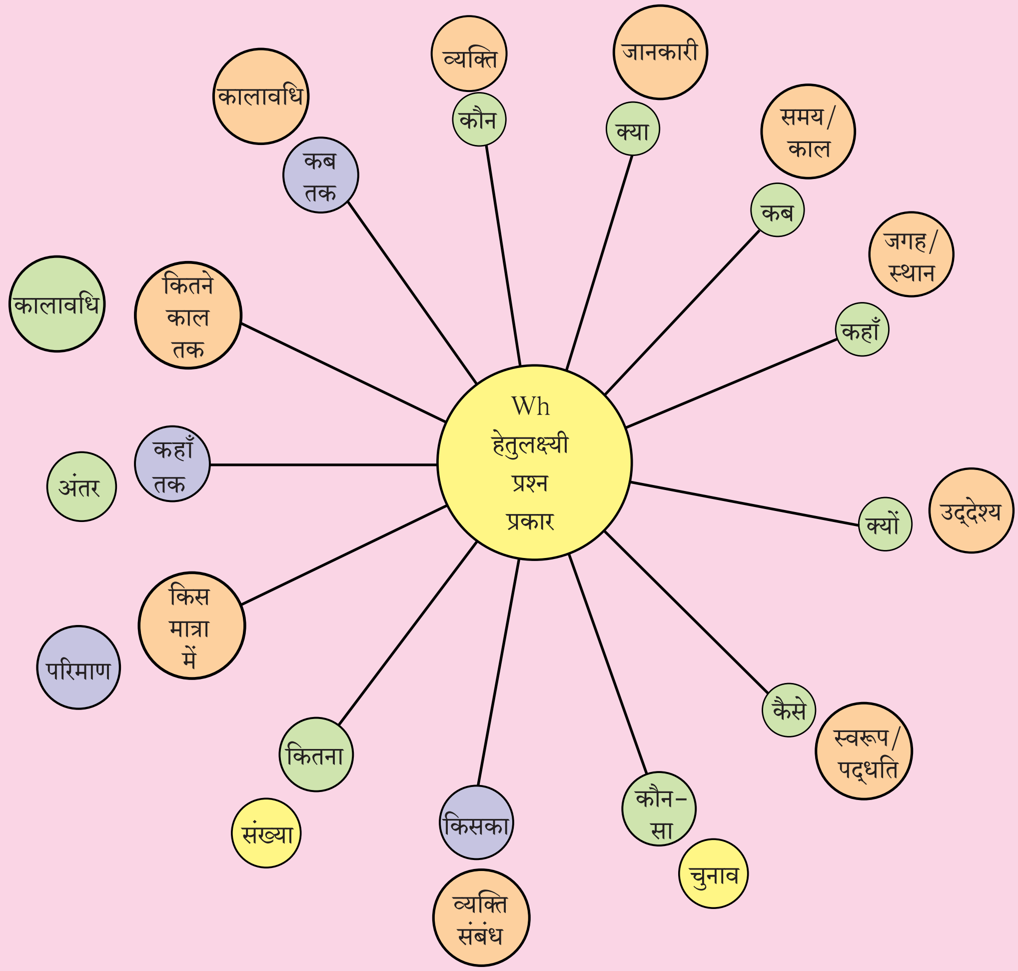
निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर कहानी लिखिए तथा उसे उचित शीर्षक देकर उससे प्राप्त होने वाली सीख भी लिखिए :

१) एक लड़की ———— विद्‌यालय में देरी से पहुँचना ———— शिक्षक द्‌वारा डाँटना ———— लड़की का मौन रहना ———— दूसरे दिन समाचार पढ़ना ———— लड़की को गौरवान्वित करना ।

२) मोबाइल ———— लड़का ———— गाँव ———— सफर ————

✻ प्रश्न निर्मिति के लिए निम्नलिखित प्रश्नचार्ट उपयुक्त हो सकता है ।

प्रश्नचार्ट-



गद्य आकलन (प्रश्न तैयार करना)

निम्नलिखित गद्यांश पर ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हो ।

किसी भी देश की संपत्ति उस देश के आदर्श विद्यार्थी ही होते हैं । विद्यार्थियों का चरित्र ही राष्ट्र की संपत्ति होता है । वह समय का मूल्यांकन करना जानता है । वह बैटिंग, सिनेमा, मोबाइल एवं अन्य मनोरंजनों में आवश्यकता से अधिक लिप्त नहीं होता है । उसके सामने सदा मंजिल रहती है और उसे ज्ञात है कि इन प्रलोभनों के वश में न होकर परिश्रम, तप, त्याग और साधना के कटंकाकीर्ण पथ पर चलकर ही वह कुछ बन सकता है । परिवार के लिए, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए एवं समूचे विश्व के लिए वह तभी कुछ करने की क्षमता प्राप्त कर सकता है जब वह अपनी सर्वांगीण उन्नति करने का सामर्थ्य रखता हो ।

वह विद्यारूपी समुद्र का मंथन करके ऐसे मोती प्राप्त कर सकता है जो आज तक अनबिद्ध रहे हों ।

प्रश्न-

(१) किसी भी देश की संपत्ति कौन होते हैं ?
(२) विद्यार्थी क्या करना जानता है ?
(३) विद्यार्थी किसके लिए कुछ क्षमता प्राप्त कर सकता है ?
(४) विद्यार्थी किस प्रकार के मोती प्राप्त कर सकता है ?
(५) आप इस गद्यांश को कौन-सा शीर्षक देना उचित समझेंगे ?

● वृत्तांत लेखन

अपनी पाठशाला में मनाए गए 'वाचन प्रेरणा दिवस/हिंदी दिवस/विज्ञान दिवस/राजभाषा दिवस/ शिक्षक दिवस/ वसुंधरा दिवस/ क्रीड़ा दिवस आदि का वृत्तांत रोचक भाषा में लिखिए । (लगभग ६० से ८० शब्दों में)

● प्रसंग वर्णन

निम्नलिखित जानकारी पढ़कर उससे संबंधित प्रसंग लगभग ६० से ७० शब्दों में लिखिए ।

(१) कूड़ेदान से कूड़ा-कचरा आसपास फैला हुआ है, उसी में कुछ आवारा कुत्ते तथा अन्य जानवर घूम रहे हैं साथ ही कुछ गाए प्लास्टिक की थैलियों को चबा-चबा कर खा रही हैं ।...

✲विज्ञापन✲

निम्न विषयों पर विज्ञापन तैयार किए जा सकते हैं ।

(१) वस्तुओं की उपलब्धि :- नवनिर्मित (किसी भी वस्तु संबंधी)
जैसे- किताबें, कपड़े, घरेलू आवश्यक वस्तुएँ, उपकरण, फर्नीचर, स्टेशनरी, शालोपयोगी वस्तुएँ तथा उपकरण आदि ....

(२) शैक्षिक :- शिक्षा में संबंधित योगासन तथा स्वास्थ्य शिविर, स्वच्छ, सुंदर शुद्ध लिखावट, चित्रकला, इंटरनेट तथा विविध ऐप्स आदि कलाओं से संबंधित अभ्यास वर्ग, व्यक्तित्व विकास शिविर आदि -

(३) आवश्यकता :- वाहक-चालक, सेवक, चपरासी, द्‌वारपाल, सुरक्षा रक्षक, व्यवस्थापक, लिपिक, अध्यापक, संगणक अभियंता, आदि ......

(४) व्यापार विषयक :- दूकान, विविध वाहन, उपकरण, मकान, मशीन, गोदाम, टी. वी., संगणक, भूखंड, रेफ्रीजरेटर आदि

(५) मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन :- व्याख्यानमाला, परिसंवाद, नाटक वार्षिकोत्सव, विविध विशेष दिनों के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम समारोह आदि......

(६) पर्यटन संबंधी :- यात्रा विषयक, आरक्षण आदि

(७) वैयक्तिक :- श्रद्‌धांजली, शोकसंदेश, जयंती, पुण्यतिथि, गृहप्रवेश, बधाई आदि

निबंध लेखन

निबंध

वैचारिक	वर्णनात्मक	कल्पनाप्रधान	चरित्रात्मक	आत्मकथात्मक
(१) सेल्फी : सही या गलत	विज्ञान प्रदर्शनी का वर्णन	यदि श्यामपट बोलने लगा	मेरा प्रिय रचनाकार	भूमिपुत्र की आत्मकथा
			मेरे आदर्श	
(२) अकाल : एक भीषण समस्या	नदी किनारे एक शाम	यदि किताबें न होतीं		मैं हूँ भाषा

विद्‌यार्थियों द्‌वारा बनाए गए हस्तकला तथा चित्रकला की वस्तुओं की प्रस्तुति करने के लिए विज्ञापन

- विशेषताएँ तथा उद्‌देश्य
- स्थान, समय, तिथि

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे–४११००४.

हिंदी लोकभारती इ. ९वी

₹ 50.00

